झारखण्ड सरकार

स्वच्छता की कहानी जलसहिया की जुबानी

झारखण्ड सरकार

पेयजल एवं स्वच्छता विभाग

स्वच्छता की कहानी जलसहिया की जुबानी

क्रम संख्या		पृष्ठ संख्या
अध्याय – 1	गंदगी ही नरक है	1 – 13
अध्याय – 2	गाँव की बहू जलसहिया	15 – 25
अध्याय – 3	क्या अशुद्ध जल से कैंसर होता है?	27 – 41
अध्याय – 4	...... और महिलाओं ने चापाकल मरम्मति की	43 – 51
अध्याय – 5	जीतेगी अपनी जलसहिया	53 – 64
अध्याय – 6	आओ गाँव के विकास का नक्शा बनायें	65 – 76
अध्याय – 7	अपना शौचालय क्यों नहीं?	77 – 85
अध्याय – 8	स्वच्छता में ही प्रभुता है	87 – 96

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री
झारखण्ड

पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के विभिन्न कार्यक्रमों का उद्देश्य स्वच्छ निर्मल गाँवों की स्थापना और प्रत्येक गाँव में लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना है। **'निर्मल भारत अभियान'** और **'राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम'** विभाग के दो मुख्य कार्यक्रम हैं, जिनका उद्देश्य क्रमशः गाँव के प्रत्येक घर में शौचालय एवं अन्य स्वच्छता सुविधाओं का निर्माण और शुद्ध पेयजल की व्यवस्था हेतु विभागीय प्रयासों को तेज करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु **'स्वच्छता की कहानी, जलसहिया की जुबानी'** नामक पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। मुझे विश्वास है कि इसके माध्यम से स्वच्छता को समझने एवं अपनाने में आवश्यक सहयोग मिलेगा, साथ ही ग्राम में पेयजल सुविधाओं को बहाल करने के लिए ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की स्थापना, प्रत्येक गाँव में जलसहिया का चयन, महिलाओं द्वारा चापाकल की मरम्मति और स्वच्छता में ही प्रभुता है जैसे विषयों की जानकारी आम लोगों को मिल सकेगी। इस बहुउपयोगी पुस्तिका के प्रकाशन से सम्बद्ध सभी पदाधिकारी–कर्मीगण साधुवाद के पात्र हैं।

मैं विभाग के सभी पदाधिकारियों–कर्मियों एवं इससे जुड़ी स्वयंसेवी संस्थाओं को इस पुस्तिका के अधिकतम प्रचार–प्रसार करने का परामर्श देता हूँ। साथ ही **'स्वच्छता की कहानी, जलसहिया की जुबानी'** पुस्तिका के सफल प्रकाशन पर अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ !

(हेमन्त सोरेन)

जयप्रकाश भाई पटेल
मंत्री
पेयजल एवं स्वच्छता विभाग
झारखण्ड सरकार

पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के विभिन्न कार्यक्रमों का उद्देश्य स्वच्छ निर्मल गाँवों की स्थापना और प्रत्येक गाँव में लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना है। निर्मल भारत अभियान और राष्ट्रीय ग्रामीण पेयजल कार्यक्रम विभाग के दो मुख्य कार्यक्रम हैं जिनका उद्देश्य क्रमशः गाँव के प्रत्येक घर में शौचालय एवं अन्य स्वच्छता सुविधाओं का निर्माण और शुद्ध पेयजल की व्यवस्था हेतु विभागीय प्रयासों को गति देना है। इन दोनों कार्यक्रमों की सबसे खास बात यह है कि इनके क्रियान्वयन में ग्रामीणों की प्रत्यक्ष सहभागिता के द्वारा स्थायी स्वच्छता सुविधाओं की बहाली की जाती है अर्थात् यदि शौचालय और पेयजल की सुविधा गाँवों में बहाल की जानी है तो यह लोगों के स्वयं के प्रयास के द्वारा ही किया जायेगा और इसमें विभागीय मशीनरी हर संभव सहायता देगी। तो इतने महत्वपूर्ण और उपयोगी सुविधाओं की बहाली के लिए गाँव के लोगों को भी विभागीय योजनाओं और विभागीय मशीनरी से मिलने वाली सहायता के बारे में जानना आवश्यक है।

विभाग की क्या–क्या योजनाएँ हैं, विभाग की योजनाओं में जलसहिया को क्या–क्या काम करने हैं, इसमें मुखिया और आम ग्रामीण कैसे जुड़े हैं, इन सब प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत कहानियों में सरल रूप से बताए गए हैं। आशा है कि यह पुस्तिका विभाग की योजनाओं के बारे में जानकारी और उसके क्रियान्वयन की विधि को सरलता से आम ग्रामीण जनता को समझाने में सफल होगी।

सभी को सुभकामनाओं सहित !

जय हिन्द !!

(जयप्रकाश भाई पटेल)
मंत्री
पेयजल एवं स्वच्छता विभाग
झारखण्ड सरकार

प्रजातांत्रिक व्यवस्था की असल कार्यकारी शक्ति स्वयं प्रजा है। प्रजातांत्रिक संस्थाओं के द्वारा निर्मित योजनाओं की जमीनी स्तर पर सफलता तभी संभव है जब स्वयं आम नागरिकों के द्वारा उनकी प्रत्यक्ष सहभागिता से ये योजनाएँ क्रियान्वित हों। योजनाओं की सफलता के लिए यह अनिवार्य है कि आम नागरिक, जिनके लिए योजनाएँ बनाई गई हैं, स्वयं अपने प्रयास से योजनाओं को पूर्ण करने में सहयोग दें। लोगों का यह प्रयास कैसे हासिल किया जाय? इसके लिए यह आवश्यक है कि उन्हें सरकारी कार्यक्रमों से होने वाले लाभों की पूर्ण सूचना दी जाय, कार्यक्रम कैसे जमीनी स्तर पर क्रियान्वित की जाय इसके लिए शिक्षित किया जाय और पूरे समुदाय के स्तर पर योजनाओं का लाभ पहुँचे, इसके लिए सूचनाओं और संबंधित शिक्षा का समुदाय में व्यापक रूप से संचार किया जाय। सूचना, शिक्षा और संचार हेतु उपलब्ध तकनीकी साहित्य के अलावा सरल सुगम कथा साहित्य अत्यंत ही प्रभावी माध्यम है। प्रस्तुत पुस्तिका की मुख्य पात्र जलसहिया है और मुखिया एवं अन्य ग्रामीण उसके सहपात्र हैं। इन पात्रों के चारों तरफ विभाग की योजनाओं की जानकारी का ताना–बाना सरल कहानी के रूप में बुना गया है। उम्मीद है कि यह अभिनव प्रयास अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल होगा और आम ग्रामीण इससे लाभान्वित होंगे।

(सुधीर प्रसाद)
अपर मुख्य सचिव
पेयजल एवं स्वच्छता विभाग,
झारखण्ड सरकार

रूपनी गाँव की जलसहिया है तथा मैट्रिक पास है। उसके बचपन की सहेली नूतन की शादी भी इसी गाँव में हुई है। नूतन पाँचवी पास है। उसके घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण उसे मजदूरी का काम भी करना पड़ता है। गाँव में पिछले दिनों निर्मल भारत अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत खुले में शौच से होने वाली बीमारियों और अन्य परेशानियों पर लोगों के बीच जागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान से प्रेरणा पाकर लोगों ने अपने प्रयास से अपने–अपने घरों में शौचालय बनाना शुरू कर दिया है तथा उसे उपयोग में भी ला रहे हैं। नूतन अपने घर में शौचालय बनाने को लेकर उतनी उत्साहित नहीं है। वह और उसके घर के सदस्य अभी तक खुले में शौच को जाते हैं। जलसहिया रूपनी इस बात को जानती है। जलसहिया रूपनी शिक्षित और जागरूक महिला है। अपने गाँव में स्वच्छता अभियान चलाने के साथ–साथ दूसरे गाँवों के स्वच्छता कार्यक्रमों में भी जाती है। काकी इस गाँव की बुजुर्ग महिला है तथा सामाजिक कार्यों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेती हैं।

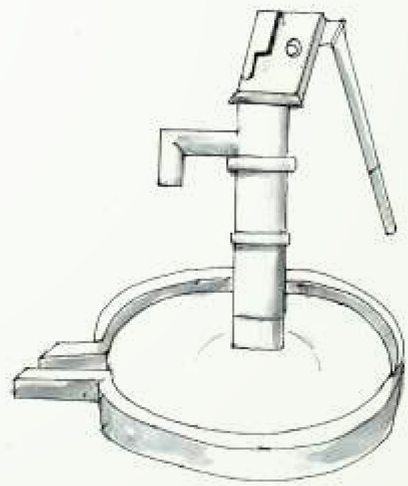

गंदगी ही नरक है

गाँवों में लोगों की यह आम धारणा है कि खुले में शौच करना तो सदियों से होता आया है। इसमें न तो कोई नयी बात है और न इससे कोई नुकसान ही होता है। लेकिन असलियत ठीक इसके विपरीत है। खुले में शौच के अनेकों हानिकारक पहलू हैं जैसे – बीमारी और बीमारी से उत्पन्न होने वाली शारीरिक कमजोरी, बीमारी के कारण काम के दिनों का नुकसान जिसके कारण आर्थिक घाटे का होना। एक और शर्मनाक पहलू है, वह है महिलाओं को होने वाली शर्म और असुविधा। तभी तो प्रस्तुत कहानी में काकी कहती हैं – **शरीर का कष्ट तो फिर भी हम औरतें छिपा लें पर तन की लाज कहाँ छिपाए। रात अँधेरे की बात अलग है पर दिन में जब हैजे दस्त का प्रकोप हो तो खेत, झाड़ी जहाँ कहीं भी जाओ, सूरज की रोशनी और लोगों की आँखों से कहाँ तक छिप पाओगी।**

संदर्भ

(i) गडरी ग्राम (जिला–राँची) की सफलता की कहानी

(ii) निर्मल भारत अभियान मार्गदर्शिका कंडिका–5 (घ) एवं (च)

गंदगी ही नरक है

.... और दुनिया जहान की क्या बताऊँ बहन। बस मेरे ही घर को देखो, लगता है जैसे बस नरक है नरक। नूतन ने रूपनी से कहा। अभी दोनों की बात यहीं तक थी कि एक अधेड़ उम्र की महिला आई, जिसे दोनों ने 'आओ काकी' कहकर पास बैठने को कहा। अब उनकी बात फिर से शुरू हुई। काकी ने बात का छोर पकड़ते हुए पूछा–कहो किस नरक की बात हो रही थी, मैं भी तो सुनूँ जरा।

रूपनी – यही नूतन अपने घर के बीमार लोगों का रोना रो रही थी। बेचारी का पति पहले पेचिश से सप्ताह भर बीमार रहा। अब उसकी बेटी और बेटा दोनों पेचिश से बीमार हैं।

नूतन –क्या बताऊँ काकी, बहुत नरक वाली बीमारी है। सयाना आदमी तो फिर भी अपने पेट–आँत को दबाकर खेत झाड़ी तक चला जाता है, पर बच्चे तो बिछावन और घर–आँगन में पैखाना कर देते हैं। बच्चों के गंदे कपड़ों को धोकर मन खिन्न हो गया है। घर और आँगन में पैखाना के दुर्गंध से मालूम होता है कि जिंदगी नरक बन गई है नरक।

काकी – तो गाँव के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में जाकर बच्चों को डॉक्टर से दिखाया क्यों नहीं?

नूतन – गई थी काकी। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का ही तो भरोसा है। इस दु:ख मुसीबत में सबसे बड़ा सहारा तो बस वही है। आज दोनों बच्चे थोड़े अच्छे हुए तो दोनों को थोड़ा माँड़–भात खिलाकर और दवा देकर सुला आई। दोनों को सोते हुए देखकर थोड़ा चैन मिला तो उनके बाबा को दोनों की देखभाल के लिये छोड़कर यहाँ रुपनी के पास थोड़ा सुस्ताने चली आई।

रुपनी – बेचारी बहुत परेशान है काकी। पहले इसका पति सप्ताह भर पेचिश से बीमार रहा। फिर जरा ठीक हुआ तो शरीर में इतनी ताकत नहीं रही कि काम पर निकल सके। वह तो नूतन शहर जाकर थोड़ा मजदूरी–रेजा का काम कर आती है कि घर का

खर्च चल जाता है। अब जब इसके बच्चे बीमार हो गए तो उनके देखभाल में इसकी मजदूरी भी बंद हो गई। ऊपर से बीमार बच्चों की देखभाल और दवा डॉक्टर के जुगाड़ में बेचारी अलग से परेशान रही।

नूतन – हाँ काकी, क्या बताऊँ, सब किस्मत का दोष है।

काकी – सब ठीक हो जायेगा बेटी। थोड़ा धीरज रखो। बीमारी और किस्मत के सामने किसकी चलती है भला। अब तुम तो बीमारों की सेवा और दवा–डॉक्टर तो कर ही रही हो न, आगे भगवान देखेंगे।

रूपनी – किस्मत और भगवान को बीच में मत लाओ काकी। नूतन अपनी आदत सुधारे तो इसकी जिंदगी के बारह आने कष्ट तो खुद दूर हो जायेंगे।

काकी – आदत सुधारे का क्या मतलब ?

रुपनी –इसी से पूछ लो। और ये कोई नयी बात नहीं है। तुम भी तो काकी गाँव घर में घुम–घुमकर सभी को साफ सफाई और हाथ धोने के फायदों के बारे में बताती चलती हो। पर कोई एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल दे तो तुम भी क्या कर सकती हो।

नूतन – देख रूपनी, मैं अपने घर के बीमारी कष्टों से भागकर तुम्हारे पास थोड़ा सुस्ताने चली आई और तुमने फिर भाषणबाजी शुरू कर दी। गाँव की जलसहिया क्या हो गई, पूरे नेता–लीडर की आदत लग गई।

काकी – (हँसकर) चलो, अब तुम दोनों आपस में मत लड़ो। देख नूतन, रूपनी में अगर नेता–लीडर का गुण न होता तो क्या हम सब इसे जलसहिया चुनते। अरे यह तो भगवान भला करें कि हमारे गाँव में मैट्रिक पास बहू आई वरना यहाँ तो अँगूठा छाप से फुर्सत आज तक नहीं मिली। और नूतन तुमको तो खुश होना चाहिए कि तुम्हारी सहेली गाँव की जलसहिया है।

नूतन – न काकी, वो तो बस यों ही मुँह से निकल गया था। बस रूपनी ही तो है जिसपर गलत–सही जैसे भी हो अपने मन का गुस्सा निकालकर थोड़ा शांत हो जाती हूँ। हम दोनों बचपन की सहेलियाँ हैं। साथ पली बढ़ी। फिर किस्मत ऐसी रही कि एक ही गाँव में हमारी शादी हुई।

रुपनी – इसकी बातों का मैं बुरा नहीं मानती काकी। इसका गुस्सा तो बस आई गई हवा–हवाई है। लेकिन फिर भी इसकी आदतों का उलाहना तो मैं देती ही रहूँगी।

काकी – अच्छा हाँ–नूतन अपनी आदत सुधारे – वो क्या बोल रही थी तुम रूपनी।

रूपनी – वही शौच के बाद साबुन से हाथ न धोने की आदत।

काकी – तो क्या साफ सफाई पर गाँव में इतना हो हल्ला होने के बाद भी नूतन तुमने नहीं सीखा कि शौच के बाद साबुन से हाथ धोना चाहिए।

रूपनी – बुद्धि की बलिहारी जो ठहरी। तुम्हीं पूछ लो काकी, ये क्या कहती है।

नूतन – मिट्टी से हाथ तो धोती हूँ काकी। फिर यह क्या कोई नयी बात है। पहले से भी हमारे बड़े–बूढ़े ऐसा ही तो करते आये हैं। बूढ़े–पुराने आदमी तो अभी के आदमियों से भी ज्यादा मजबूत हैं। उनको तो कभी कुछ नहीं होता भला।

काकी – बूढ़े पुराने आदमियों की बात मत बोल नूतन। तुम्हारी उमर ही क्या है। देखो मैं अब साठ पार कर गई। मैंने वो भी जमाना देखा है जब गाँव के गाँव हैजे की महामारी से बीमार पड़ जाते थे। महामारी में मरने वालों को मौत जवान या बूढ़ा, उम्र देखकर नहीं पकड़ती थी। वो जमाना और था। तब तो मैं भी तुम्हारी ही तरह थी, शौच के बाद मिट्टी से हाथ धोने वाली। पर साफ सफाई का महत्व तब समझ में आया जब खुद हैजे का शिकार बनी।

शरीर का कष्ट तो फिर भी हम औरतें छिपा लें पर तन की लाज कहाँ छिपायें। रात–अँधेरे की बात अलग है पर दिन में जब हैजे दस्त का प्रकोप हो तो खेत झाड़ी जहाँ कहीं भी जाओ, सूरज की रोशनी और लोगों की आँखों से कहाँ तक छिप पाओगी। हैजे का प्रकोप झेलकर मैंने कसम खा ली कि दुनिया अपनी मर्जी से चाहे जिधर जाए, मैं अपने घर का पानी साफ सुथरा और ढँककर

रखूँगी, बरसात में पानी उबालकर पीऊँगी और घर के सब लोगों पर नजर रखूँगी कि शौच के बाद साबुन से हाथ धोये।

रुपनी – तुम्हारे इसी प्रण से तो हमने तुम्हें अपने गाँव का नेचरल लीडर चुना है, काकी।

नूतन – नेचरल लीडर! इसका मतलब क्या होता है काकी?

काकी – अरे इनकी अंगरेजी का हाल मैं क्या जानूँ बेटी। पर हाँ इतना तय है कि गाँव के बूढ़ी–पुरान होने का फर्ज मैं जानती हूँ, चाहे लोग मुझे जिस नाम से पुकारे और साफ सफाई के लिए तो मैं सात गाँव घूम आऊँ, अपने गाँव की क्या बात है!

रूपनी– सुना तूने नूतन। और एक तू है कि अपनी आदतों के कारण अपने घरवाले और बच्चों को बीमार कर रही हो।

नूतन – पर मिट्टी से हाथ धोने और बीमारी में क्या संबंध? मिट्टी तो बड़ी पवित्र चीज होती है।

काकी – हाँ, मिट्टी पवित्र तो होती है पर उसे हम अपनी आदतों से पवित्र रहने दें तब न। जब तक सारे गाँव के लोग मिलकर खुले में शौच करना बंद न करें, अपने घर के कूड़े कचरों को जहाँ–तहाँ न फेंके, अपने बाल बच्चों को घर आँगन में पैखाना करने से न रोकें, तब तक मिट्टी पवित्र कैसे होगी। मैं ठीक कह रही हूँ न रूपनी।

रुपनी – हाँ काकी, बात तो सोलह आने सच है। मिट्टी पवित्र होती है, यह तो श्रद्धा भक्ति की बात है। पर प्रकृति के भी कुछ नियम होते हैं। जैसे धरती पर आदमी है वैसे ही मिट्टी में जीवाणु। सबका अपना–अपना स्थान है। मिट्टी के जीवाणुओं को मिट्टी में ही रहने दें, अपने हाथों पर न मलें तो फिर कोई परेशानी क्यों हो?

नूतन – जीवाणु? जीवाणु क्या होता है रूपनी।

काकी – ठीक कहती हो रूपनी तुम इसे, बुद्धि की बलिहारी। गाँव में स्वच्छता उत्प्रेरक आकर जब मिट्टी और गंदगी के जीवाणु और उससे होने वाली बीमारियों के बारे में बता रहे थे, उस समय भी यह वहीं थी। फिर अभी महीने भर पहले जब गाँव में शौचालय बनाने और उसके उपयोग के महत्व को समझाने के लिए स्वच्छता उत्प्रेरकों ने गाँव वालों की बैठक बुलाई थी, तब भी यह वहाँ थी और अब अगर हम और तुम इसे न भी बताये तो भी यह अपने घरवाले और बच्चों की बीमारी देखकर तो कुछ याद करे।

नूतन – देखो काकी, देखो रूपनी। ये जीवाणु वगैरह मुझे समझ में नहीं आता और जब समझ में नहीं आता तो फिर उसके आगे पीछे कोई बात मेरे दिमाग में नहीं घुसती।

रूपनी – जीवाणु मतलब ऐसा समझो कि रोग पैदा करने वाले कीड़े। जैसे कीड़े हमें हानि पहुँचाते हैं उसी तरह जीवाणु भी हमें रोगी बनाते हैं। लेकिन जीवाणु और कीड़ों में शरीर के आकार का फर्क होता है। कीड़े तो हमें आँखों से दिखाई पड़ते हैं पर जीवाणु इतने छोटे होते हैं कि हम उनकी कल्पना भी नहीं कर सकते। मिट्टी के एक ग्राम वजन में करोड़ों जीवाणु होते हैं। ये जीवाणु बड़े हानिकारक होते हैं। अगर वे हमारे पीने के पानी और खाने में मिलकर हमारे पेट में पहुँच जाएँ तो उससे हैजा, पेचिश जैसी बीमारियाँ हो सकती हैं। हो सकती हैं क्या, हो रही हैं। अपने परिवार में देख लो नूतन।

नूतन – तुम शायद ठीक कह रही हो रूपनी। लेकिन वर्षों की जमी जमाई आदत से लाचार हूँ।

काकी – जमी जमाई आदत है तो इसके कारण अपनी जान का खतरा तो नहीं मोल ले सकते न! फिर और भी दूसरी बातें हैं, जरा सोच कर देख, साफ सफाई की आदत न रहने के कारण तेरा घरवाला बीमार पड़ा, उसके इलाज में हुए खर्च को अगर प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से दवा मिलने के कारण न भी जोड़ा जाए तो भी दस दिन घर में बैठे रहने के कारण मजदूरी का नुकसान तो हुआ। फिर तुम भी मजदूरी करती हो। बच्चों की बीमारी के कारण तुम्हारी मजदूरी का नुकसान अलग से हुआ। फिर तुम्हारे बच्चे स्कूल जाते हैं। उनके स्कूल का नुकसान हुआ। ऐसे में हम लोग अपनी जिंदगी में आगे बढ़ रहे हैं या पीछे लौट रहे हैं। असल में अपने पिछड़ेपन के लिए हम खुद दोषी हैं। साफ सफाई की आदत की कमी के कारण हमें रुपये पैसों का तो नुकसान होता ही है, हम शरीर से भी कमजोर हो जाते हैं। फिर इस महँगाई और भागम–भाग के युग में इससे खराब बात और क्या हो सकती है।

नूतन – तुम दोनों ठीक कह रही हो शायद! अपने पिछड़ेपन के लिए हमारी आदतें ही दोषी हैं।

रूपनी – इसमें निराश न हो नूतन। जब जागो तभी सबेरा।

काकी – एक शिकायत मेरी तरफ से भी है नूतन और वो भी बड़ी शिकायत।

नूतन – क्या काकी?

काकी – अभी पिछले दिनों गाँव में साफ सफाई को लेकर बड़ा कार्यक्रम चला। गाँव में स्वच्छता उत्प्रेरक आए, उन्होंने खुले में शौच से होने वाले नुकसान पर गाँव वालों को बताया। उनकी बातें दिल को छू लेने वाली थी। हमें तो मालूम ही नहीं था कि हम लोग जो गाँव में खुले में शौच करते हैं उसे अगर गाँव के सभी आदमियों के रोज सुबह शाम मलत्याग से हिसाब लगाया जाय तो हर दिन कई मन पैखाना और इसी तरह हर महीने कई टन आदमी का पैखाना हम लोग अपने खेत खलिहान और गाँव की सड़कों गलियों में बिखेरते रहे हैं।

नूतन – बिखेरते रहे हैं का क्या मतलब काकी? आदमी तो दूर खेत झाड़ी में जाकर दिशा मैदान करता है। वो तो वहीं सड़ जाता है न।

रुपनी – इस बात को मैं समझाती हूँ काकी। देखो, यह ठीक बात है कि आदमी का पैखाना कुछ दिनों में नष्ट हो जाता है। लेकिन उसमें रहने वाले बीमारी के जीवाणु जाते कहाँ है? आदमी के मल का 90 प्रतिशत हिस्सा पानी होता है। बाकी 10 प्रतिशत हिस्सा मिट्टी बनकर बिखर जाता है और उसके साथ बिखरता है उसमें मौजूद बीमारी पैदा करने वाले जीवाणु। ये जीवाणु बरसात के पानी के साथ बहकर हमारे उपयोग के पानी के स्रोत जैसे कुएँ, तालाब में जा पहुँचते हैं या फिर धूल मिट्टी से उड़कर हमारे खाने तक पहुँच जाते हैं। पैखाना सड़ कर नष्ट होना तो थोड़ी दूर की बात है। यह जो लोग रोज खुले में शौच को जाते हैं, उस ताजे मल में बैठकर मक्खियाँ हर समय हमारे खाने पर आकर बैठती है। अगर वो किसी बीमार आदमी का पैखाना हो तो मक्खियों के पैरों में लगकर बीमारी के जीवाणु हमारे खाने के द्वारा हमें भी बीमार बना देते हैं। इस तरह हमारे ही मल के जीवाणु वापस हमारे पीने के पानी और खाने के साथ हमारे पेट में पहुँच जाते हैं और हमें बीमार बनाते हैं। यह जो तुम्हारे बच्चे बीमारी की हालत में खुले में शौच कर रहे हैं, इससे दूसरों को भी बीमार पड़ने का खतरा बढ़ गया है।

नूतन – अच्छा खुले में शौच करने से बात इतनी दूर तक जाती है। इसके बारे में तो कोई सोचता ही नहीं।

रूपनी – कोई नहीं सोचता का क्या मतलब? स्वच्छता उत्प्रेरकों द्वारा गाँव में जागरूकता लाने के बाद अब सभी लोगों ने सोचना शुरू कर दिया है सिर्फ कुछ लोगों को छोड़कर, जिसमें तुम भी हो नूतन।

काकी – तुम ठीक कह रही हो रूपनी। इसी बात की शिकायत मैं इससे कर रही थी। स्वच्छता उत्प्रेरकों की बातों से लोगों की आँखें खुल गई। लेकिन सवाल था कि लोग खुले में शौच को न जाएँ तो फिर जाए कहाँ? हम गाँव के गरीब लोगों के पास इतना पैसा कहाँ कि घर में अपना शौचालय बनाएँ। फिर इस महँगाई के युग में अपने घर का खर्च चलाना जहाँ मुश्किल हो रहा है वहाँ शौचालय बनाने को पैसा कहाँ से लायें?

रूपनी – हाँ काकी। और यहीं से असली बात खुल कर निकली। जब स्वच्छता उत्प्रेरकों ने हमें बताया कि अगर समस्या पैदा करने वाले हम हैं तो समस्या को सुलझाने का रास्ता भी हमारे पास है। शौचालय बनाने के लिए पैसों की जरूरत नहीं पड़ती बल्कि इच्छाशक्ति की जरूरत पड़ती है, यह बात जान लेने के बाद आगे की राह आसान हो गई। फिर इस बात को लेकर एक दिन गाँव में ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की मीटिंग बैठी। मीटिंग में पंचायत के मुखिया, जिला के पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के बड़े इंजीनियर साहब (कार्यपालक अभियंता) भी आए। मीटिंग से एक दिन पहले गाँव के सभी घरों में जाकर मैंने और काकी ने कहा कि सबका अपना शौचालय बनेगा इस बात के लिए मीटिंग बुलाई गई है, इसलिए सभी लोग जरूर आएँ। ऐसा सुनकर लोग बड़े खुश हुए और मीटिंग में बड़ी भारी भीड़ उमड़ी। मीटिंग में मुखिया जी के आग्रह के बाद लोगों ने हामी भरी कि अपने अपने घरों में शौचालय बनाने के लिए सभी लोग एक समान राशि का चंदा देंगे। बड़े इंजीनियर साहब की तरफ से घोषणा हुई कि शौचालय बनाने का काम शुरू करने के लिए निर्मल भारत अभियान से लोन[1] देकर काम शुरू किया जायेगा। एक बार उस पैसे से सभी घरों के लिए एक बराबर का जमीनी काम कर लिया जायेगा। फिर उसके बाद सभी से प्राप्त चंदा, जो कि स्वच्छता समिति के खाता में रखा जायेगा, से आगे का काम बराबरी के खर्च पर हर घर के शौचालय के लिए किया जायेगा।

काकी – हाँ रुपनी, शौचालय बनाने की जिम्मेवारी किसी एक आदमी की न होकर पूरे गाँव की जिम्मेवारी होगी, ऐसा उस मीटिंग में निर्णय लिया गया। गाँव के लोगों की एकता देखकर जिले से आए साहब लोगों ने अपने गाँव की बड़ी प्रशंसा की। सचमुच यह हमारे गाँव के लिए बड़े गर्व की बात थी। रुपनी, तुम्हे तो जलसहिया होने के कारण और गाँव वालों को मीटिंग के लिए इकट्ठा करने और उनसे चंदा इकट्ठा करने की प्रतिज्ञा करा लेने के कारण बहुत तारीफ और सम्मान मिला।

1. निर्मल भारत अभियान प्रावधानों के तहत रिवॉल्विंग फंड से लोन उपलब्ध कराए जाते हैं।

रूपनी – हाँ काकी, तारीफ और सम्मान तो मिला, पर अब जाकर देखती हूँ तो अपने आप में थोड़ा दु:ख भी लगता है।

नूतन – सम्मान पाकर दु:ख लगता है, यह तो बड़ी उल्टी बात करती है तू रूपनी।

रूपनी – दु:ख अपनों के व्यवहार के कारण लगता है। दु:ख तुम्हारे कारण लगता है नूतन ।

नूतन – ले, तुम्हारे दु:ख में मैं कैसे बीच में आ गयी ।

रुपनी – स्वच्छता कार्यक्रम में अब तक अपने गाँव के कुल 100 घरों में से 90 घरों ने अपने–अपने हिस्से का चंदा खुशी–खुशी स्वच्छता समिति के खाते में जमा करने को दे दिया है। लेकिन अभी भी दस घर ऐसे हैं जिन्होंने चंदा जमा करने में रूचि नहीं दिखाई है और जिनसे बात करो तो उनसे यह सुनने को मिलता है कि खुले में शौच तो सदियों की रीत है। फिर सुबह–सुबह इससे सैर सपाटा होने से भोर की हवा शरीर को लगती है, इससे शरीर भी स्वस्थ रहता है, तो हम बंद कमरे का शौचालय क्यों बनाए? इन दस घरों में तुम्हारा घर भी शामिल है नूतन और तू भी।

काकी – ये तुम ठीक कह रही हो रूपनी। नूतन से शिकायत वाली बात जो मैं कह रही थी उसके पीछे ठीक यही कारण था।

रुपनी – काकी, ऐसे लोगों को अगर समझाओ तो उन्हें हमारी बातें भाषणबाजी लगती हैं और हम उन्हें नेता लीडर नजर आने लगते हैं।

काकी – देखो नूतन, मुझे सिर्फ तुमसे शिकायत है ऐसी बात नहीं कह रही। इस गाँव में जब तक एक भी व्यक्ति खुले में शौच को जाएगा तब तक दूसरे व्यक्ति पर बीमारी का खतरा मँडराता रहेगा। तुम अपने घर में ही देख लो। मान लो, तुमने शौचालय का उपयोग शुरू कर दिया फिर भी गाँव का कोई दूसरा व्यक्ति खुले में शौच को जाता रहे तो बात तो वहीं की वहीं रही न। तो फिर हम सभी लोग एक दूसरे की भलाई की बात सोचकर क्यों न शौचालय उपयोग के व्यवहार को आदत में शामिल कर लें।

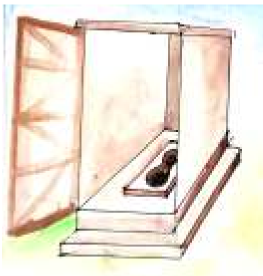

नूतन – शायद तुम ठीक कह रही हो काकी। मैं बेकार ही अपने घर की तुलना नरक से कर रही थी। इस नरक को बनाने की जिम्मेवार तो मैं खुद ही हूँ। मुझे तो कम से कम अपने घर के हालात से सीख लेकर शौचालय

निर्माण के लिए पहल शुरू कर देनी चाहिए। लेकिन मेरे घरवाले को कौन समझाये। क्या तुम दोनों यही सारी बातें मेरे घरवाले को समझाने मेरे घर चलोगी।

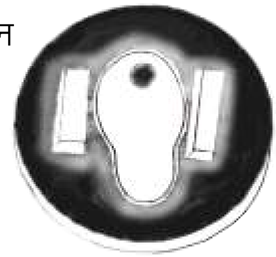

काकी – हाँ, हाँ, क्यों नहीं ।

रूपनी – मैं तो गाँव की जलसहिया हूँ। मेरी तो जिम्मेवारी यही है। मैं और काकी आज गाँव के उन सभी दस घरों में जायेंगी जो अपना शौचालय बनाने के लिए सहयोग नहीं कर रहे हैं। क्यों काकी ?

काकी – हाँ, बिलकुल।

नूतन – मान लो मेरा घरवाला आप लोगों की बात नहीं माने तब ?

रूपनी – इतनी बीमारी और बच्चों का दु:ख देखने के बाद भी नहीं मानेगा ऐसी बात नहीं। अरे वो भी तो आदमी ही है। हम उसे सहानुभूति और प्यार से मना लेंगी।

काकी – मैं तो गाँव की काकी हूँ। मैं तो उसके कान भी पकड़ सकती हूँ। (सभी हँसती हैं)

रूपनी – मैं अब गाँव के सभी लोगों को निर्मल भारत अभियान के बारे में फिर से बताऊँगी।

नूतन और काकी – (प्रश्नवाचक मुद्रा में एक साथ) निर्मल भारत अभियान ?

रूपनी – हाँ। मैं पिछले सप्ताह पड़ोस के गाँव में खुले में शौच से मुक्त गाँव होने का सत्यापन करने वाली कमेटी के सदस्य के रूप में गई थी। हमारी टीम में पंचायत के मुखिया और दूसरे गाँवों के लोग भी थे। हमने देखा कि उस गाँव में लोग अपने बनाए शौचालय का उपयोग कर रहे थे और अब कोई भी खुले में शौच को नहीं जा रहा था। हमने अपनी रिपोर्ट बड़े इंजीनियर साहब (कार्यपालक अभियंता) को भेजी। इस पर बड़े इंजीनियर साहब ने उस गाँव के घरों में पक्का शौचालय बनाने के लिए निर्मल भारत अभियान कार्यक्रम से प्रत्येक शौचालय के लिए 4600 रुपये की सहायता राशि देने का आदेश पास कर दिया और ये पैसा ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के खाते में चला गया है। जानती हो काकी, ये जो सहायता राशि गाँव के नाम से एकमुश्त मिली इसी से शौचालय बनाने के लिए जो लोन सरकार ने दिया था, उसे गाँव वालों ने चुकता कर दिया। इस तरह सभी अपने–अपने शौचालय के मालिक बन गए और उनमें से किसी पर कोई सरकारी कर्ज भी नहीं रहा।

काकी – पक्का शौचालय बनाने के लिए 4600 रुपयों की सहायता राशि! ये तो बड़ी अच्छी बात है।

नूतन – तो हमें भी पक्का शौचालय बनाने के लिए 4600 रुपये की सहायता मिलेगी। अरे तुम तो हमारे गाँव की जलसहिया हो, तुम अगर सिफारिश कर दो तो जल्दी–जल्दी हमें यह सहायता मिल जायेगी। क्यों काकी, ठीक न?

काकी – हाँ, हाँ, बिलकुल।

रूपनी – न ऐसे नहीं।

काकी – तब कैसे?

रूपनी – पड़ोस के गाँव में जैसे मैं खुले में शौच से मुक्ति का सत्यापन करने गई थी, उसी तरह एक टीम हमारे गाँव में भी आएगी। अगर उन्होंने हमारे गाँव के किसी व्यक्ति को खुले में शौच करते हुए पाया तो फिर वे निर्मल भारत अभियान से सहायता के लिए हमारे गाँव की सिफारिश नहीं करेंगे। तो सरकार से शौचालय बनाने की प्रोत्साहन राशि की अर्जी देने के पहले हमें अपने गाँव के सभी घरों में शौचालय बनाकर उसका उपयोग शुरू कर देना है।

काकी – तब तो हमें जल्दी से गाँव के उन सभी दस घरों को इस बात के लिए मनाना और समझाना होगा कि उनके व्यवहार में बदलाव से गाँव को कितना फायदा पहुँचने वाला है?

नूतन – दस नहीं काकी, नौ घरों को। अपने घरवाले को समझाने की जिम्मेवारी और गारंटी मेरी।

रूपनी – (हँसती है) देर आए दुरूस्त आए।

नूतन – और काकी, मैं भी तुम दोनों के साथ अपने गाँव के सभी नौ घरों में जाऊँगी और उनसे विनती प्रार्थना करूँगी कि वे अब से खुले में शौच की आदत को बंद करने में अपने गाँव के दूसरे भाइयों–बहनों का सहयोग करें।

काकी – अरे तब तो तू भी वही हो जाएगी जो मैं हूँ। वो अंगरेजी में क्या कहते हैं रूपनी।

रूपनी – नेचरल लीडर (तीनों खिलखिलाकर हँसती हैं)

काकी – लेकिन उससे पहले हम तुम्हारे घर चलेंगी। तुम्हारे बीमार बच्चों को तो देख आएँ। क्यों रूपनी, तुम भी चलोगी न मेरे साथ।

रूपनी – नहीं। नूतन अगर अपने घर को नरक कहे तो मैं उसके साथ नहीं जाऊँगी।

नूतन – (कान पकड़कर) – न बाबा। अपना घर भी कहीं नरक होता है। नरक तो हम उसे अपने व्यवहार से बनाते हैं।

काकी – ठीक कहा।

रूपनी – (काकी के ही सुर और लहजे में) – ठीक कहा।

तीनों खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं और नूतन के घर के लिये प्रस्थान करती हैं।

गाँव की बहू–जलसहिया

पेयजल और स्वच्छता विभाग द्वारा ग्राम में स्वच्छता और पेयजल सुविधाओं की बहाली के लिए ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की स्थापना प्रत्येक गाँव में की गई है। गाँव की ही मैट्रिक पास बहू को जलसहिया चुना जाता है जो समिति की कोषाध्यक्ष होती है। आइए जानें; जलसहिया का चुनाव कैसे होता है, उसके ऊपर क्या–क्या जिम्मेवारियाँ हैं, इन जिम्मेवारियों को पूरा करने के लिए उसे पेयजल और स्वच्छता विभाग से किस प्रकार प्रशिक्षण दिए जाते हैं इत्यादि एवं अन्य संबंधित पहलू।

संदर्भ

(i) ज्ञापांक जल सहिया चयन 173/10–57/SWSM दिनांक 22.01.11

(ii) संकल्प ज्ञापांक 1082 दिनांक 19.03.10

(iii) कार्यालय आदेश संख्या 185 दिनांक 24.08.11

गाँव की बहू–जलसहिया

'जोहार काकी' कहकर नूतन ने अचानक काकी और रूपनी जलसहिया का ध्यान तोड़ा। काकी और रूपनी अपने–अपने घर का काम काज निपटाकर दोपहर बाद रूपनी के घर की बाड़ी के आम पेड़ के नीचे चटाई बिछाकर आपस में विचार विमर्श करने में व्यस्त थी कि नूतन ने आकर उन दोनों को चौंका दिया।

काकी – अरे नूतन, ये तू कहाँ से गौरेया जैसी कुदकती फुदकती चली आ रही है!

नूतन – और कहाँ से! मियाँ की दौड़ मस्जिद तक। घर से बाहर या तो काम करने निकलती हूँ या फिर रूपनी के पास। इधर शहर की ओर मजदूरी–रेजा के काम से निकलना बन्द हो गया है। कारण मेरे और मेरे घरवाले का नरेगा का जॉब कार्ड बन गया है और दोनों पति पत्नी को गाँव में ही काम मिल जा रहा है। काम जिस दिन बंद रहता है, उसी दिन रूपनी से मिलने की फुर्सत मिल पाती है।

रूपनी – आ बैठ, मैं जानती थी तू आज जरूर आएगी। कल तेरे घरवाले ने बताया था कि आज तुम लोगों का काम बंद है। अच्छा ये बता, कल शाम ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की मीटिंग में तू क्यों नहीं आई? तेरा घरवाला तो मीटिंग में मौजूद था।

नूतन – अरे मैं कहाँ मीटिंग–सीटिंग में जाऊँ। मीटिंग की बातें तो मेरे दिमाग में भी नहीं घुसती तो फिर मीटिंग में बैठकर क्या फायदा। आखिर हूँ तो बस अँगूठा छाप गँवार।

काकी – ये सब तो बस बहाने हैं। मैं भी तो पढ़ी लिखी नहीं। लेकिन देखो किसी न किसी तरह समिति की मीटिंग में जहाँ तक जरूरत पड़ती है, अपना पक्ष रखती हूँ। फिर लोगों की बात सुनने समझने से भी तो ज्ञान बढ़ता है। जरूरी नहीं कि सिर्फ स्कूल में जाने से ही ज्ञान मिलेगा। दुनिया अपने आप में एक पाठशाला है।

नूतन – हाँ, वो तो है काकी। सच कहूँ तो मैं अभी रूपनी के पास आई भी हूँ तो बस इसी कारण से।

रूपनी – किस कारण से?

नूतन – (हँसकर) ज्ञान लेने।

रूपनी – अरे, ये तू आज ज्ञान की गंगा में कैसे नहाने आ गई। बोल तो क्या बात है?

नूतन – कल शाम तुम लोगों की मीटिंग के बाद जब मेरा घरवाला घर लौटा तो सच में तुम्हारी बहुत तारीफ कर रहा था रूपनी। कह रहा था कि गाँव का सौभाग्य है कि ऐसी पढ़ी लिखी लड़की गाँव में बहू बनकर आई। समिति में इतनी जिम्मेवारियाँ हैं कि पढ़े लिखे नहीं होने से काम को समझना और सँभालना मुश्किल था। फिर कहने लगा–हम लोग भी रूपनी की तरह अपने बेटी और बेटे को पढ़ाएँगे। तब फिर मेरे ख्याल में आया कि मेरी बेटी अगर मैट्रिक पास कर भी जाए तो जलसहिया तो नहीं बन पाएगी।

रूपनी – अरे बस मैट्रिक क्या, उसे आगे भी पढ़ाना। पर ये बता, तेरे दिमाग में ये बात कैसे आई कि तेरी बेटी मैट्रिक पास करने के बावजूद जलसहिया नहीं बन सकती ।

नूतन – क्योंकि हम लोग तुम्हारे परिवार की तरह ''पनभरा'' नहीं है न।

रूपनी – (काकी की ओर देखकर हँसते हुए) – देखा काकी, कौन कहेगा कि ये अँगूठा छाप है। कितनी दूर की कौड़ी ढूँढ के लाई है अपनी नूतन।

नूतन (लजाकर) – तुम दोनों मेरी बात पर हँस रही हो ना। जरूर मैने कोई बेवकूफी की बात कही है।

रूपनी – इसमें लजाने की कोई बात नहीं है नूतन । असल में जो दिखता है, उसे ही आदमी सच मान लेता है। ध्यान देने पर दिखने वाली चीज के पीठ पीछे भी अनेकों बातें नजर आती है। लेकिन सच यह है कि जलसहिया होने के लिए गांव की बहू को मैट्रिक पास होना जरूरी है। अगर किसी गाँव में मैट्रिक पास बहू न हो तो आठवीं पास तो जरूर होनी चाहिए। हाँ, सरकार ने हमारे रीति रिवाजों को ध्यान में रखकर ये नियम बनाया है कि किसी गाँव में अगर ''पनभरा'' घर की बहू पढ़ी लिखी हो तो उसे ही जलसहिया बनाना चाहिए। जरा ख्याल करो तो, गाँव में स्वच्छता उत्प्रेरकों के द्वारा बुलाए गए मीटिंग के दिन दूसरे गाँवों से भी जलसहिया आई थी। वो लोग मेरी तरह ''पनभरा'' परिवार से नहीं थी। हाँ, पढ़ी लिखी जरूर थी।

जलसहिया होने के लिए गांव की बहू को मैट्रिक पास होना जरूरी है। अगर मैट्रिक पास न हो तो आठवीं पास तो जरूर होनी चाहिए।

नूतन – अच्छा। ऐसी बात है।

रूपनी – हाँ! पढ़ा लिखा होना तो सबसे जरूरी है। देखो मैं अभी काकी के साथ बैठकर कल शाम की मीटिंग में क्या–क्या हुआ, उस पर मीटिंग की कार्यवाही लिख रही हूँ। मीटिंग में बहुत सारे लोग होते हैं। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। सबकी बात भी याद नहीं रहती। मानना पड़ेगा, काकी की याददाश्त बड़ी तेज है।

काकी – अरे नहीं रूपनी। सिर्फ याददाश्त भर तेज है। लोगों की बातों को याद इसलिए भी रखती हूँ कि अगले दिन उन बातों का मतलब तुमसे समझ लूँ। तू भी तो मेरी पाठशाला ही है न।

रूपनी – लेकिन इससे दोनों का फायदा होता है काकी। तुम्हारे याद रखने के कारण मेरी कार्यवाही बन जाती है और जो चीजें तुम्हारी समझ में नहीं आती, उसे मैं बता देती हूँ।

नूतन – अच्छा रूपनी। मेरा घरवाला जो कह रहा था कि तुम्हारे ऊपर समिति के काम की बहुत सारी जिम्मेवारियाँ हैं उसमें से एक तो यह समझ में आया जो अभी तू लिख रही है। क्या कह रही थी तू इसे।

रूपनी – बैठक की कार्यवाही।

नूतन – हाँ, वही। और दूसरे क्या–क्या काम तुम्हें करने होते हैं?

रूपनी – एक तो यह कार्यवाही हुई। इसमें ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की बैठक में समिति के सदस्यों और बैठक में शामिल ग्रामीणों के बीच जो चर्चा हुई तथा उसमें जो सुझाव दिए गए एवं निर्णय लिये गए, वो लिखे जाते हैं। ये कार्यवाही बहुत जरूरी चीज होती है। उससे यह पता चलता है कि अलग–अलग तारीख को ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की जो मीटिंग हुई थी उस पर क्या क्या चर्चा एवं विचार विमर्श हुए थे? पुराने निर्णयों पर अभी कितना काम आगे बढ़ा है एवं आगे और क्या काम करने हैं? इन सभी कार्यवाही को संभालकर रखने की जिम्मेवारी जलसहिया की होती है। हाँ, एक और चीज। जलसहिया हर मीटिंग के पहले समिति के सदस्यों एवं पंचायत के मुखिया के साथ मिलकर मीटिंग का एजेण्डा मतलब मीटिंग में क्या–क्या बातें एवं समस्याएँ रखी जानी है, इसे तैयार करती है।

काकी – एक और जरूरी चीज तू बताना भूल गई रूपनी।

रूपनी – क्या काकी?

काकी – मीटिंग के बाद सबकी हाजिरी बनाना।

रूपनी – अरे यह तो बहुत जरूरी चीज है। देखा नूतन, काकी के साथ बैठने से उसकी याददाश्त का कितना फायदा मिलता है। हाँ, उपस्थिति पंजी मतलब हाजिरी रजिस्टर बहुत जरूरी चीज है। उसमें किसी बैठक में उपस्थित ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के सदस्यों एवं उपस्थित ग्रामीणों की हाजिरी बनाई जाती है।

नूतन (निराश स्वर में) – पढ़े लिखे होने का कितना फायदा होता है न रूपनी। देखो तो, मैं तुम्हारी बचपन की सहेली हूँ। हम दोनों साथ–साथ पले बढ़े। लेकिन तुम्हारा मन पढ़ाई में लगता था और मेरा खेलने कूदने में। फिर ऐसा भी नहीं था कि तुम्हारे घर की हालत मेरे घर से अच्छी थी। पैसे की भी बात नहीं थी। सरकारी स्कूल में पढ़ने पर पैसा भी तो नहीं लगता है। आज तुम को देखती हूँ तो लगता है कि काश मैं भी तुम्हारी तरह लिखती पढ़ती।

काकी – तूने फिर वही बात कही नूतन। इसमें निराश होने की बात नहीं है। बहुत सारी चीजें हमारे आसपास की परिस्थितियों से भी तय होती है। उस समय पढ़ाई लिखाई को लेकर आज की तरह जागरुकता भी नहीं थी। आज हमारे गाँव को देखो। सभी घरों के बच्चे गाँव के सरकारी स्कूल में पढ़ने को जाते हैं।

रूपनी – हाँ, हम लोग पहले से अधिक जागरूक हो रहे हैं। अब शौचालय उपयोग की ही बात लो। ऐसा लगता है जैसे गाँव में कितना बड़ा आंदोलन आ गया है। गाँव के सभी घरों से शौचालय बनाने के लिए बराबर राशि का चंदा इकट्ठा किया गया है। साथ ही साथ ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के बैंक खाते में पक्के शौचालय बनाने के लिए सरकार से लोन का पैसा भी चला आया है। जिन लोगों के यहाँ शौचालय बनता जा रहा है उन्होंने बाहर खुले में शौच को जाना बंद कर दिया है। गाँव में पेचिश वगैरह बीमारी की घटनाएँ कम होने लगी हैं। लोगों को यह समझ में आ गया है कि अपनी गाढ़ी कमाई के पैसे को बीमारी में अब नहीं बहाना है। अब लोग अपने बचत के पैसों को बच्चों की पढ़ाई लिखाई और बेहतर देखभाल में खर्च करने लगे हैं। लोगों की सोच और व्यवहार में परिवर्तन आ गया है। लोगों को अब यह समझ में आ गया है कि असल में हमलोग अपनी आदतों के कारण ही पिछड़े हैं। दुनिया के साथ कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ना है तो अपनी आदत में सुधार करना पहली जरूरत होगी। अपने बच्चों को स्कूल भेजना होगा। खुले में शौच को जाना बंद करना होगा। हमारी तरक्की तभी होगी जब हम खुद सुधरना चाहें। तुम मुझे देख रही हो ना। पैसे और साधनों की कमी हर ग्रामीण परिवार की तरह मेरे घर में भी थी। बस अपनी हिम्मत से मैंने अपनी राह निकाली। पढ़ लिखकर बहुत आगे तो नहीं बढ़ सकी, पर इस बात का संतोष है कि जलसहिया होकर अपने गाँव की सेवा कर रही हूँ।

काकी – संतोष नहीं बेटी। यह तो बहुत बड़ा योगदान अपने गाँव को दे रही हो तुम। वरना यहाँ गाँव में ऐसे कितने लोग हैं जो ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के बैंक खाता से कामकाज करने की हुनर रखता हो।

नूतन – बैंक खाता? क्या बैंक खाता का काम भी तुम्हें करना पड़ता है रूपनी।

रूपनी – अकेले सिर्फ मुझे ही नहीं। ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति का खाता हमारे ब्लॉक के ग्रामीण बैंक में खोला गया है। बैंक खाता खोलने के लिए ग्राम सभा की मीटिंग की कार्यवाही बैंक को देनी पड़ी थी। खाता खोलने के समय हमारे पंचायत के मुखिया, हमारे गांव की ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की उपाध्यक्ष और मेरे हस्ताक्षर की जरूरत पड़ी थी। उसके बाद अब अगर पैसे निकालने की जरूरत पड़े तो इन तीनों में से किन्हीं दो के हस्ताक्षर से भी पैसा निकाला जा सकता है। हाँ, तब बैंक का खाता और चेक बुक संभालकर रखने की जिम्मेवारी जलसहिया की है।

काकी – इसके बाद भी तो खर्चों का हिसाब किताब रखना जैसी दूसरी जिम्मेवारियाँ हैं रूपनी।

रूपनी – हाँ काकी। बैंक खाता में आने वाले पैसे और खर्च होने वाले पैसे, इनका हिसाब किताब रखने की जिम्मेवारी जलसहिया की होती है। इसके लिए बैंक खाते में जमा होने वाले और खर्च होने वाले पैसे का हिसाब रोकड़ बही मतलब हिसाब किताब लिखने का रजिस्टर में लिखने की जिम्मेवारी जलसहिया की है।

नूतन – अच्छा तो तू हिसाब किताब भी लिखना जानती है रूपनी। सच में स्कूल में पढ़ने से कितना ज्ञान आदमी को मिलता है।

रूपनी – अरे नहीं रे। ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के रोकड़ बही का हिसाब किताब लिखने की ट्रेनिंग तो अभी हाल में पेयजल एवं स्वच्छता विभाग द्वारा हमारे जिले के सभी जलसहिया के लिए आयोजित ट्रेनिंग कार्यक्रम में दी गई थी।

नूतन – अरे! तो तू ट्रेनिंग कार्यक्रम में भी गई थी। कभी बताया नहीं तुमने।

रूपनी – कभी मौका नहीं मिला।

नूतन – अच्छा उस ट्रेनिंग कार्यक्रम में क्या–क्या हुआ था ?

रूपनी – उसमें हमारे जिले के बड़े इंजीनियर साहब (कार्यपालक अभियंता) आए थे। लेकिन असली ट्रेनिंग पेयजल एवं स्वच्छता विभाग से आए लेखा पदाधिकारी ने दी थी और भी बहुत सारी बातें उस ट्रेनिंग में देखने सुनने को मिली। सच में बड़ा मजा आया था।

नूतन – कैसा मजा। बताओ न।

रूपनी – ट्रेनिंग कार्यक्रम के बारे में फिर कभी और। आज अपनी ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के बारे में तो सुन ले। तुम्हें बताना जरूरी है ताकि अगली बार तू भी इसकी मीटिंग में आये। हाँ तो मैं कहाँ थी ?

काकी – ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के बैंक खाते के बारे में तुम बता रही थी बेटी।

रूपनी – हाँ। ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के बैंक खाते में जो पैसा सरकार की तरफ से आता है, उसका 1 प्रतिशत ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के मीटिंग वगैरह का खर्च चलाने में खर्च किया जा सकता है।

नूतन – 1 प्रतिशत माने क्या ?

रूपनी – 1 प्रतिशत माने 100 में से 1 हिस्सा। मतलब ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के खाते में अगर 1 लाख रुपया है तो 1000 रुपया मीटिंग वगैरह के खर्च चलाने में खर्च किया जा सकता है।

काकी – ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति से एक और काम बहुत अच्छा हुआ है बेटी। गाँव की महिलाओं को उसमें भागीदारी का हक दिया गया है। इससे महिलाओं को घर की चहारदीवारी से बाहर निकलने का मौका मिला है। फिर सामाजिक कामों में भागीदारी करने से उनके आत्मविश्वास में भी बढ़ोतरी हुई है।

नूतन – क्या ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति में महिलाओं को अलग से हक दिया गया है रूपनी ?

रूपनी – हाँ। महिलाओं की भागीदारी का हक तो ग्राम सभा की बैठक से ही शुरू हो जाती है। अगर अनुसूचित क्षेत्र में ग्राम सभा हो तो ग्राम सभा का कोरम मतलब ग्राम सभा की मीटिंग करने के लिए कम से कम हाजिरी

कुल सदस्य संख्या की एक तिहाई होनी चाहिए, ऐसा सरकार का आदेश है। और अगर गैर अनुसूचित क्षेत्र की ग्राम सभा हो तो उसकी मीटिंग बुलाने के लिए कुल सदस्य संख्या का 10 प्रतिशत कोरम होना चाहिए। उसमें एक तिहाई भागीदारी महिलाओं की होनी जरूरी है।

काकी – ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति में भी ऐसी ही बात है न रूपनी।

रूपनी – हाँ काकी। ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के सदस्यों का चुनाव ग्राम सभा की मीटिंग कर किया जाता है। अगर किसी एक पद के लिए एक से ज्यादा नाम आए तो फिर हाथ उठाकर वोटिंग की जाती है। ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के सदस्य चुन लेने के बाद ग्राम सभा द्वारा मीटिंग की कार्यवाही कनीय अभियंता माने जूनियर इंजीनियर साहब और बी.डी.ओ. साहब को भेज दी जाती है। इस चुनाव की खास बात यह है कि ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के अध्यक्ष तो ग्राम पंचायत के मुखिया, महिला या पुरूष जो हो, होते हैं लेकिन ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के उपाध्यक्ष और कार्यकारी सदस्य यानि जलसहिया दोनों महिलाएँ होंगी।

काकी – जलसहिया तो महिला होगी, जैसे तुम हो रूपनी लेकिन उसके साथ गाँव की किसी महिला को ही उपाध्यक्ष चुनना पड़ेगा, क्या ऐसा सरकार का नियम है?

रूपनी – हाँ, लेकिन उसमें भी एक बात है। अगर गाँव से कोई महिला वार्ड सदस्य या पंचायत समिति की सदस्य या जिला परिषद की सदस्य चुनी गई हो तो वह खुद ब खुद ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की उपाध्यक्ष हो जायेगी। लेकिन अगर ऐसी कोई निर्वाचित महिला नहीं हो तो फिर गाँव की किसी दूसरी महिला को उपाध्यक्ष चुनना होगा। हमारी उपाध्यक्ष ''कमला'' को तो तुम जानती हो न नूतन।

नूतन – कौन कमला? वो जो गाँव के पूरब टोला में रहती है।

रूपनी – हाँ, वही। कभी ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की मीटिंग में आना तो उससे तुम्हारी बात कराऊँगी। मेरी ही तरह मैट्रिक पास बहू है गाँव की। क्यों काकी?

काकी – हाँ, बहुत ही सुशील लड़की है।

रूपनी – सरकार ने हर जगह हम महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के नियम और आदेश बनाए हैं। ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति में ही देखो न। इसमें कुल नौ सदस्य होते हैं जिसमें से आधी महिलाएँ होनी चाहिए। अगर

गाँव से वार्ड सदस्य, पंचायत समिति प्रतिनिधि, जिला परिषद सदस्य चुनी गई हो तो उन्हें भी शामिल करने के लिए ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के सदस्यों की संख्या 9 से बढ़ाकर 12 की जा सकती है। लेकिन उस हालत में भी ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की आधी सदस्य महिलाएँ होनी चाहिए।

काकी – पंचायतों के चुनाव होने से हम ग्रामीणों का बड़ा उपकार हुआ है बेटी। देखो तो स्वच्छता अभियान के बहाने बी.डी.ओ. साहब, इंजीनियर साहब, मुखिया, वार्ड सदस्य, पंचायत समिति प्रतिनिधि जैसे कितने लोगों का आना जाना गाँव में बढ़ गया है। फिर उनकी मीटिंग के बहाने गाँव के लोग भी आपस में मिलने जुलने और गाँव की भलाई की चर्चा करने लगे हैं। यह सब नहीं था तो अपने ही गाँव में कितना सिर फुटौव्वल था। अभी देखो तो आपस में मिलने बैठने का फल यह हो रहा है कि समाज में एकता आ रही है। सरकारी अधिकारियों के गाँव में आने से लोगों की भी आँखें खुल रही हैं। कितनी अच्छी बात है कि गाँव के विकास के लिए सरकार पैसे दे रही है और इन पैसों को खर्च करने का अधिकार भी गाँव वालों को दे रही है। इन सब बातों का सबसे अच्छा नतीजा यह हुआ है कि लोग पिछड़ेपन से बाहर आ रहे हैं। गाँव में हर कोई अपने बच्चे को पढ़ाने स्कूल भेज रहा है। साफ सफाई की आदत अपनाने से बीमारी कम हुई है और लोगों का पैसा बच रहा है जिसे वे अपने बच्चों के बेहतर पालन पोषण में खर्च कर रहे हैं। लोगों के मन में देखो तो कितना उत्साह भर गया लगता है।

रूपनी – (नूतन की ओर देखकर) – अरे किस सोच में पड़ गयी?

नूतन – कुछ नहीं?

रूपनी – कुछ नहीं क्या? कुछ जरूर है। बता न!

नूतन – कहा न, कुछ नहीं?

काकी – अरे अब बता भी दे। अचानक उदास क्यों हो गयी?

नूतन – देखो न काकी। गाँव में इतना बदलाव हो रहा है। लोग इतने जागरूक हो गये हैं और एक मैं हूँ कि अभी कुछ दिनों पहले तक शौच के बाद मिट्टी से हाथ धोती थी। यहाँ तक कि शौचालय बनाने के लिए गाँव में जो चंदा इकट्ठा करने की बात हो रही थी, उसमें भी सहयोग नहीं कर रही थी और अब जब गाँव में ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की मीटिंग होती है और उसकी जलसहिया मेरी बचपन की सहेली है, तब भी मैं उसकी मीटिंग में नहीं जाती। ठीक कहती है रूपनी मुझे – बुद्धि की बलिहारी।

रूपनी – छोड़ ये सब पुरानी बातें। जो बीत गई सो बात गई। अच्छा अब बता। आएगी न मीटिंग में।

नूतन – हाँ, हाँ बिलकुल।

रूपनी – तब मैं तुम्हे अपने बगल में बिठाऊँगी।

नूतन – नहीं, मैं तुम्हारे पास नहीं बैठूँगी। मैं तो काकी के पास बैठूँगी।

रूपनी – क्यों भला?

नूतन – तुम्हारे पास बैठकर तुम्हें ठीक से नहीं देख पाऊँगी न। काकी के पास बैठने से तुम्हें बोलते बतियाते देख पाऊँगी। सच, तुम्हे बोलते देखकर कितनी खुशी लगती है मुझे, मैं बता नहीं सकती।

रूपनी – चल पगली।

काकी – तुम दोनों का बहनापा देखकर मुझे भी बड़ी खुशी लगती है। (फिर थोड़ा हँसकर) भगवान ने भी क्या जोड़ी बनाई है, वाह!

नूतन – जोड़ी क्या काकी?

काकी – अरे यही। एक बुद्धि की बलिहारी और दूसरी बुद्धिमान। (इस बात पर तीनों खिलखिलाकर हँस पड़ती हैं)

क्या अशुद्ध जल से कैंसर होता है?

अशुद्ध पानी के पीने से होने वाली बीमारियों की सूची लंबी है। रूपनी जलसहिया के गाँव के लोगों को जानकर आश्चर्य हुआ कि अशुद्ध पानी के पीने से भी कैंसर हो सकता है। पानी की अशुद्धता की जाँच फिर कैसे करें? पेयजल एवं स्वच्छता विभाग ने प्रत्येक जलसहिया को पानी की अशुद्धियों की जाँच के लिए फिल्ड टेस्ट किट दिया है एवं जल जाँच का प्रशिक्षण भी। तो जल सहिया अपने गाँव के पीने के पानी के स्रोतों की जल जाँच भी कर सकती है। आइये जाने कैसे ....

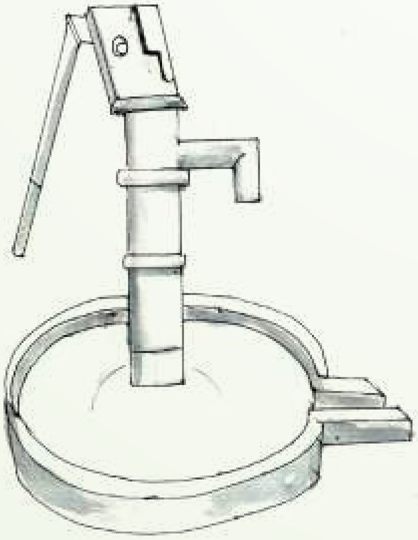

संदर्भ

(i) फिल्ड टेस्ट किट प्रशिक्षण मॉड्यूल, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित।

(ii) ग्रामीण पेयजल गुणवत्ता का अनुश्रवण एवं बचाव कार्यक्रम, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित।

क्या अशुद्ध जल से कैंसर होता है ?

रूपनी जलसहिया के गाँव के बाहरी छोर से शहर जाने वाली छोटी सड़क जुड़ी है। इसी सड़क से सटकर ब्लॉक ऑफिस है जिसके बगल में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और मिडिल और हाईस्कूल है। एक दिन स्कूल के मैदान में एक स्वास्थ्य कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिसमें बी.डी.ओ. साहब, जूनियर इंजीनियर साहब, स्कूल के हेडमास्टर साहब, अगल बगल के गाँवों की जलसहिया, पंचायत के मुखिया, वार्ड सदस्य, गाँव के सभी स्त्री पुरूष, बुजुर्ग और स्कूल के सभी बच्चे मौजूद थे। कार्यक्रम बी.डी.ओ. साहब की पहल पर आयोजित किया गया था जिसमें प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के डॉक्टर साहब ने लोगों को अशुद्ध पानी के पीने से होने वाली बीमारियों, उससे होने वाले नुकसान और उससे बचाव के तरीकों के बारे में बताया। इसके बाद पेयजल और स्वच्छता विभाग के इंजीनियर साहब और जलसहिया रूपनी ने गाँव के एक कुएँ का जल जाँच किया। लोगों को पानी से होने वाली बीमारियों के बारे में जानकर बहुत हैरानी हुई। **हैरानी इस बात से भी हुई कि जलसहिया रूपनी जल जाँच का भी काम जानती है।** उसके बाद इस बात से भी लोगों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि रूपनी ने जिस कुएँ के जल की जाँच के लिए एक दिन पहले जल जाँच की शीशी में पानी रखा था उससे यह पता चला कि उस कुएँ के पानी में तो बीमारी पैदा करने वाले जीवाणु भरे पड़े हैं। डॉक्टर साहब ने बताया कि जरूर उस कुएँ के पानी में आदमी या जानवर का पैखाना घुला होगा तभी तो इसमें जीवाणु भरा पड़ा है। इसके बाद एक और दिन तय किया गया जिसमें रूपनी गाँव के दूसरे पीने के पानी के स्रोतों की भी जल जाँच करने वाली थी। गाँव में इस बात को लेकर बेचैनी थी कि कहीं दूसरे जल स्रोतों का पानी भी तो संक्रमित नहीं है। इस जल जाँच के दिन ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की मीटिंग बुलाई गई थी। इस मीटिंग में गाँव वालों के विशेष आग्रह पर रूपनी ने स्कूल के हेडमास्टर साहब को भी बुलाया था। कारण कि गाँव वाले गंदे पानी से होने वाली बीमारियों के बारे में, डॉक्टर साहब ने जो बताया था, उस पर हेडमास्टर साहब से और खुलकर जानकारी चाहते थे।

उस दिन ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की मीटिंग शुरू होने के समय बहुत गहमा गहमी थी कि रूपनी के संबोधन ने सबका ध्यान खींचा।

रूपनी : (उपस्थित भीड़ को संबोधित करते हुए) – आप लोग आपस में बातचीत बंद कर मीटिंग में थोड़ा ध्यान लगाईए। (हल्ला–गुल्ला फिर भी जारी रहता है। इस पर हेडमास्टर साहब खड़े होते हैं)

हेडमास्टर साहब : आप लोग थोड़ा शांत रहिए। मुझे मालूम है कि पीने के पानी की स्वच्छता और शुद्धता को लेकर गाँव में जागरूकता आई है। तो आइये, आज इस मीटिंग से हम सब लोग इस पर विचार करने का फायदा उठायें।

काकी : मास्टर साहब, उस दिन एक बात समझ में नहीं आई जो डॉक्टर साहब बता रहे थे कि गंदे पानी के पीने से कैंसर होता है। यह तो बड़ी अजीब बात है।

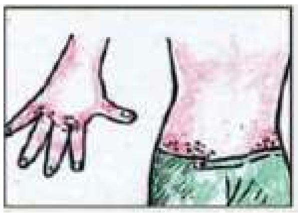

भीड़ में बात करते दो आदमियों में से पहला आदमी – हाँ मास्टर साहब, कैंसर तो जानलेवा बीमारी है। अगर पानी से भी कैंसर हो तो यह तो बड़ी खतरनाक बात है।

दूसरा आदमी – हाँ ठीक कहते हो भाई। अभी तक तो हम लोग यह जानते थे कि सिगरेट, बीड़ी, तंबाकू, खैनी, गुटखा खाने से कैंसर होता है। लेकिन गंदा पानी पीने से भी कैंसर होता है यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। फिर डॉक्टर साहब अगर ऐसा बोल रहे थे तो इसका मतलब यह भी है कि यह सच बात है।

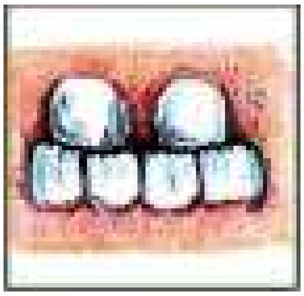

काकी – हाँ मास्टर साहब, इस बात ने हम लोगों को बहुत परेशान कर दिया है। थोड़ा समझाकर बताइये कि क्या सच में ऐसा होता है?

हेडमास्टर साहब – देखिए, यह तो साधारण समझ की बात है कि पीने का पानी अगर गंदा हो तो वैसे पानी के पीने से आदमी बीमार पड़ जाता है। अशुद्ध जल या गंदे पानी की पहचान क्या है? एक तो यह कि पानी मटमैला है, उसमें मिट्टी, बालू के कण घुले होने के कारण उसका रंग गंदला हो जाता है। ऐसे पानी का स्वाद भी खराब लगता है। बहुत जगहों पर ऐसे पानी से दुर्गंध भी आती है। तब हम ऐसे पानी को गंदा या अशुद्ध पानी कहते हैं और उसके पीने से आदमी की तबीयत खराब हो सकती है।

पहला आदमी –तो क्या मास्टर साहब ऐसे गंदे पानी के पीने से कैंसर भी हो सकता है।

हेडमास्टर साहब – न मटमैले पानी से नहीं। वो दूसरी बात है। इसे इस तरह से समझिए। कुएँ, चापाकल, तालाब के पानी का स्रोत जमीन के अंदर जमा पानी है। हमलोगों ने कई जगह देखा होगा कि चापाकल या कुआँ सूख जाता है। इसका मतलब है कि जमीन के अंदर का पानी सूख गया। हमलोग जो कुएँ या चापाकल का पानी

पीते हैं, उस पानी का असली स्रोत तो मिट्टी है। मिट्टी के कणों में जमा हुआ पानी ही कुआँ या चापाकल के लिए बनाए गए गड्ढे या छेद में रिसकर जमा होता है।

मुखिया जी – हाँ, इसलिए तो मिट्टी को माँ कहते हैं। खाने का अनाज भी इसी से पैदा होता है और पीने का पानी भी यही देती है।

हेडमास्टर साहब – हाँ, सही बात है। लेकिन कभी–कभी मिट्टी में ऐसे हानिकारक पदार्थ भी मौजूद होते हैं जो पानी में घुलकर उसे दूषित कर देते हैं। वैसे तो ये हानिकारक पदार्थ थोड़ी मात्रा में पानी में हर समय मौजूद रहते हैं। उससे स्वास्थ्य पर भी किसी तरह का प्रभाव नहीं पड़ता। लेकिन जब उनकी मात्रा एक सीमा से अधिक हो जाती है तब वैसे पानी के पीने से आदमी बीमार पड़ जाता है।

पहला आदमी –मास्टर साहब, मिट्टी में मौजूद हानिकारक पदार्थ के पानी में घुलने की बात समझ में नहीं आई।

हेडमास्टर साहब – अच्छा, ठीक है। इसे इस तरह से समझिये। हम लोगों ने कई जगह जंगल के अंदर या खेत के किनारे पानी का चुआँ देखा है। ऐसे चुआँ बड़े काम के होते हैं। उनसे पीने का साफ और मीठा पानी मिलता है। लेकिन याद कीजिए कई जगहों पर चुआँ का पानी लाल मटमैला रंग का होता है और उसे पीने पर लोहे का स्वाद आता है। ऐसा क्यों? क्योंकि जमीन के अंदर मौजूद लोहा उस पानी में घुला हुआ रहता है।

पहला आदमी –हाँ, मास्टर साहब, आप सही कह रहे हैं। ऐसा तो कई जगह देखा है।

दूसरा आदमी – तो क्या कैंसर वाली बात जो डॉक्टर साहब ने बताई थी, इसी लोहे के कारण होती है?

हेडमास्टर साहब – नहीं, वो एक दूसरा पदार्थ है जो पानी में घुल जाता है। उसे आर्सेनिक कहते हैं। जिन–जिन जगहों में पीने के पानी में आर्सेनिक की मात्रा बढ़ जाती है वहाँ ऐसा पानी पीने वालों के शरीर में आर्सेनिक जमा होता जाता है। ऐसे व्यक्तियों के शरीर पर सफेद या काले धब्बे उभर आते हैं जिस पर कड़े और खुरदरे चकते बन जाते हैं। आगे चलकर यह चमड़े और फेफड़े के कैंसर का भी कारण बन सकता है।

दूसरा आदमी – (पहले आदमी से) तब तो सचमुच में गंदा पानी पीना बहुत नुकसानदेह है।

पहला आदमी – लेकिन मास्टर साहब, आर्सेनिक घुले पानी की पहचान क्या है। जैसे मिट्टी के कण घुले हुए पानी का रंग मटमैला होता है या फिर लोहा घुले पानी का रंग लाल होता है, क्या उसी तरह आर्सेनिक घुले पानी को भी देखकर पहचाना जा सकता है?

हेडमास्टर साहब – नहीं। यही असली बात है। आर्सेनिक घुला पानी देखने में साफ पानी की तरह ही होता है। हम जो पानी अभी पी रहे हैं, उसमें भी आर्सेनिक घुला हो सकता है।

पहला आदमी –तब तो हमारे यहाँ के पानी की भी जाँच होनी चाहिए मास्टर जी।

हेडमास्टर साहब – जिन क्षेत्रों के पानी में आर्सेनिक की खतरनाक मात्रा पाई जाती है वहाँ लोगों के हाथ या पैरों के चमड़ी में दाग उभरने जैसे शुरुआती लक्षणों से ही आर्सेनिक की उपस्थिति का पता चल जाता है। इससे पहले कि रोग आगे भयानक रूप ले, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग द्वारा बड़े पैमाने पर उस क्षेत्र के जलस्रोतों की आर्सेनिक जांच की जाती है। हमारे क्षेत्र में भले ही पीने के पानी में आर्सेनिक नहीं पाया जाता है लेकिन झारखण्ड के कुछ क्षेत्रों जैसे साहेबगंज, जामताड़ा वगैरह में पीने के पानी में आर्सेनिक की उपस्थिति एक बहुत बड़ी समस्या है। हाँ, किसी भी जगह नये चापाकल गड़वाने के समय पानी की आर्सेनिक जाँच अवश्य करवानी चाहिए। इसके लिए जिले के बड़े इंजीनियर साहब मतलब कार्यपालक अभियंता से संपर्क करना चाहिए।

मुखिया जी –लेकिन हेडमास्टर साहब, आर्सेनिक तो पानी के दूषित होने का एक कारण है। उस दिन डॉक्टर साहब दूसरी बीमारियों के बारे में भी तो बता रहे थे। जरा उनके बारे में भी कुछ खुलासा कीजिए।

हेडमास्टर साहब – ठीक है, सुनिए। जिस तरह पानी में आर्सेनिक के घुलने से बीमारी पैदा होती है ठीक उसी तरह फ्लोराइड, नाइट्रेट, आयरन मतलब लोहा के भी सामान्य मात्रा से ज्यादा घुला रहने पर बीमारियाँ पैदा होती हैं। साथ ही पीने के पानी में अम्ल–क्षार का संतुलन बिगड़ने से भी पानी उपयोग के लायक नहीं रह जाता है।

मुखिया जी – मास्टर साहब, इन पदार्थों के पानी में घुलने के कारण क्या–क्या नुकसान होते हैं, जरा उसके बारे में कुछ बताइये।

हेडमास्टर साहब – हाँ, ठीक है मुखिया जी। लेकिन उसके साथ एक और बात है। जैसा कि हम सभी को मालूम है कि पेयजल और स्वच्छता विभाग द्वारा जलसहियाओं को पीने के पानी की जाँच की ट्रेनिंग दी गई है। साथ ही प्रत्येक जलसहिया को जाँच के लिए फिल्ड टेस्ट किट (FTK) भी दिया गया है। रूपनी जलसहिया पहले जरा इसके बारे में बताएँ।

रूपनी – जी मास्टर जी। पेयजल एवं स्वच्छता विभाग द्वारा जलसहियाओं के लिए पीने के पानी की जाँच हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इसमें सभी जलसहियाओं को फ्लोराइड, नाइट्रेट, आयरन, पानी की पी.एच. जाँच का प्रशिक्षण दिया गया था। साथ ही प्रत्येक जलसहिया को फिल्ड टेस्ट किट दिया गया था। इस फिल्ड टेस्ट किट में कुछ रसायन होते हैं जिनकी सहायता से अलग–अलग टेस्ट किये जाते हैं। एक फिल्ड टेस्ट किट से लगभग 100 जलस्रोतों की जाँच की जा सकती है। आज इस फिल्ड टेस्ट किट से हम कुछ जलस्रोतों की भी जाँच करेंगे। मास्टर जी, पहले आप मुखिया जी के सवालों का जवाब दें। उसके बाद हम सभी फिल्ड टेस्ट किट से जल जाँच के लिए गाँव के विभिन्न पीने के पानी के स्रोतों में जाएँगे। हमारे साथ इस मीटिंग में अगल बगल के गाँवों की कुछ जलसहिया भी फिल्ड टेस्ट किट से जाँच के बारे में समझने और सीखने आई हैं। इसलिए जल जाँच के समय हम थोड़ी बारीकी से जल जाँच की विधि को भी समझने का प्रयास करेंगे।

हेडमास्टर साहब – ठीक है रूपनी। तो सुनिए आप सभी लोग। पीने के पानी में यदि फ्लोराइड अपनी सुरक्षित सीमा मतलब 1.5 मिलीग्राम प्रति लीटर से ज्यादा हो तो इससे फ्लोरोसिस नामक बीमारी होती है। इससे दाँत धीरे–धीरे नष्ट होने लगते हैं। शरीर की हड्डियाँ और हड्डियों के जोड़ सख्त हो जाते हैं। ज्यादा समय तक फ्लोराइड के सेवन से हड्डियाँ कमजोर होकर मुड़ जाती हैं। इससे आदमी का या तो चलना फिरना बंद हो जाता है या फिर चलने के लिए बैशाखी का सहारा लेने पर मजबूर हो जाना पड़ता है। फ्लोराइड मिले पानी के पीने से मवेशियों की भी हड्डियाँ खराब हो जाती हैं। इस तरह फ्लोराइड की ज्यादा मात्रा आदमी और मवेशी दोनों के स्वास्थ्य पर बहुत ही हानिकारक प्रभाव डालता है।

रूपनी – ठीक इसी तरह से नाइट्रेट, आयरन के भी सामान्य मात्रा से ज्यादा होने पर भी स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं न मास्टर जी।

हेडमास्टर साहब – हाँ। पीने के पानी में नाइट्रेट की अधिकता तो शिशुओं की मौत का कारण बन सकती है। कारण, नाइट्रेट खून के हीमोग्लोबिन के साथ प्रतिक्रिया कर उसे निष्क्रिय कर देता है। इससे शरीर में ऑक्सीजन की आपूर्ति बुरी तरह प्रभावित होती है। इस बीमारी को ब्लू बेबी रोग कहते हैं। ठीक इसी तरह पानी में लोहे की मात्रा सामान्य सीमा से अधिक होने पर पानी का स्वाद बिगड़ जाता है। ऐसा पानी तो कपड़े धोने के लायक भी नहीं रहता क्योंकि इससे कपड़ों पर धब्बे पड़ जाते हैं। पानी की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाली एक और चीज है – अम्ल और क्षार का संतुलन या पी.एच.। पानी की अम्लता और क्षारीयता बढ़ना दोनों स्वास्थ्य के लिए, विशेषकर पाचनतंत्र के लिए नुकसानदेह है। ऐसा पानी तो सीधे–सीधे किसी उपयोग का नहीं रहता है।

मुखिया जी –तब तो मास्टर साहब, आज तक हमलोग जो पीने का पानी उपयोग करते रहे हैं, उससे भले ही सौभाग्यवश हमलोगों को कोई नुकसान न पहुँचा हो लेकिन भविष्य में इन सभी हानिकारक पदार्थों की मात्रा पीने के पानी में न बढ़ जाय इसके लिए तो पानी के स्रोतों की जाँच नियमित रूप से जरूरी है न।

हेडमास्टर साहब – हाँ। इस दिशा में पेयजल एवं स्वच्छता विभाग ने जलसहियाओं को जल जाँच का प्रशिक्षण और जल जाँच के लिए फिल्ड टेस्ट किट देकर सराहनीय प्रयास किया है। क्यों रूपनी ?

रूपनी – जी मास्टर जी, मैं थोड़ा इसके बारे में मीटिंग में उपस्थित सभी लोगों को बताना चाहूँगी। फिल्ड टेस्ट किट एक छोटा डब्बा होता है जिसमें जल जाँच के लिए अलग–अलग रसायनों की छोटी–छोटी शीशियाँ रहती हैं। फ्लोराइड जाँच के लिए दी गई शीशियों में अंग्रेजी का F लिखा रहता है। इसी तरह नाइट्रेट जाँच की शीशियों में अंग्रेजी का N1, N2 और N3, आयरन जाँच की शीशियों में Fe1, Fe2 और Fe3 लिखा रहता है। साथ ही पानी के अम्लक्षार का संतुलन जानने के लिए लिटमस पेपर भी रहता है। ऐसा ही एक फिल्ड टेस्ट किट मेरे पास भी है (सबको दिखाकर)।

(भीड़ में उपस्थित सभी लोग खड़े हो जाते हैं और फिल्ड टेस्ट किट के पास आकर गोल होकर उसे देखते हैं)

मुखिया जी – आज हमारे साथ अगल बगल के गाँवों से कुछ ऐसी जलसहिया भी आई हैं जिन्होंने जल जाँच प्रशिक्षण में किन्हीं कारणों से भाग नहीं लिया था। अब हम लोग पास के ही चापाकल को चलेंगे जहाँ रूपनी जल जाँच करेगी तथा प्रत्येक जाँच के अलग–अलग चरणों के बारे में विस्तार से भी बतायेगी ताकि ये लोग भी जल जाँच के बारे में सीखकर अपने अपने गाँवों में जल जाँच का काम करें। तो आइये चलते हैं चापाकल के पास।

(सभी लोग चापाकल की ओर प्रस्थान करते हैं। ग्रामीण बड़ी उत्सुकता से इस जल जाँच के बारे में आपस में बात कर रहे हैं। रूपनी के साथ दूसरी जलसहिया भी खड़ी है। भीड़ में काकी और नूतन भी दूसरी अन्य महिलाओं के साथ एक ओर खड़ी हैं)

रूपनी (सभी को संबोधित करते हुए) – जल की गुणवत्ता की जाँच को तीन वर्गों में बाँटा गया है। पहला– भौतिक गुणवत्ता जिसके तहत पानी के रंग, गंध, स्वाद व गंदलापन आता है। यहाँ इस चापाकल के पानी में रंग, गंध, स्वाद व गंदलापन को लेकर अभी तक कोई दोष नहीं पाया गया है। दूसरी रासायनिक गुणवत्ता है जिसके लिए फ्लोराइड, नाइट्रेट, आयरन और पी.एच. की जाँच अभी की जाएगी। साथ ही जल की जीवाणु जाँच के लिए हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशी की सहायता से जल में जीवाणु संक्रमण की जाँच होगी।

नूतन – ऐसी ही जाँच तो तुमने उस दिन जब डॉक्टर साहब आए थे, तब खेत वाले कुएँ के पानी की भी की थी न रूपनी।

रूपनी – अरे वाह, तुम्हे अभी तक उस जाँच की याद है? कहो तो क्या बात है?

नूतन – कुछ नहीं। तुम्हारी बातें सुनते–सुनते अब दिमाग में भी बैठने लगी है।

काकी – (मुस्करा कर) – चलो, संगति का असर हो रहा है।

रूपनी – सबसे पहले तो हम चापाकल को थोड़ी देर चलाकर पानी बहने देते हैं। फिर इस पी.वी.सी. बोतल को अच्छी तरह धोकर उसे पानी से भर लेते हैं। (नूतन आगे बढ़कर चापाकल चलाती है और बोतल

धोकर उसमें पानी भरती है) किसी भी पानी के स्रोत की जाँच से पहले हम पेयजल एवं स्वच्छता विभाग द्वारा दिए गए जल गुणवत्ता जाँच प्रतिवेदन यानि जल जाँच का रिकॉर्ड रखने के फॉर्म को भरते हैं। यह फॉर्म उस पानी के स्रोत का रिकॉर्ड होता है ताकि भविष्य में दोबारा जाँच करने के समय उस जल स्रोत की पिछली स्थिति जानी जा सके। साथ ही इसकी कॉपी पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के जिला समन्वयक को भी भेजी जाती है ताकि इसे विभाग के ऑनलाईन नेटवर्क में एन्ट्री किया जा सके। जाँच वाले फॉर्म में फ्लोराइड, आयरन, नाइट्रेट, पी.एच. और जीवाणु जाँच के खाने में पाए गए परिणामों को भरते जाते हैं। साथ ही फॉर्म के साथ–साथ जल नमूना लेने वाले पी.वी.सी. बोतल पर गाँव, पंचायत, जिला का नाम, जल स्रोत का नाम और स्थान, तारीख और समय, नमूना लेने वाले का नाम इत्यादि जानकारियाँ दी जाती हैं। अगर जल जाँच में परिणाम संतोषजनक न हो तो जाँँच के लिए लिये गए वैसे लेबल लगे बोतल को जिला प्रयोगशाला में आगे जाँच के लिए भेजा जाता है। जल स्रोत का पानी पीने लायक है या नहीं, इसे जल जाँच फॉर्म में लिखकर फॉर्म पर जलसहिया, मुखिया अपने हस्ताक्षर करते हैं।

रूपनी (लोगों को दिखाते हुए) – तो आइये सबसे पहले पानी में फ्लोराइड की मौजूदगी की जाँच करते हैं। अब इस किट डब्बे से इस मापने वाले सिलेंडर, जिसमें एक ओर पानी मापने का स्केल बना हुआ है, से पाँच मिली लीटर पानी मापकर इस छोटे काँच की जल जाँच शीशी में डालते हैं। इस किट में मौजूद F लिखे हुए डब्बे से पाँच बूँद रसायन जाँच के लिए ली गई पानी में डालकर इसे हिलाते हैं। जरा देखिए, इस पानी का रंग बदल रहा है।

(सभी आश्चर्य से शीशी के रंग बदलते पानी को देखते हैं)

रूपनी फिल्ड टेस्ट किट से चौकोर छोटे पारदर्शी प्लास्टिक से मढ़े कार्ड निकालकर लोगों को दिखाती है।

रूपनी – जरा इन रंगीन चार्ट को देखिए। फ्लोराइड, नाइट्रेट, आयरन जाँच के लिए जब रसायन डालते हैं तो पानी के रंग में बदलाव आ जाता है। इन रंगीन चार्ट से तब हम पानी के रंग का मिलान कर यह पता लगाते हैं कि हमारे जाँच के लिए ली गई पानी में फ्लोराइड, नाइट्रेट या आयरन की मात्रा सुरक्षित सीमा से कम या ज्यादा है।

(रूपनी फिर जल जाँच के लिए ली गई पानी के बदले रंग से फ्लोराइड चार्ट के रंग का मिलान करती है)

रूपनी – अब जरा यहाँ देखिए। पीने के पानी में फ्लोराइड की स्वीकृत मात्रा 1.5 मिलीग्राम होती है। रंगीन चार्ट में 1.5 के ऊपर हल्के गुलाबी रंग का डंडा है। हमारे जल जांच की शीशी के पानी का रंग गहरा गुलाबी है। रंगीन चार्ट में गहरे गुलाबी रंग के डंडे के नीचे शून्य लिखा हुआ है। इसका मतलब इस चापाकल के पानी में फ्लोराइड बिलकुल भी नहीं है।

मुखिया जी – क्या इसी तरह की जाँच आयरन और नाइट्रेट के लिए भी करते हैं रूपनी।

रूपनी – नहीं मुखिया जी, थोड़ा फर्क है। देखिए बताती हूँ। आयरन जाँच के लिए 10 मिलीलीटर पानी मापकर छोटी जल जाँच शीशी में डालते हैं। फिर किट में मौजूद Fe1 लिखे सफेद डब्बे से 5 बूँद, Fe2 लिखे डब्बे से एक बूँद और Fe3 लिखे डब्बे से 5 बूँद इस जल जाँच शीशी में डालते हैं। अब जाँच के लिए ली गई पानी के बदले रंग का आयरन के लिए दिए गए चार्ट से मिलान करते हैं। ठीक उसी तरह नाइट्रेट जाँच के लिए दूसरी विधि है। इसमें 1 मिली लीटर जाँच का जल और 9 मिली लीटर मिनरल या फिर डिस्टील्ड वाटर मापन सिलिण्डर से मापकर उसे जाँच की शीशी में डालते हैं। फिर इसमें N1 लिखे हुए डब्बे से बिलकुल थोड़ी मात्रा में सरसों के आकार का धातु पाउडर निकालकर डालते हैं। उसके बाद N2 लिखे डब्बे से दो बूँद और N3 लिखे डब्बे से दो बूँद जल जाँच शीशी में डालकर एक मिनट तक हिलाते हैं। अब इस शीशी को दो मिनट के लिए स्थिर छोड़ देते हैं और पानी के बदले हुए रंग का मिलान नाइट्रेट के लिए दिए रंगीन चार्ट से करते हैं। हम देखते हैं कि आयरन जाँच के रंगीन चार्ट में आयरन के लिए स्वीकृत मात्रा मतलब 1 मिलीग्राम के ऊपर के डंडे का रंग हल्का गुलाबी है। हमारी जाँच वाले जल जाँच की शीशी का रंग रंगीन चार्ट के दूसरे डंडे यानि 0.3 लिखे हुए डंडे के रंग से मेल खा रहा है। इसका मतलब यह हुआ कि इस चापाकल के पानी में आयरन की मात्रा सुरक्षित सीमा से भी कम है। यानि आयरन की इस मात्रा से स्वास्थ्य पर किसी प्रकार के नुकसान की कोई संभावना नहीं है। अब फिर से नाइट्रेट जाँच के रंगीन

चार्ट पर ध्यान दीजिए। पानी में नाइट्रेट की सुरक्षित सीमा 45 मिलीग्राम प्रति लीटर होती है। इसके लिए रंगीन चार्ट के तीसरे डंडे का रंग हल्का गुलाबी बना है। हमारे जल जाँच की शीशी का रंग सफेद गुलाबी है जो रंगीन चार्ट के शून्य (0) से मेल खाता है। इसका मतलब यह है कि इस पानी में नाइट्रेट भी नहीं है। यानि नाइट्रेट के हिसाब से भी यह पानी पीने के लिए सुरक्षित है। इस तरह से हमने देखा कि जल जाँच की शीशी में पानी के बदले रंग को जल जाँच के रंगीन चार्ट से मिलाकर हम पानी में फ्लोराइड, नाइट्रेट या आयरन के स्वीकृत मात्रा या फिर स्वीकृत मात्रा से कम या ज्यादा होने के बारे में आसानी से जाँच कर सकते हैं।

हेडमास्टर साहब – रूपनी, अब जरा पानी का पी.एच. मतलब अम्ल क्षार का संतुलन जाँच करके दिखाओ।

रूपनी – यह बहुत ही आसान जाँच है। फिल्ड टेस्ट किट में दिए गए लिटमस पेपर से एक पत्ती फाड़कर अलग करते हैं। उस पर जाँच की जाने वाली पानी की एक बूँद स्याही भरने वाले ड्रॉपर की सहायता से डालते हैं। लिटमस पेपर का रंग तुरंत ही बदल जाता है। पानी के बदले हुए रंग का मिलान लिटमस पेपर पर दिए रंगीन चार्ट से करते हैं। रंगीन चार्ट पर लिखे गए अंक 6.5, 7.0, 7.5, 8.5, 9.0 के सामने रंग होते हैं। पीने के पानी के लिए पी.एच. का स्वीकृत मान 6.5 – 8.5 होता है। इससे कम या ज्यादा होने पर पानी उपयोग के लायक नहीं रहता है।

नूतन – रूपनी, अभी भी एक जाँच बाकी है।

रूपनी – हाँ, हाँ, याद है। वो तुम्हारे खेत वाले कुएँ के पानी के जैसा जाँच न।

नूतन – हाँ, हाँ, वही।

रूपनी (हँसकर) – देखा काकी, नूतन को अब सफाई से जुड़े कामों का कितना ध्यान रहने लगा है।

काकी (हँसकर) – कुछ कहा नहीं जा सकता, इसके दिमाग में किस कारण से क्या बात बैठ जाये। खैर तुम जाँच आगे बढ़ाओ।

रूपनी – (सभी लोगों को संबोधित करते हुए) तो देखा न आप लोगों ने। पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के दिए गए फिल्ड टेस्ट किट से अब हम स्वयं भी अपने पीने के पानी के स्रोतों की जाँच कर सकते हैं। जैसा मैंने पहले भी बताया है, अगर हमारे जांच से किसी पीने के पानी के स्रोत का परिणाम संतोषजनक न हो तो वैसे जल

नमूने के बोतल को आगे जाँच के लिए जिला प्रयोगशाला में भेजा जाता है। अब हम जल जीवाणु जाँच पर आते हैं। जीवाणु हर जगह मौजूद है। यहाँ तक कि हवा में भी जीवाणु पाये जाते हैं। इसलिए पहले चापाकल के मुँह के पास स्प्रिट लगी रूई को जलाकर उसके आसपास के वातावरण को जीवाणु रहित करते हैं। इसके बाद चापाकल चलाकर थोड़ी देर पानी को बहने देते हैं। अब जीवाणु जाँच के लिए हाईड्रोजन सल्फाइड की शीशी में जल जाँच के लिए पानी लेते हैं। इस बात का ध्यान रखते हैं कि जल नमूना लेते समय हाथ या बाहरी वस्तु जल के संपर्क में न आये। इस हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशी को 24 घंटों के लिए किसी सुरक्षित स्थान पर रख दिया जायेगा। अगर 24 घंटों के बाद पानी का रंग काला पड़ जाये तो इसका मतलब यह होगा कि पानी में हानिकारक जीवाणु मौजूद हैं और पानी पीने के लायक नहीं है।

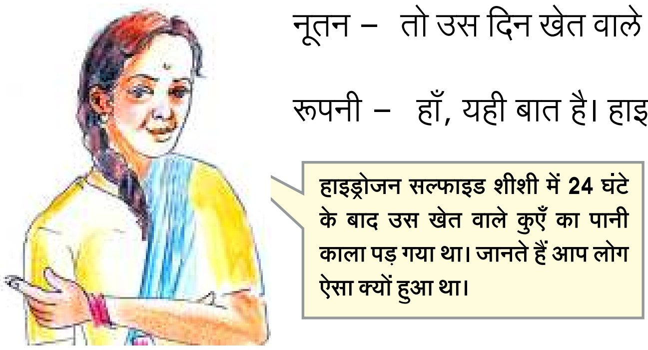

नूतन – तो उस दिन खेत वाले कुएँ के पानी के साथ भी ऐसा ही हुआ था न रूपनी।

रूपनी – हाँ, यही बात है। हाइड्रोजन सल्फाइड शीशी में 24 घंटे के बाद उस खेत वाले कुएँ का पानी काला पड़ गया था। जानते हैं आप लोग, ऐसा क्यों हुआ था? मास्टर जी, अगर आप इस बारे में बतायें तो अच्छा हो।

हेड मास्टर साहब – हाँ, ठीक है। सुनिए, अभी हाल तक इस गाँव के लोग खेतों में खुले में शौच को जाते थे। वही शौच सड़कर धूलकणों के साथ या फिर वर्षा के जल के साथ घुलकर बहते हुए कुएँ के पानी में मिल गया होगा। अगर किसी जल स्रोत के पानी में आदमी का पैखाना घुला हो तो जाहिर है कि उसमें जीवाणु पैदा होंगे ही। अक्सर ऐसा देखा जाता है कि खेत में बने कुओं के ऊपर ईंट का चबूतरा नहीं बना रहता है। इससे चारों ओर का गंदा पानी और गंदगी आसानी से उस कुएँ में प्रवेश कर जाता है। इस जल जाँच परिणाम से एक बात सबको समझनी चाहिए कि अपने पीने के पानी के स्रोतों के चारों ओर सफाई कितनी जरूरी है। जल जाँच के बाद इस बात को सोचकर भी बड़ी घृणा आ रही है कि हममें से कई लोग उस कुएँ का आदमी के पैखाना घुले हुए पानी को पीते आ रहे थे।

काकी – हाँ, मास्टर साहब। अब तो इस जल जाँच के बाद लोगों को अपनी आदतों को सुधारने की बड़ी प्रेरणा मिल रही है।

मुखिया जी – एक और फायदा मिला है काकी। आज के कार्यक्रम में इस पंचायत के दूसरे गाँवों की भी जलसहिया आई हैं। उन्हें भी जल जाँच का किट पेयजल एवं स्वच्छता विभाग से दिया गया है। उम्मीद है कि अपने अपने गाँवों में लौटने के बाद वे भी जल जाँच का काम पूरे उत्साह के साथ करेंगी।

पहली जलसहिया – हाँ, मुखिया जी, आज के कार्यक्रम से हमें यह बात समझ में आई है कि हम जलसहियाओं के ऊपर समाज की भलाई के लिए कितनी बड़ी जिम्मेवारी है।

दूसरी जलसहिया – हाँ, मुखिया जी, फिर फिल्ड टेस्ट किट से जल जाँच करना भी तो कितना आसान है। मैं चाहती हूँ कि जब मैं अपने गाँव में जल जाँच करूँ तो आज की ही तरह ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की मीटिंग की जाए और उसमें आप और रूपनी जलसहिया भी आयें ।

मुखिया जी और रूपनी (एक साथ) – हाँ, हाँ, जरूर ।

रूपनी – (हेडमास्टर साहब से) मास्टर जी, फ्लोराइड, नाइट्रेट , आयरन जाँच का परिणाम तो हमने इस जल जाँच फॉर्म में भर लिया है। अब चूँकि इस हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशी से किए गए जाँच का परिणाम 24 घण्टों के बाद आएगा इसलिए तब तक इसे किसी सुरक्षित स्थान पर रख दिया जाए।

हेडमास्टर साहब – नूतन का घर यहाँ से नजदीक है। इसे नूतन को ही देते हैं।

रूपनी – (नूतन को तेजी से जाते देखकर) अरे नूतन, ये तू अचानक कहाँ भागे जा रही है।

नूतन – बड़ी गड़बड़ हो गई है रूपनी।

रूपनी – क्या हुआ ?

नूतन – (लजाकर) जानती हो, जब मैं जंगल से लकड़ियाँ काटने जाती हूँ तो खेत वाले कुएँ से बोतल में पीने के लिए पानी भरकर ले जाती हूँ। फिर जाने किसने बताया था कि खेत वाले कुएँ का पानी सेहत के लिए फायदेमंद होता है। तो लौटते समय एक बोतल पानी घर के लिए भी लेकर जाती थी। छि: छि:, देखो तो मैं कितनी बेवकूफ हूँ कि पैखाना घुले हुए पानी को सेहत बनाने वाला पानी समझकर अब तक पीती रही हूँ।

काकी (हँसकर) – अच्छा तो अब समझ में आया कि क्यों तू आज कुएँ वाले पानी की जाँच के पीछे पड़ी हुई थी। (सभी हँसने लगते हैं)

रूपनी – लेकिन अचानक ये तू भागकर कहाँ जा रही हो।

नूतन – अरे कहीं गड़बड़ न हो जाय। अभी याद आया कि उस कुएँ का एक बोतल पानी अभी भी मेरे घर में है और मेरे बच्चे घर में ही खेल रहे हैं। कहीं खेल–खेल में वे उसे पी न लें।

रूपनी – अरे ये हाइड्रोजन सल्फाइड की शीशी तो लेती जा।

नूतन – (दौड़कर जाते हुए) – बस बस, तुरंत आती हूँ। पहले उस पैखाना घुले हुए पानी को तो फेंक आऊँ। (नूतन दौड़कर भागती है। उसे भागता देखकर भीड़ में उपस्थित सभी लोग हँस पड़ते हैं।)

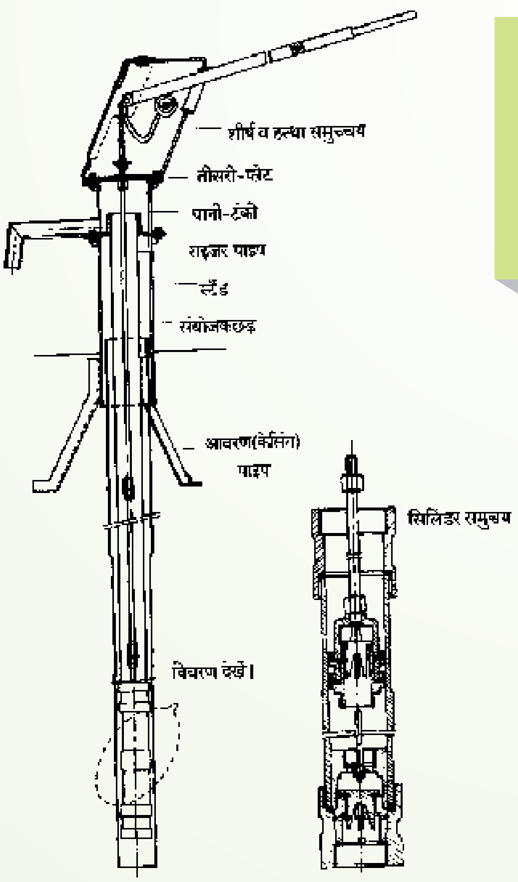

और महिलाओं ने चापाकल मरम्मति की

गाँव के लोग बड़े हुनरमंद होते हैं। उन्हें खेती बाड़ी और घरेलू कामों के बहुत सारे तकनीकी हुनर की जानकारी होती है। महिलाएँ भी इसमें पीछे नहीं हैं। पर क्या ग्रामीण महिलाएँ चापाकल मरम्मति कर सकती हैं? उत्तर है हाँ! रुपनी कहती है – इसमें चमत्कार की कोई बात नहीं है। अगर कोई एक बार चापाकल बनाना सीख ले तो उसे पता चलेगा कि दुनिया में शायद ही दूसरी और कोई मशीन हो जो इससे भी सीधी और सरल हो।

संदर्भ

(i) अपना हैंड पम्प आप बनाओ पुस्तिका – पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित।

(ii) चापाकल प्रशिक्षण मॉड्यूल – पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित।

और महिलाओं ने चापाकल मरम्मति की

पिछले दिनों गाँव के एक खराब चापाकल की मरम्मत रूपनी जलसहिया और गाँव की दो अन्य महिलाओं ने मिलकर की। अपने ही गाँव की महिलाओं द्वारा चापाकल की मरम्मति गाँववालों के लिए चर्चा का विषय बनी रही। जब रूपनी और अन्य दोनों महिलाएँ चापाकल की मरम्मति कर रही थीं तो गाँव भर की भीड़ कौतूहलवश चापाकल के पास जुट आई। उस दिन नूतन किसी कारणवश गाँव से बाहर गई हुई थी। शाम को घर लौटने पर उसने भी यह बात सुनी। उसके दूसरे दिन घर का कामकाज निपटाकर दोपहर बाद वो रूपनी के घर आई। नूतन को मालूम था कि अगर रूपनी फुर्सत में हो तो दोपहर बाद वह अपने घर के पिछवाड़े की बाड़ी में चटाई बिछाकर या तो आराम करती है या फिर ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति का कुछ काम करती है। आज भी यही हुआ। रूपनी ने दूर से ही नूतन को आते देख लिया। इससे पहले कि नूतन कुछ बोले, रूपनी ने ही बात शुरू की।

रूपनी (हँसते हुए) – आ गई तू। अब चापाकल मरम्मति के बारे में पूछेगी।

नूतन (आश्चर्य से) – अरे, तुम्हें कैसे मेरे मन की बात पता चली।

रूपनी – चापाकल मरम्मति न हुई जैसे कोई चमत्कार हो गया। गाँव के लगभग सभी लोग इस बात को मुझसे पूछ चुके हैं, केवल तू ही बाकी थी। मैं भी अगर तुम लोगों की जगह होती तो इसे चमत्कार ही समझती। लेकिन इसमें चमत्कार की तो कोई बात ही नहीं है। अगर कोई एक बार चापाकल बनाना सीख ले तो उसे पता चलेगा कि दुनिया में शायद ही दूसरी और कोई मशीन हो जो इससे भी सीधी और सरल हो। फिर गाँव के लोगों के पास हुनर की कमी थोड़े ही है। गाँव के लोग अगर बाँस से चटाई बना सकते हैं, मछली पकड़ने का जाला बुन सकते हैं, टोकरी और सुप गाँथ सकते हैं, ढेंकी का मशीन तैयार कर सकते हैं, खेत जोतने का हल बना सकते हैं, घर की खिड़की और दरवाजे बना सकते हैं, यहाँ तक कि मिट्टी का अपना घर भी खुद बना सकते हैं तो फिर गाँव का वही आदमी चापाकल मरम्मति भी कर सकता है।

> अगर कोई एक बार चापाकल बनाना सीख ले तो उसे पता चलेगा कि दुनिया में शायद ही दूसरी और कोई मशीन हो जो इससे भी सीधी और सरल हो।

नूतन – तुम ठीक कहती हो। जिसकी जैसी रूचि वो वैसा काम सीख लेता है। फिर अगर तुम कहती हो कि गाँव का कोई भी आदमी चापाकल मरम्मति सीख सकता है तो तुम्हारे कहने पर विश्वास न करने का कोई कारण नहीं है। लेकिन बात यह भी नहीं है। मुझे तो आश्चर्य इस बात का है कि कोई औरत भी चापाकल मरम्मति कर सकती है।

रूपनी – जरा यह बताओ, अभी जो मैंने गाँव के लोगों के हुनर गिनाए हैं क्या वे सभी काम गाँव की महिलाएँ नहीं करती हैं? तुम्ही बताओ, ऐसा कौन सा हुनर है जिसमें गाँव की महिलाओं की हिस्सेदारी नहीं होती? इन सब हुनर के अलावा महिलाओं को घर और परिवार सँभालने की भी जिम्मेवारी होती है। अगर महिलाएँ ये सब कर सकती हैं तो चापाकल मरम्मति भी कर सकती हैं। (नूतन की ओर एक किताब बढ़ाते हुए) ये देखो।

(नूतन किताब के कवर पर लिखा शीर्षक पढ़ती है – **अपना हैंड पंप आप ही सँभाले**। फिर किताब खोलकर देखती है। किताब के अंदर कई चित्र बने हुए हैं। इन चित्रों में दो महिलाएँ चापाकल मरम्मत कर रही हैं। पूरी किताब में चापाकल के एक–एक भाग को खोलने और फिर उसकी मरम्मति कर उसे वापस जोड़ने के काम को सिलसिलेवार तरीके से चित्रों के माध्यम से दिखाया गया है।)

तो क्या तुमने किताब पढ़कर चापाकल बनाना सीख लिया?

नूतन (आश्चर्य से) – तो क्या तुमने किताब पढ़कर चापाकल बनाना सीख लिया?

रूपनी – (हँसते हुए) न। हुनर सीखने के लिए गुरू की जरूरत पड़ती है। किताब तो सीखे हुए ज्ञान को दोहराने का एक माध्यम भर है।

नूतन – तो तुम्हें चापाकल मरम्मति के गुरू कहाँ मिले?

रूपनी – राँची में। तुम तो जानती हो न, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग से हमेशा ट्रेनिंग कार्यक्रम करवाए जाते हैं। जैसे ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति का हिसाब किताब देखने के लिए रोकड़ बही की ट्रेनिंग, महिलाओं एवं पुरुषों को शौचालय बनाने के लिए राजमिस्त्री की ट्रेनिंग वगैरह। ठीक उसी तरह एक बार जलसहियाओं और ग्रामीण महिलाओं के लिए भी विभाग से चापाकल मरम्मति के लिए पाँच दिनों का ट्रेनिंग दिया गया था। हमारे रहने और खाने की व्यवस्था भी विभाग की ओर से थी। उस कार्यक्रम को याद करके अभी भी

मन खिल उठता है। सिर्फ चापाकल मरम्मति सीखने की बात वहाँ नहीं थी। हमें चापाकल मरम्मति सिखाने वाले गुरूजी भी लगता था जैसे हम लोगों में से ही एक हों। विभाग के लोग बड़े मिलनसार थे और महिला होने के नाते तो हम महिलाओं के लिए विशेष आदर सम्मान वहाँ देखने को मिला। पढ़े लिखे लोगों के मुँह से अपने लिए बहन, दीदी का संबोधन सुनकर मन गदगद हो जाता है। उस ट्रेनिंग कार्यक्रम में लोगों के साथ आपसी मेलमिलाप का व्यवहार कैसे किया जाय–ये सबसे बड़ी बात सीखने को मिली।

नूतन – सच में दुनिया कितनी बड़ी है ना। गाँव में अगर कुएँ के मेंढक जैसी जिंदगी हम गुजारे तो दुनिया कितनी बड़ी है हम शायद ही कभी जान पायेंगे, लेकिन अगर थोड़ी हिम्मत करें तो दुनिया भर के दरवाजे अपने लिये खुला पाएँगे।

रूपनी – (मुस्करा कर) ठीक कहा तुमने। बस इसी थोड़े से हिम्मत की जरूरत चापाकल मरम्मति के लिए भी होती है। ट्रेनिंग कार्यक्रम में ऐसा नहीं था कि चापाकल मरम्मति का काम आसान लग रहा था। शुरू में जैसा हर काम में होता है, इस काम में भी डर लग रहा था, लेकिन पाँच ही दिनों में जैसे कायाकल्प हो गया।

नूतन (प्रश्नवाचक मुद्रा में) – कायाकल्प हो गया? जरा बता न रूपनी, उस ट्रेनिंग कार्यक्रम में क्या–क्या हुआ था?

रूपनी – यही कुछ जो तू इस किताब में देख रही है। लेकिन ट्रेनिंग में सभी कुछ सिलसिलेवार था। पहले दिन हम सभी लोगों के आपस में और विभाग के अधिकारियों के साथ परिचय और प्रणाम पाती के बाद चापाकल बनाने के औजार और चापाकल के पुर्जों की जानकारी दी गई। हम लोगों ने उस दिन चापाकल के खुले पुर्जों को आपस में कई बार जोड़ा और फिर खोला। चापाकल के पुर्जों को जोड़ने और खोलने में तो इतना आनंद आता है मानो जैसे यह कोई खेल हो। चापाकल में पुर्जे भी तो बहुत कम होते हैं। चापाकल के हैंडल और चेन के अलावा चापाकल के अंदर का पाईप और पाईप के अंदर का लोहे का ठोस रॉड जिन्हें राइजर पाईप और कनेक्टिंग रॉड या संयोजक छड़ कहते हैं, के अलावा चापाकल के सबसे नीचे लगा मुख्य मशीन या सिलिण्डर ही

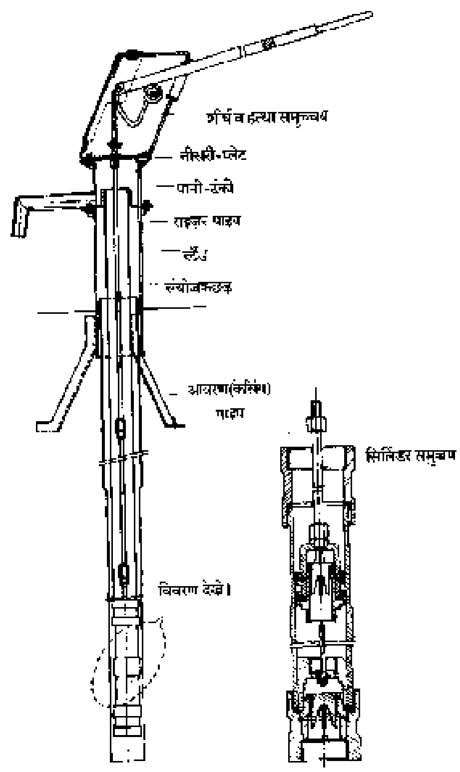

चापाकल के मुख्य पुर्जे हैं। इन सबमें सिलिण्डर ही ऐसा भाग होता है जिसमें छोटे–छोटे पुर्जे लगे होते हैं और वही पानी को जमीन से ऊपर भेजने को जिम्मेवार होता है। लेकिन सिलिण्डर के कलपुर्जे इतने सरल होते हैं कि गाँव का एक आम आदमी भी उसे आराम से खोल और जोड़ सकता है।

नूतन – तो तुम लोगों ने पाँचों दिन यही किया।

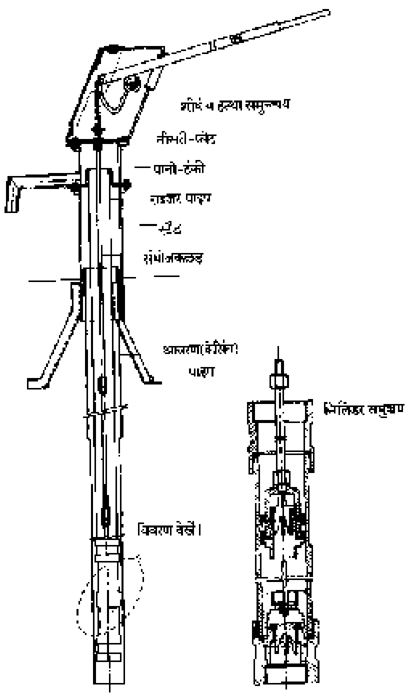

रूपनी –अरे नहीं, आगे तो सुन। पाँचों दिन के लिए अलग–अलग कार्यक्रम थे। दूसरे दिन फिर से हमें चापाकल के पुर्जों की जानकारी दी गई, लेकिन इस बार एक चालू चापाकल को खोला गया और एक–एक कर उसके पुर्जे हमें दिखाए गए। चापाकल तो बहुत सरल मशीन है। पूरे चापाकल में कई पाइप आपस में जुड़े होते हैं। पाइप के अन्दर लोहे के कई रॉड भी आपस में जुड़े होते हैं। पाइप और रॉड सबसे अंत में चापाकल के सबसे निचले हिस्से में सिलिण्डर से जुड़ा होता है। लोहे का रॉड जिसे कनेक्टिंग रॉड कहते हैं, सबसे ऊपर में चेन से जुड़ा होता है। चेन चापाकल के हैंडल से जुड़ता है। इस तरह चापाकल के हैंडल को जब ऊपर नीचे करते हैं तो उससे जुड़ा हुआ कनेक्टिंग रॉड चापाकल के सबसे नीचे स्थित सिलिण्डर के ऊपरी वॉल्व को ऊपर नीचे करता है जिससे पानी ऊपर के पाइप में धक्का खाकर ऊपर की ओर बढ़ता है और चापाकल से बाहर निकलता है।

नूतन – अच्छा तो ये सारा कमाल सिलिण्डर का है।

रूपनी – हाँ, जरा देखो न इस किताब में। सिलिण्डर के अलग–अलग पुर्जों को खोलना और जोड़ना भी बहुत आसान है। चापाकल में ज्यादातर खराबी सिलिण्डर के पुर्जों के खराब होने से आती है। खराबी दूर करने के लिए सिर्फ खराब पुर्जों को बदलना पड़ता है। सिलिण्डर लोहे का एक खोखला बेलन होता है। इसके ऊपरी हिस्से को प्लेंजर एसेम्बली और निचले हिस्से को चेक वॉल्व कहते हैं। जब चापाकल का हैंडल ऊपर की ओर रहता है तब सिलिण्डर के अंदर चेक वॉल्व और प्लेंजर असेंबली आपस में एक के ऊपर एक सटे हुए रहते हैं। प्लेंजर एसेम्बली कनेक्टिंग रॉड से जुड़ा होता है। चापाकल के हैंडल को ऊपर नीचे

करने पर कनेक्टिंग रॉड भी साथ–साथ ऊपर नीचे होता है और उसके साथ सिलिण्डर का प्लेंजर असेंबली भी सिलिण्डर के अंदर ऊपर नीचे होता रहता है।

नूतन – प्लेंजर असेंबली के ऊपर नीचे होने से पाइप के अंदर के पानी को ऊपर धक्का लगने का क्या संबंध है?

रूपनी – हाँ, एकदम सही बात को पकड़ा तुमने। ये सब कमाल तो बस एक वॉल्व का है।

नूतन – वॉल्व? वॉल्व क्या होता है?

रूपनी – वॉल्व का मतलब समझो एक ऐसा दरवाजा जिससे होकर अंदर घुसा तो जा सकता है लेकिन फिर उससे वापस बाहर नहीं निकला जा सकता। जरा याद करो तो साईकिल की ट्रयूब में हवा भरने के छेद यानि नोजल में एक काले रंग का वॉल्व होता है। यह वॉल्व पंप करने पर ट्रयूब के अंदर हवा तो जाने देता है पर वापस बाहर नहीं निकलने देता है।

नूतन – हाँ, हाँ, बिलकुल ठीक।

रूपनी – ठीक उसी तरह चापाकल के सिलिण्डर में भी दो वॉल्व होते हैं। पूरा सिलिण्डर जमीन के अंदर मौजूद पानी में डूबा होता है। जब चापाकल के हैंडल को नीचे करते हैं तो हैंडल से जुड़ा हुआ कनेक्टिंग रॉड ऊपर की तरफ खिंचाता है और अपने साथ सिलिण्डर के प्लेंजर असेंबली को भी ऊपर खींचता है। इससे सिलिण्डर के अंदर चेक वॉल्व और प्लेंजर असेंबली के बीच बिना हवा का खाली स्थान बन जाता है। अब बाहर का पानी चेक वॉल्व के वॉल्व से इस खाली स्थान में भर जाता है। चेक वॉल्व का वॉल्व पानी को तो सिलिण्डर के नीचे से घुसने देता है लेकिन फिर वापस सिलिण्डर से बाहर नहीं जाने देता। अब पानी के बाहर जाने का एक मात्र रास्ता ऊपर पाईप की ओर है। यह कैसे होता है सुनो। जब चापाकल के हैंडल को ऊपर करते हैं तो उसके चेन से जुड़ा कनेक्टिंग रॉड नीचे आता है और साथ में सिलिण्डर के ऊपरी भाग के प्लेंजर असेंबली को नीचे धकेलकर वापस चेक वॉल्व से सटा देता है। इस समय प्लेंजर असेम्बली और चेक वॉल्व के बीच में भरा पानी दबाव के कारण प्लेंजर असेंबली में लगे वॉल्व से होकर सिलिण्डर के ऊपरी भाग में जमा हो जाता है। अब जरा यहाँ ध्यान दो तो चापाकल के काम करने का पूरा माजरा समझ में आ जायेगा। जब चापाकल के हैंडल

को फिर से नीचे धकेलते हैं तो कनेक्टिंग रॉड ऊपर खींचने के कारण प्लेंजर असेंबली भी ऊपर खिंचाता है। इस समय प्लेंजर असेंबली का वॉल्व पानी को वापस नीचे नहीं जाने देता जिसके कारण प्लेंजर असेंबली के ऊपर बढ़ने के साथ–साथ पानी भी ऊपर की ओर धक्का खाकर सिलिण्डर के ऊपर पाइप में चला जाता है और धक्के के जोर से ऊपर बढ़ते हुए चापाकल के बाहर निकल जाता है।

नूतन – देखो तो चापाकल ऊपर से दिखने में कितना भारी भरकम मशीन लगता है लेकिन उसके काम करने का तरीका कितना आसान है।

रूपनी – हाँ, यह बात तो ट्रेनिंग कार्यक्रम में ही पता चल गई थी जब कार्यक्रम के तीसरे दिन हम लोगों को एक चालू चापाकल को खोलने और जोड़ने का मौका दिया गया। जब हम लोगों ने अपने हाथों से चापाकल खोलने और जोड़ने का काम किया तब जाकर पता चला कि सचमुच में यह कितना आसान काम है। असली मजा तो तब आया जब हमलोगों को कार्यक्रम के अंतिम दिन खराब चापाकल को बनाने का मौका दिया गया। खराब चापाकल को बनाना अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने का बहुत बढ़िया अवसर था। एक खराब चापाकल के पाइप में छेद था जिसे सिर्फ पाईप बदलकर ही ठीक कर दिया गया। दूसरे चापाकल के सिलिण्डर के प्लेंजर एसेंबली का वॉल्व घिस गया था जिसके कारण पानी ऊपर की ओर पंप नहीं हो पा रहा था। अक्सर चापाकल में इसी तरह के छोटे मरम्मतों की जरूरत पड़ती है।

नूतन – तुम ठीक कहती हो रूपनी। किसी हुनर के सीख लेने पर आदमी का आत्मविश्वास और हिम्मत तो बढ़ता ही है, दूसरों की भी भलाई होती है।

रूपनी – हाँ, बिलकुल ठीक। गाँव के लोगों को भी विभाग द्वारा दिये जा रहे ट्रेनिंग कार्यक्रमों के बारे में जानकारी और रूचि लेती रहनी चाहिए। चापाकल मरम्मति की ट्रेनिंग में तो सब चीजें हमारे लिए नयी थी। उस ट्रेनिंग कार्यक्रम में भी ऐसा नहीं था कि कुछ भी बताने को बाकी रखा गया हो। चापाकल में लगने वाले पाइप और कनेक्टिंग रॉड के चूड़ी काटने से लेकर मरम्मति में उपयोग होने वाले औजारों की जानकारी, चापाकल के चारों ओर चबूतरा बनाना, पानी बहाने के लिए नाली और सोख्ता गड्ढा बनाने की जानकारी तक सब बातें बताई गई।

नूतन – पेयजल और स्वच्छता विभाग गाँव वालों को चापाकल मरम्मति की ट्रेनिंग देकर कितना अच्छा काम कर रही है न।

रूपनी – हाँ, पूरे झारखण्ड में 32 हजार से भी अधिक गाँव हैं। बहुत सारे गाँव ऐसे हैं जहाँ इतनी ज्यादा आबादी है कि गाँव कई टोलों में बँटा हुआ है। हरेक टोले में एक चापाकल है। इतने सारे चापाकलों की मरम्मति करने के लिए विभाग से मिस्त्री की आशा करते हुए हाथ पर हाथ रखकर बैठना तो हमारे लिए बेवकूफी की ही बात होगी न। तो क्यों न हम अपना चापाकल खुद ही मरम्मत कर लिया करें। फिर देखो न, विभाग तो हर किस्म की सहायता करने के लिए पीछे खड़ा है। चापाकल मरम्मति के सारे औजार ट्रेनिंग कार्यक्रम के बाद हमें दिए गए। फिर जब जैसी जरूरत पड़ती है जिले के बड़े इंजीनियर साहब के ऑफिस से मरम्मति के कल पूर्जे और पाइप भी आसानी से सिर्फ ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की सिफारिश से ही मिल जाते हैं।

नूतन – आज एक चीज पर तूने मेरी आँखे खोल दी रूपनी।

रूपनी – क्या ?

नूतन – कल जब मैंने सुना कि तूने और गाँव की दो औरतों ने मिलकर चापाकल की मरम्मति की है तो सोच रही थी कि मर्दों के हिस्से का काम औरतें कैसे कर सकती है। लेकिन आज तुमसे बात करने पर अब लग रहा है कि यह सब तो बस हौसले की बात है। काबिलियत के आधार पर मर्द और औरत के बीच का भेद मानना तो बिलकुल बेवकूफी की बात है। तुम ठीक ही कह रही थी कि हम औरतें अगर दुनियादारी के सब कामों में मर्दों के साथ मिलकर बराबरी से काम कर सकती हैं तो चापाकल मरम्मति क्यों नहीं कर सकती।

रूपनी – अरे वाह। तुम्हारा हौसला देखकर तो मुझे भी अपने अंदर पहले से ज्यादा हिम्मत महसूस हो रही है। ठीक ही कहा गया है, हौसले से ही हौसला बढ़ता है। एक और एक मिलकर ग्यारह होते हैं। तो बता, आगे अगर किसी चापाकल के मरम्मति की जरूरत पड़ी तो तू मेरे साथ रहेगी न।

नूतन – हाँ वादा करती हूँ मेरी प्यारी जलसहिया।

रूपनी – तो चल हाथ मिला।

रूपनी मुस्कराते हुए अपना हाथ आगे बढ़ाती है। नूतन आगे बढ़कर रूपनी के हाथ को थाम लेती है।

जीतेगी अपनी जलसहिया

ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालय निर्माण के साथ-साथ शुद्ध पेयजल की उपलब्धता पेयजल एवं स्वच्छता विभाग की प्राथमिकताओं में एक है। इसमें जलसहिया की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की कोषाध्यक्ष होने के कारण शौचालय एवं पेयजल सुविधाओं के लिए विभाग से दी जाने वाली राशि को खर्च करने एवं उसका हिसाब किताब रखने में जलसहिया की मुख्य भूमिका है। जलसहिया यह सब कैसे करती है आइये जाने ....

संदर्भ

(i) जलसहिया को बही खाता एवं लेखांकन के प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण मॉड्यूल, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित।

(ii) ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति द्वारा जल संयोग से संबंधित मार्गदर्शिका, जनवरी 2013, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, झारखण्ड सरकार द्वारा प्रकाशित।

जीतेगी अपनी जलसहिया

रूपनी, जलसहिया के गाँव में साफ सफाई को लेकर काफी जागरूकता आई है। स्वच्छता अभियान के उत्प्रेरकों द्वारा गाँव में जागरूकता अभियान चलाने के बाद खुले में शौच से होने वाले नुकसान पर आई जागृति के फलस्वरूप गाँव वालों ने अपने–अपने घरों में शौचालय का निर्माण कर लिया है। जलसहिया रूपनी अब अपने गाँव के खुले में शौच से मुक्ति के सत्यापन के लिए आने वाली टीम की तैयारी में लगी है। रूपनी को मालूम है कि इस सत्यापन के बाद निर्मल भारत अभियान के नियमों के तहत जिला के बड़े इंजीनियर साहब (कार्यपालक अभियंता) के ऑफिस से गाँव को शौचालय बनाने के प्रोत्साहन के रूप में सहायता राशि मिलेगी जो कि ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के खाते में हस्तान्तरित कर दी जायेगी। इस सत्यापन टीम में पड़ोस के पंचायत के एक गाँव की जलसहिया भी आने वाली है। ये जलसहिया लगभग 45 की उम्र की महिला है। रूपनी की उनसे मुलाकात किसी न किसी कार्यक्रम में होती रहती है। सभी उन्हें 'जलसहिया दीदी' के नाम से पुकारते हैं।

आज रूपनी और काकी इसी जलसहिया दीदी के गाँव जाने की योजना बनाकर घर से निकली हैं। जलसहिया दीदी के गाँव में शौचालयों का निर्माण पूरा कर लिया गया है और सभी लोग शौचालयों का उपयोग भी कर रहे हैं। उसके बाद उसी गाँव में ग्रामीण पाईप जलापूर्ति योजना के द्वारा घर–घर में पाईप लाइन से जल का कनेक्शन भी दिया गया है। इन सब बातों को खुद से देखने और अपने गाँव के खुले में शौच से मुक्ति की सत्यापन टीम में शामिल रहने का आग्रह करने के लिए रूपनी और काकी, जलसहिया दीदी के घर जाती हैं।

जलसहिया दीदी दूर से ही उन्हें आता देखकर 'प्रणाम काकी' कहकर उनका स्वागत करती है। बदले में काकी उन्हें 'खुश रहो' का आर्शीवाद देती हैं। रूपनी भी जलसहिया दीदी का अभिवादन करती है।

जलसहिया दीदी – आइये काकी, आओ रूपनी, यहाँ इस चटाई पर बैठते हैं। मैं जानती हूँ रूपनी, तुम मुझे अपने गाँव के खुले में शौच से मुक्ति का सत्यापन करने वाली टीम में शामिल रहने के बारे में बोलने के लिये आई हो न।

रूपनी – हाँ, आपको कैसे मालूम?

जलसहिया दीदी – पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के जिला समन्वयक से इस बारे में जानकारी मिली थी। अरे मैं तो उस टीम में शामिल रहूँगी ही। इस पर इतना कष्ट कर आने की क्या जरूरत थी?

रूपनी – यह तो बस एक बहाना है जलसहिया दीदी। असल में मैं और काकी आपके गाँव में स्वच्छता अभियान की सफलता को अपनी आँखों से देखने और कुछ सीखने के मकसद से आई हैं। तो हमने सोचा एक पंथ दो काज हो जाए। आज ये इतने कागज पत्तर फाइल और रजिस्टर लेकर आप बैठी हैं। लगता है ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के हिसाब किताब का काम कर रही हैं।

जलसहिया दीदी – हाँ, हमारे गाँव में ग्रामीण पाइप जलापूर्ति योजना से घर–घर में पानी के नल का कनेक्शन लग गया है न। हर महीने के अंत में गाँव वालों से पानी के मासिक टैक्स की वसूली भी हो रही है। इस महीने भी गाँव के सभी घरों से पानी के टैक्स की वसूली हो गई है। टैक्स के सभी रसीद सिलसिलेवार नंबर से फाइल में सजाकर रखी हुई थी। आज उन सभी को रोकड़ बही में लिखने के लिए बैठी हूँ। आप देख रही हैं न काकी। यह वही गाँव है जहाँ जलमीनार लगाने की जगह को लेकर लोग सहयोग करने को तैयार नहीं थे। आज उसी गाँव में लोग खुशी खुशी पानी का टैक्स समय पर चुका रहे हैं।

रूपनी – जलमीनार लगाने की जगह को लेकर भी कोई झगड़ा था क्या जलसहिया दीदी?

जलसहिया दीदी – अरे मत पूछो। जैसे हाथ की पाँचों ऊँगलियाँ बराबर नहीं होती, उसी तरह से आदमी भी किस्म – किस्म के होते हैं। सभी लोग मिलकर अगर एक लक्ष्य के बारे में सोचने लगे तो क्या दुनिया का कोई भी काम हमारे लिए असंभव है? ठीक है, हाथ की पाँचों उँगलियाँ बराबर नहीं होती, लेकिन वही पाँचों उँगलियाँ आपस में मिलकर जब मुट्ठी बन जाती है तो देखो कितनी ताकत आ जाती है।

रूपनी – बात क्या हुई थी जलसहिया दीदी? जरा खुलकर बताइये ना।

जलसहिया दीदी – बात कुछ नहीं थी, बस बचपना था। बच्चे अगर बचपना करे तो समझ में आता है पर बड़े अगर बचपना करे तो कौन समझाये और किस तरह समझाये। ग्राम सभा में यह बात तय हुई थी कि गाँव के

'अखरा' के पूरब की ओर की खाली जमीन पर जलमीनार बनाया जाय। लेकिन कुछ दिनों के बाद इसी बात को लेकर लोगों का एक गुट बन गया जिनका कहना था कि अखरा के सालाना त्योहारों के समय जो भीड़ अखरा में जुटती है, जलमीनार बनने से उसके आने जाने में परेशानी होगी। हालाँकि विभाग के इंजीनियर साहब ने उन्हें बताया था कि जलमीनार उतनी जगह नहीं घेरेगा जिससे आगे चलकर कोई परेशानी हो। परंतु उनके समझाने के बाद भी वे नहीं माने।

काकी – फिर इसका क्या हल निकला बेटी।

जलसहिया दीदी – बाद में ग्राम सभा में दोबारा विचार करने के बाद गाँव के दूसरे छोर की परती जमीन पर जलमीनार बनाने पर सभी राजी हुए। लेकिन समस्या का अंत इससे भी नहीं हुआ। अगर परती जमीन पर जलमीनार बना दिया जाता तो लोगों के घरों में नल लगाने के लिए जो पाईप लाइन बिछाया जाता, उसे बहुत सारे लोगों की रैयती जमीन खेत, बाड़ी से होकर गुजारना पड़ता। तब गाँव में ऐसे लोगों का गुट बन गया जो पाइप बिछाने में सहयोग करने के लिये तैयार नहीं थे। हालाँकि पाइप बिछाने के लिए ऐसे लोग अगर थोड़ा त्याग करने को तैयार होते तो उन्हें किसी प्रकार का कोई नुकसान नहीं होने वाला था। ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति एवं ग्राम सभा की बैठकों में उन्हें समझाने की कोशिश की गई पर कोई नतीजा नहीं निकला। इस तरह जलमीनार और पाइप बिछाने पर कोई निर्णय नहीं हो पाया।

रूपनी – तो फिर लोग कैसे माने जलसहिया दीदी?

जलसहिया दीदी – हाँ, अब सुनो। उधर जिले के बड़े इंजीनियर साहब (कार्यपालक अभियंता) जलमीनार बनाने एवं पाइप लाइन बिछाने की सारी योजना तैयार कर बैठे थे। हमने उन्हें इस बारे में जब बताया तो उनका जवाब बिलकुल सीधा था। और इसी जवाब ने लोगों की आँखें खोली। उन्होंने बताया कि विभाग की किसी भी योजना का असली मालिक तो पंचायत है। हम विभाग के लोग तो आपकी योजना पर सहयोग करने के लिये बैठे हैं। अगर आप मालिकाना जिम्मेदारी नहीं लेना चाहते हैं तो सरकार की तरफ से योजना वापस ले ली जायेगी। सोचना आप लोगों को है।

काकी – कितनी अच्छी बात कही बड़े इंजीनियर साहब ने। पंचायत अपनी योजनाओं का मालिक खुद है। ठीक ही तो बात है। ये गाँव के चापाकल और कुएँ, गाँव के स्कूल और

आँगनबाड़ी में लगे चापाकल और शौचालय, खराब चापाकल मरम्मत करने की जिम्मेवारी, गाँव के घर–घर में शौचालय बनाना, आखिर ये सब किसके लिए है। इससे किसकी जिंदगी में सुधार होगा? इन सबसे किसको फायदा मिलेगा? जैसे गाँव का बरगद का पेड़ सबको छाँव देता है उसी तरह सुविधा के ये सभी साधन भी तो गाँव के लोगों के अपने उपयोग के लिए हैं। तो इसके मालिक भी तो गाँव के लोग ही हुए न। पंच और पंचायत का मतलब ही हुआ गाँव के सभी लोगों के हक में लिया गया फैसला। तो गाँव के अंदर लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए अगर पंचायत सभी के हक में सुविधा चाहती हो तो चापाकल, कुएँ, जलमीनार, पाइप लाइन बिछाकर नल लगाना जैसी संपतियों का मालिक भी तो पंच और पंचायत को ही बनना पड़ेगा न।

रूपनी – तो इसके बाद क्या हुआ जलसहिया दीदी?

जलसहिया दीदी – होना क्या था। मैंने ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की मीटिंग में सबको बताया कि बड़े इंजीनियर साहब ने कहा है कि अगर आप लोग अपने ही गाँव की सुख सुविधा की चीजों का मालिक नहीं बनना चाहते तो इसका मतलब है कि गाँव वालों को योजना नहीं चाहिए। इस हालत में विभाग भी अपने कदम पीछे लौटाने को मजबूर हो जायेगा। तब जाकर गाँववालों की आँखें खुली। इसके बाद वही पुराना निर्णय बहाल हुआ। अखरा के पूरब में ही जलमीनार बना। वहाँ से होकर गाँव की मुख्य सड़क होते हुए पाइप लाइन बिछाने में किसी को कोई परेशानी भी नहीं हुई। सबके घरों में नल का कनेक्शन दिया गया। आज लोग नल का उपयोग भी करते हैं और महीने के महीने पानी का टैक्स भी देते हैं।

काकी – तो यह सब जो फाईल और बही खाता और रसीद रखे हुए हैं, ये उसी पानी के टैक्स का हिसाब किताब लिखे जाने के लिए हैं क्या?

जलसहिया दीदी – हाँ काकी। दूसरे हिसाब किताब के साथ पानी के टैक्स को रोकड़ बही में लिखना भी एक जरूरी काम है। रोकड़ बही ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति को मिलनेवाले पैसे और ग्राम जल एवं स्वच्छता

समिति से किए गए खर्च दोनों का लेखा जोखा होती है जिसके लिखने और सँभालने की जिम्मेवारी जलसहिया की होती है।

काकी – हाँ, मैंने देखा है रूपनी को हिसाब किताब लिखते। तब हमारे गाँव में अभी तक ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के खाते में चापाकल मरम्मति का और शौचालय बनाने के लिये लोन का पैसा आया है। अब जब हमारे गाँव को खुले में शौच से मुक्त करने का सत्यापन हो जायेगा तब शौचालय के लिए सरकार से मिलने वाली प्रोत्साहन राशि भी विभाग से ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के खाते में भेज दी जायेगी। उस समय रूपनी पर भी हिसाब–किताब लिखने का काम थोड़ा बढ़ जायेगा।

रूपनी – हाँ, उस समय तुम्हारी जरूरत पड़ेगी काकी। जानती हैं जलसहिया दीदी। काकी की याददाश्त बड़ी तेज है। ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के कामों का लेखा जोखा रखने में इनसे बड़ी सहायता मिलती है।

काकी – हाँ, पहले मैं समझती थी कि हिसाब किताब को लेखा बही में लिखना बहुत ही कठिन काम होगा। लेकिन अब तुम लोगों को लेखा बही का काम करते देखकर बहुत खुशी हो रही है कि गाँव की योजनाओं के मालिक होने के नाते हमने अपनी योजनाओं का हिसाब किताब भी खुद ही रखना सीख लिया है।

जलसहिया दीदी – सीख नहीं लिया काकी, सिखाया गया है। पहले तो हम भी रोकड़ बही लिखना नहीं जानती थी। वो तो पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के द्वारा हम जलसहियाओं के लिए रोकड़ बही लिखने का ट्रेनिंग कार्यक्रम आयोजित कर इस बारे में सिखाया गया और यह काम थोड़े ध्यान और धीरज का भी है, पर है बड़ा आसान। बस इसके लिए आदमी को थोड़ा लिखा पढ़ा होना चाहिए और थोड़ी सहज बुद्धि होनी चाहिए।

काकी – सहज बुद्धि? इसका क्या मतलब?

जलसहिया दीदी – अरे काकी, सहज बुद्धि तो सबके पास होती है। हिसाब किताब के मामले में तो गाँवों में जो लोग पढ़े लिखे नहीं है, उनके पास भी बड़ी सहज बुद्धि होती है।

रूपनी – हिसाब किताब के मामले में अनपढ़ गाँव वालों की भी सहज बुद्धि होती है, इसका मतलब क्या है जलसहिया दीदी?

जलसहिया दीदी – अरे देखो न, बड़ी सीधी सी बात है। गाँव में अगर कोई दूध बेचता है तो महीने के जितने दिन किसी को कितना दूध दिया इसका हिसाब दूध वाला प्रत्येक दिन जितने पाव दूध दिए गए उसका कुल जोड़ निकालकर उतने पाव दूध को सेर में बदल देता है। फिर सेर के हिसाब से उसका भाव निकाल लेता है। दूधवाला ऐसा हिसाब तो दर्जनों घरवालों का रखता है। वो भी बिना किसी रोकड़ बही के। हमलोग अपने खेत बाड़ी में जो सब्जी उगाते हैं उसे किसी महाजन को बेचने पर पसेरी के हिसाब से तौलकर उसे मन और क्विंटल में बदलकर उसका दाम बता देते हैं। इसके लिए गाँव के लोगों को किसी कागज कलम की जरूरत नहीं पड़ती ना। हिसाब किताब तो गाँववालों की सहज बुद्धि में समाया हुआ है।

काकी – हाँ, यह बात तो तुमने बिलकुल सही कही बेटी। लेकिन रोकड़ बही में लिखने का काम भी क्या इतना ही सहज है?

जलसहिया दीदी – हाँ बिलकुल। देखिए यह रोकड़ बही आपके सामने खोलकर रख दिया। अब बताइये सामने खोलने पर इसके कितने पन्ने दिखाई पड़ते हैं?

काकी – सीधी बात है। जैसे किसी भी बही–खाते का होता है उसी तरह दो पन्ने – एक बायाँ पन्ना और एक दायाँ पन्ना।

जलसहिया दीदी – बस, ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति का हिसाब भी इन्हीं बायें और दायें पन्ने में लिखा जाता है। बायें पन्ने में ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के खाते में किसी एक महीने में जो पैसा आता है उसे तारीख के हिसाब से सिलसिलेवार लिखते हैं। दायें पन्ने में ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के द्वारा जो खर्च किया गया उसे तारीख के हिसाब से सिलसिलेवार लिखा जाता है। बायें पन्ने को प्राप्ति भाग और दाहिने पन्ने को व्यय भाग या खर्च का भाग कहते हैं।

काकी – इसे जरा फिर से समझाओ बेटी।

जलसहिया दीदी – देखिए काकी, बिलकुल आसान चीज है। इसे इस तरह समझिए। किसी बही खाते के बायें पन्ने में किसी महीने में जो पैसा ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के खाते में आता है, उसे लिखते हैं। सबसे पहले बायें पन्ने में महीने की पहली तारीख को ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के बैंक खाते में जो पैसा बचा है और साथ ही जलसहिया के पास जो पैसा बचा है उसका जोड़ लिख देते हैं। इसे प्रारंभिक शेष कहा जाता है। प्रारंभिक शेष लिखने के बाद उक्त माह में विभाग से जो पैसा आता है, उसे लिखा जाता है। चूँकि विभाग का पैसा बैंक में चेक के माध्यम से आता है इसलिए प्राप्ति भाग में चेक संख्या और तारीख के साथ

कुल पैसा लिख दिया जाता है। हमारे गाँव में हर घर में पाइप लाइन से नल का कनेक्शन दिया गया है, जिसके लिए लोगों से हर महीने पानी का टैक्स लिया जाता है। इसके बदले उन्हें रसीद दी जाती है। हरेक रसीद पर तारीख के हिसाब से बढ़ते क्रम में एक संख्या लिखा जाता है जिसे प्रमाणक संख्या कहते हैं। इस प्रमाणक संख्या को भी रोकड़ बही में ग्रामवासी के नाम के साथ प्राप्त टैक्स की राशि के बगल में सिलसिलेवार लिखते जाते हैं। अब अगर प्रारंभिक शेष यानि महीने की शुरुआत में जो पैसा बचा था और महीने के अलग अलग दिनों के रसीद से प्राप्त पैसे को महीने के अंत में जोड़ दिया जाय तो यह होगा न उस महीने का कुल प्राप्त पैसा।

काकी – और क्या? सही है। पूरे महीने में प्राप्त पैसे का कुल जोड़ बायें पन्ने के बिलकुल अंत में।

जलसहिया दीदी – दायें पन्ने में भी इसी तरह होता है काकी। इस पन्ने में खर्च किए गए पैसों के रसीद का हिसाब तारीख के साथ सिलसिलेवार लिखते जाते हैं। हरेक रसीद को मुखिया और जलसहिया अपने–अपने दस्तखत कर उसे प्रमाणक बनाते हैं और उस पर एक प्रमाणक संख्या तारीख के हिसाब से बढ़ते क्रम में लिखते जाते हैं। रोकड़ बही में प्रमाणक संख्या को भी रसीद और खर्च किए गए रुपयों के साथ लिखा जाता है। महीने के अंत में दायें पन्ने में लिखे गए सभी खर्चों को आपस में जोड़ने पर उस महीने में कुल खर्च किए गए रूपयों का पता चल जाता है। खर्च करने के बाद महीने के अंत में बैंक खाते में जो पैसा बचता है और साथ ही जलसहिया के पास जो पैसा बचता है, उसके जोड़ को दाहिने भाग के अंत में लिखते हैं। इसे अंत: शेष कहा जाता है। काकी, यहाँ जरा ध्यान दीजिए। रोकड़ बही के बायें पन्ने के अंत में उस महीने में प्राप्त कुल रुपयों का जोड़ लिखा जाता है यानि कुल प्राप्ति। अब दाहिने पन्ने के बचे पैसों यानि अंत: शेष को उस महीने में खर्च किए गए कुल रुपयों के साथ जोड़ दिया जाय तो दाहिने पन्ने के अंत में जो जोड़ निकलता है वह उतना ही होगा जितना उस महीने ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति को कुल रुपये प्राप्त हुए हैं। यानि बायें पन्ने के अंत में कुल प्राप्ति का जोड़ बराबर होगा दायें पन्ने के अंत में कुल खर्च और हाथ में बचे पैसों के जोड़ का। यानि बायें पन्ने के अंत में और दायें पन्ने के अंत में समान संख्या दिखेगी। है न बिलकुल सीधी बात।

काकी – हाँ, समझ गई। मान लो किसी महीने में आरम्भिक शेष एवं माह में प्राप्ति की कुल राशि 100 रुपया है। उसमें से 40 रुपये खर्च हो गये। अब हाथ में बचे 60 रुपये को 40 रुपये से जोड़ दे तो हो गये 100 रुपये। इसे बस रोकड़ बही के दाहिने भाग में लिख कर भी दिखाना पड़ता है। इस तरह ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति को प्राप्त रुपयों का कुल जोड़ (बायाँ पन्ने के अंत में) और खर्च करने और उसके बाद बचे रुपयों को आपस में जोड़ने पर (दायें पन्ने के अंत में) बायाँ पन्ना और दायाँ पन्ना दोनों तरफ समान संख्या दिखेगी। हाँ बेटी, सचमुच यह काम धीरज वाला है लेकिन है बड़ा सीधा और आसान।

जलसहिया दीदी – हाँ और इसी को तो कहते हैं नियम कायदे से काम करना। हरेक महीने के अंत में अंत: शेष की राशि को मुखिया एवं जलसहिया मिलकर अपने दस्तखत से प्रमाणित करते हैं। यही अंत: शेष की राशि अगले महीने फिर से रोकड़बही के बायें पन्ने की शुरुआत में लिख दी जाती है और वह उस महीने का प्रारंभिक शेष कहलाता है। इस तरह रोकड़ बही का लिखना जारी रहता है। क्यों रूपनी, बोल न, चुप क्यों है?

रूपनी – हाँ, क्या बोलूँ जलसहिया दीदी। रोकड़ बही ट्रेनिंग कार्यक्रम में ट्रेनिंग देने आए लेखा पदाधिकारी ने जलसहिया को ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति का खजांची बताया था। लेकिन मैं तो सोचती हूँ कि हमारा सबसे बड़ा खजाना तो हमारा गाँव और गाँव के लोग हैं। महिला होने के

नाते अपने घरों के खर्च का हिसाब किताब संभालने की जिम्मेवारी हम लोगों की तो हमेशा से ही रही है। वही महिला जब जलसहिया हो जाती है तो उसके लिए तो पूरा गाँव ही उसका घर बन जाता है। अपने गाँव के लिए सुख–सुविधाओं के साधनों को बनते देखना और गाँव की गृहस्थी का हिसाब किताब रखने की खुशी बोलकर जाहिर नहीं की जा सकती। इस काम ने खुद हमारी जिंदगी को भी अनुशासन में ढाल दिया है। जरा प्रमाणकों के सही रख रखाव की ही बात लीजिए। जब रुपये मिलने के रसीद या रुपये खर्च करने के रसीद को दस्तखत कर प्रमाणक बना लिया जाता है तो उन्हें आय यानि रुपये मिलने का और व्यय माने रुपये खर्च करने के दो समूह में अलग अलग फाइल में तारीख और प्रमाणक संख्या के हिसाब से सिलसिलेवार सजा कर रख दिया जाता है। अब अगर कभी भी किसी आदमी को स्वच्छता समिति का हिसाब–किताब देखने की जरूरत हो तो वह हर महीने के हिसाब से रोकड़ बही के प्राप्ति भाग और खर्च के भाग के साथ इन प्रमाणकों का मिलान कर हिसाब किताब की जानकारी ले सकता है। इसी तरह बैंक के

पासबुक से भी स्वच्छता समिति को मिले रुपये और खर्च किए रुपये का मिलान हो जाता है। जलसहिया समय–समय पर बैंक जाकर बैंक के पासबुक को अपडेट कराती रहती है। (रुपनी पलभर को कुछ सोचती है, फिर बोलती है) इन तरीकों से काम करने से कितनी सुविधा हो जाती है, जरा देखिए। ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति से हरेक साल के अंत में पूरे साल का लेखा जोखा तैयार कर जलसहिया और मुखिया दोनों अपने दस्तखत कर जिले के बड़े इंजीनियर साहब को स्वच्छता समिति की ओर से भेजते हैं। इससे यह पता चलता है कि साल के अंत में जो रुपया स्वच्छता समिति के खाते में बचा है, उससे चालू योजनाओं को आगे बढ़ाने में और नयी योजनाओं को लागू करने में हम कहाँ तक बढ़ पाएँगे? फिर स्वच्छता समिति विभाग को अपने खाते से खर्च किए गए रुपयों का उपयोगिता प्रमाण पत्र भी भेजती है। कारण कि कुल मिले पैसों का कम से कम 60 प्रतिशत यानि 60 वाँ भाग खर्च करने पर ही किसी योजना की अगली किस्त का पैसा विभाग से ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के खाते में भेजा जाता है। उसके बाद सबसे बड़ा फायदा इस बात का मिलता है कि जलसहिया अपने पास जो बैंक का खाता, चेक बुक, रोकड़ बही और रोकड़बही के हिसाब किताब में लिखे आय और व्यय के प्रमाण के रूप में जिन प्रमाणकों को सँभालकर रखती है, उससे ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति का लेखा परीक्षा करने में बड़ी सुविधा हो जाती है। विभाग की ओर से हर साल ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति का लेखा परीक्षा कर सभी हिसाब किताब का मिलान भी कर लिया जाता है। तो काकी, ये रहा हमारे ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति के हिसाब किताब लिखने और जाँचने का तरीका। है न बड़े कायदे वाला काम।

काकी – जानती हो रुपनी। पिछले कुछ दिनों से अपने गाँव के लोगों द्वारा आपस में मिलजुलकर काम करते देखते हुए कभी कभी विश्वास नहीं होता है कि हम वही लोग हैं जो कभी खुले में शौच को जाते थे और जाने अनजाने बीमारियों से परेशान रहते थे और आज उसी गाँव के लोग न सिर्फ साफ–सफाई को लेकर जागरूक हो गये हैं बल्कि इस गाँव में देखो, लोगों के घर–घर में पाइप से शुद्ध जल पहुँच रहा है। अचानक इतने बड़े बदलाव को एक साथ देखकर लगता है, कोई चमत्कार हो रहा है। कभी–कभी डर भी लगता है कि कहीं ये चमत्कार खत्म हो गया तो हम फिर से कहीं पुरानी हालत में न पहुँच जाय। पर आज तुम दोनों की बातें सुनकर समझ में आ गया कि असल में जादू टोना चमत्कार तो बेकार की बातें है। असली चीज है

कि हमने अपने जीवन में कायदे कानून को जगह दे दी है। इसी से आज बड़ी बड़ी चीजें करना भी आसान लग रहा है। साथ ही स्वच्छता समिति की मीटिंग में लोग कायदे से भाग ले रहे हैं, अपनी बातें रख रहे हैं और मिलजुलकर गाँव को खुशहाली की ओर ले जा रहे हैं। भगवान करे कि यह कायदा कानून हमारे संस्कार में हमेशा बना रहे।

जलसहिया दीदी – हाँ काकी, जीत तो कायदे कानून की ही होगी।

रुपनी – हाँ, जलसहिया दीदी, जीत कायदे कानून की ही होगी।

काकी – हाँ, जीत तो कायदे कानून की ही होगी। पर एक और चीज तुम दोनों ने नहीं कही।

जलसहिया दीदी और रुपनी (एक साथ) – क्या काकी ?

काकी (हँसकर) – जीत जलसहिया की भी होगी। (काकी की इस बात पर रुपनी और जलसहिया के चेहरे पर मुस्कान खिल उठती है)

आओ गाँव के विकास का नक्शा बनायें

सहभागी सीख क्रिया एक सामाजिक वैज्ञानिक विधि है जिसके अंतर्गत गाँव के लोगों की सहभागिता से उनकी समस्याओं की जानकारी ली जाती है तथा गाँव के लोगों की राय लेकर उनकी जरूरतों के हिसाब से योजनाएँ बनाई जाती हैं। रुपनी जलसहिया के गाँव में सहभागी सीख क्रिया से कैसे गाँव की समस्याएँ हल की गई, आइये जानते हैं।

संदर्भ

(i) Training module on community water security plan published by WASH Institute.

आओ गाँव के विकास का नक्शा बनायें

रुपनी जलसहिया और काकी हमेशा की तरह दोपहर बाद रूपनी के घर के पिछवाड़े आम के बगीचे में चटाई बिछाकर बैठी हैं। दूसरे दिनों की तरह रुपनी के पास कुछ बही खाते और कागज है। रुपनी एक खाते में कुछ लिखा हुआ देख रही है। काकी के सामने एक बड़े चार्ट पेपर पर आड़ी तिरछी रेखाओं और छोटे–छोटे गोल चौकोर खानों से भरा हुआ एक नक्शा है जिसे वे गौर से देख रही हैं। नक्शा देखते –देखते अचानक काकी रुपनी से बोल पड़ती हैं –

काकी – जानती हो रुपनी, सच में इस नक्शे को देखकर अपना बचपना याद आ गया। जमीन पर चौकोर घरों का नक्शा बनाकर घर–घर खेलना तो लड़कियों का पसंदीदा खेल है, पर कभी यह नहीं सोचा था कि जमीन पर गाँव का नक्शा बनाकर पूरे गाँव वालों के साथ उस नक्शे से खेलने में भी उतना ही आनंद आयेगा जितना कि बचपने में घर–घर खेलने में आता था।

रुपनी – हाँ काकी। कल गाँव के अखड़ा में बी.डी.ओ. साहब की उपस्थिति में गाँव का नक्शा बनाकर गाँव वालों के साथ मैंने भी अपने बचपने वाले खुशी महसूस की। यह जो तुम कागज पर नक्शा देख रही हो न, यह उसी जमीन वाले नक्शे की नकल है। मैंने इसे कल ही जमीन वाले नक्शे के साथ मिलान कर बना लिया था जिससे कि हम भविष्य में भी इससे अपने गाँव के विकास कार्यों में मदद ले सकें।

काकी – पर बेटी, एक बात तो बताओ। ये बी.डी.ओ. साहब को क्या सूझी कि वे रंग बिरंगे पाउडर लेकर हम गाँव वालों के साथ हमारे गाँव का नक्शा बनाने आ गये। नक्शा बनाने के बाद बी.डी.ओ. साहब ने गाँव के विकास के लिए क्या–क्या होना चाहिए, इस पर कितनी सुंदर योजना बनाकर गाँव वालों के सामने रखी। ऐसा तो अपने जीवन में मैंने पहले कभी नहीं देखा कि कोई सरकारी बाबू हमारे गाँव आकर हमारे ही साथ जमीन पर चटाई बिछाकर बैठे और खेल खेल में गाँव वालों की भलाई की भी बात बता जाए।

नक्शा बनाने के बाद बी.डी.ओ. साहब ने गाँव के विकास के लिए क्या–क्या होना चाहिए, इस पर कितनी सुंदर योजना बनाकर गाँव वालों के सामने रखी। ऐसा तो अपने जीवन में मैंने पहले कभी नहीं देखा।

रुपनी – ये नए जमाने के बाबू हैं काकी और गाँव के विकास का नक्शा खींचने का यह तरीका भी नये जमाने वाला है। पुराने दिनों की बात पुराने जमाने के साथ बीत गई। पहले बाबू का मतलब ही होता था सरकारी दफ्तर में कुर्सी की शोभा बढ़ाने वाला आदमी। दफ्तर में बैठे–बैठे ही गाँव की जरूरतों का फैसला कर लिया जाता था और योजना भी बना ली जाती थी। गाँव के लोगों से उनकी जरूरतों के बारे में पूछने की कोई सोचता भी नहीं था। इस बात की दूर–दूर तक कोई जरूरत भी बाबू लोगों को महसूस नहीं होती थी।

काकी – अच्छा, अगर ऐसा है कि गाँव के विकास की योजना बनाने के लिए गाँव वालों से पहले पूछा जायेगा तब तो सचमुच यह नया जमाना है और गाँव में आकर चटाई पर बैठने वाले ये नए जमाने के बाबू हैं।

रुपनी – हाँ, यही तो कल गाँव के अखड़ा में भी हुआ न काकी। रंगीन पाउडरों से गाँव का नक्शा बनाने के समय हमने यह सोचा भी नहीं था कि उसका अंत इतना अच्छा और गाँव समाज की भलाई के लिए सीख देने वाला होगा। कल का अनुभव एक नई चीज थी। जरा याद करो तो, गाँव के नक्शे को बनाने के लिए गाँव का एक–एक आदमी जैसे जबरदस्ती शामिल होना चाहता था। इतना उत्साह तो शायद ही कभी देखने में आता है।

काकी – और बी.डी.ओ. साहब क्या कह रहे थे कि वे गाँव वालों से कुछ सीखने समझने आए हैं? अरे, इतना पढ़ा लिखा आदमी गाँव वालों से सीखने समझने जैसी विनम्रता वाली बात करे तो देश समाज की तरक्की को अब कौन रोक सकता है भला। गाँव वालों से सीखने की बात को लेकर वो बार–बार क्या बोल रहे थे रुपनी।

रुपनी – सहभागी सीख क्रिया।

काकी – सहभागी सीख। हाँ कितना अच्छा नाम है। गाँव वालों के साथ–साथ भाग लेकर गाँव वालों की भलाई के लिए उनकी ही जरूरतों के बारे में सीखना। ठीक कहा न रुपनी मैंने।

रुपनी – हाँ काकी। यह नए जमाने की बात है। पहले जब गाँव के विकास की बात आती थी तो ऊपर से नीचे विकास की योजनाएँ चलती थी। 'ऊपर' माने सरकारी दफ्तर में ही सब तय हो जाता था कि गाँव के विकास के लिए कौन से कार्यक्रम चलाए जायेंगे। अलग–अलग कार्यक्रमों पर कितना खर्च किया जायेगा।

ये ऊपर–ऊपर सरकारी दफ्तर में ही योजना बना लेने की बात गाँव के बी.डी.ओ. साहब के दफ्तर की नहीं थी, जिले के बड़े साहबों के दफ्तर की भी नहीं थी और न ही राज्य के दफ्तर की थी। ये दफ्तर तो दिल्ली का मंत्रालय था। देश के मंत्री के दफ्तर से विकास की योजना का अंतिम नक्शा खींच दिया जाता था और योजना को राज्य में भेजकर गाँव के विकास के लिए काम करने की बात की जाती थी। यह पुराना तरीका था। देख रही हो न काकी, इस पुराने तरीके में गाँव वाले तो योजना बनाने में कहीं थे ही नहीं न।

काकी – हाँ, ठीक कहती हो रुपनी। सरकार की कई योजनाओं को आते और जाते मैंने देखा है। योजनाएँ जैसे आईं, वैसे ही चली गई। फायदा तो कुछ न कुछ हर चीज में होता है, लेकिन कभी कोई ऐसा फायदा नजर नहीं आया जो वर्षों तक हमारे जीवन में सुविधा ला सके।

रुपनी – सुविधा आती भी तो कैसे? अरे भई, गाँव के लोगों की क्या जरूरत है, उनकी क्या समस्याएँ हैं, दूसरी जगह के मुकाबले समस्याओं को हल करने के लिए किसी खास गाँव में क्या क्या प्रयास और करने की जरूरत है, इसके बारे में गाँव वालों से पूछने की कभी किसी ने जरूरत ही नहीं समझी। तो इस तरह ऊपर से थोपी गई सुविधा कितनी टिकाऊ रहती भला।

काकी – अच्छा, तो नये जमाने की यह बात तो बड़ी अच्छी और तारीफ करने लायक है। अब योजना 'ऊपर से नीचे' नहीं आयेगी बल्कि 'नीचे से ऊपर' की ओर जायेगी। मतलब गाँव के लोग अपनी जरूरतों, समस्याओं और उनके हल के बारे में बतायेंगे और उनका वैसा ही समाधान ऊपर के अधिकारी निकालेंगे।

रुपनी – यही तो कल अखड़ा में गाँव का नक्शा बनाने में भी हुआ न काकी। शुरू में गाँव का नक्शा बनाने की बात तो हम सभी को बचपने जैसी ही लग रही थी, पर मात्र एक नक्शे से गाँव के विकास के लिए जितनी बातें निकलकर आई, उससे आज यह हालत है कि गाँव का कोई भी आदमी गाँव की बहुत सारी दूसरी समस्याओं के बारे में नक्शा बनाने को लेकर तुरंत तैयार हो जायेगा।

काकी – कल तुमने बी.डी.ओ. साहब के साथ अपने खाते बही में भी बहुत सारी बातें लिखी है न। जरा पढ़कर सुनाओ तो क्या बातें लिखी है तुमने।

रुपनी – ये वही बातें है जो बी.डी.ओ. साहब ने हम लोगों से बातें करके हमारी समस्याओं को जानकर और हमारे तरीके से ही उसका हल निकालने के लिए योजना बनाने के बारे में अपनी डायरी में लिखी थी। जरा याद करो काकी, कल नक्शा बनाने के समय कौन सी बात किस तरह निकली थी।

काकी – पहले तो गाँव का एक बाहरी सीमाना खींचा गया था। उसके बाद उस सीमाने के भीतर गाँव के लोगों के मकान, खेत, पानी के साधन जैसे तालाब, चापाकल, चेक डैम, नाली, स्कूल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, मंदिर, सरना स्थल, शमशान घाट सभी को चौकोर–गोल खानों में दिखाया गया। यह बड़ी मजेदार बात थी। इसकी शुरुआत तो बी.डी.ओ. साहब और उनके साथ आए लोगों ने की, पर नक्शा बनाना एक बार शुरू करने के बाद गाँव वालों में नक्शा बनाने को लेकर इतना उत्साह आ गया कि बी.डी.ओ. साहब तो खुद एक किनारे बैठे रहकर लोगों से नक्शे के बारे में पूछते–बतियाते रहे और गाँव के लोग रंगीन पाउडरों से बी.डी.ओ. साहब के पूछने के अनुसार अलग–अलग जगहों का चौकोर गोल खाना और सीधी तिरछी लाइनें खीचते रहे।

रुपनी (अपना बही खाता खोलकर) – इस नक्शे बनाने जैसी मजेदार चीज से देखो तो कितनी बातें निकलकर आई हैं काकी। गाँव में कच्ची पक्की सड़क कहाँ–कहाँ हैं? सिंचाई के लायक कुएँ कितने किसानों के पास है? गाँव में कितने तालाब हैं? गाँव के पुराने चेक डैम की क्या हालत है? कहाँ–कहाँ पक्की नाली है और कहाँ पर नई नाली बनाने की जरूरत है? गाँव में बिजली पहुँचाने की योजना पर कितना काम हुआ है? कहाँ–कहाँ पर बिजली के पोल लगने चाहिए। गाँव के आँगनबाड़ी केन्द्र के भवन को मरम्मत की जरूरत है। इस तरह की और भी बहुत सारी बातें इस गाँव के नक्शे से निकलकर आई हैं काकी।

काकी –हाँ, वो तो मैं भी देख और सुन रही थी रुपनी। ये नक्शा बनाकर गाँव के विकास की योजना बनाने का काम तो बहुत ही फायदे का उपाय है। देखो न, कितने कम समय में हमने अपने गाँव की कितनी सारी बातें बी.डी.ओ. साहब को बता दी।

पुरानी योजनाएँ लंबे समय तक इसलिए नहीं चल पाती थी क्योंकि उसमें ग्रामीणों की जरूरतों के बारे में तो उससे पूछा ही नहीं जाता था।

रुपनी – और ये बातें भी आसमानी बातें नहीं है काकी। इससे जो विकास की योजना बनेगी वो पुराने जमाने वाली 'ऊपर से नीचे' वाले तरीके जैसी नहीं होगी। पुरानी योजनाएँ लंबे समय तक इसलिए नहीं चल पाती थी क्योंकि उसमें जिस आम गाँव वाले की भलाई के लिए बात की जाती थी, उस आदमी की

जरूरतों के बारे में तो उससे पूछा ही नहीं जाता था। नतीजा समय और पैसों की बर्बादी और अंत में वही ढाक के तीन पात।

काकी – और कल जो बात हुई वो तो ठीक इसके उलट थी न रुपनी। जब गाँव का नक्शा बना तो पता चला कि सच में कितनी चीजों की जरूरत है। साथ ही जो चीजें और सुविधायें पहले से गाँव में है, उनमें और आगे भी सुधार करना जरूरी है।

रुपनी – एक बड़ा अनमोल फायदा हुआ सो अलग काकी।

काकी – वो क्या?

रुपनी – तुमने देखा न। जब गाँव के सारे लोग मिलकर एक जगह बैठते हैं तो उनमें आपस में कितना अपनापन उमड़ आता है। लगता है मानो पूरा गाँव ही एक परिवार है। नहीं तो गाँव के अधिकांश लोगों की एक दूसरे के साथ चवन्नी भर बिगाड़ चलती ही रहती है। कभी कोई आदमी नयी बात ले कर अगर आगे निकलने की भी कोशिश करता है तो एक नहीं चार ऐसे लोग निकल आते हैं जो ठीक इसके उलट बात करे।

काकी – ठीक कहा रुपनी। बूढ़े पुराने लोग ठीक ही कहते थे कि पंच में परमेश्वर वास करता है। नक्शा बनाने के बहाने कल जो पंचायत जुटी, उस भीड़ में सब पंच का ही तो रोल निभा रहे थे। बी.डी.ओ. साहब पूछते गए और लोग बताते गए कि किसके घर से कहाँ तक नये सड़क की जरूरत है। किन–किन लोगों के पास सिंचाई के कुओं की कमी है। इस तरह से गाँव का कोई भी आदमी तो नहीं छूटा। धन्य है ऐसा नक्शा बनाना जो सचमुच में गाँव का नक्शा बदल देने की ताकत रखता है और नक्शा अगर लोगों की नीयत को भी बदले और लोग नि:स्वार्थ भाव से एक दूसरे की भलाई की सोचे तो इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है।

रुपनी – हाँ काकी। वही सारी बातें बी.डी.ओ. साहब के साथ मैंने भी अपनी डायरी में लिख ली है।

काकी – जरा पढ़कर बताओ तो, अब आगे क्या–क्या काम गाँव में होने वाले हैं?

रुपनी – बहुत सारे जरूरी काम होने को हैं काकी, जरा सुनो। गाँव में बन्धन के घर से छोटन के घर तक सड़क बनाने की योजना है। बन्धन के घर से छोटन के घर तक

वर्तमान में सिर्फ पगडंडी है। पहले कोई काम नहीं हुआ है। इसलिए बी.डी.ओ. साहब यहाँ पी.सी.सी. सड़क बनाने का प्रस्ताव रखने वाले हैं। ठीक इसी तरह गाँव के चारों छोरों पर पड़ने वाले अनेकों लोगों के मकान तक सिर्फ पगडंडी है जहाँ से निकलकर उन्हें गाँव की मुख्य सड़क तक आना पड़ता है। कल गाँव के नक्शे से ऐसे कम से कम 10 पगडंडियों का पता चला जहाँ गाँव वालों के अनुरोध पर बी.डी.ओ. साहब पी.सी.सी. सड़क बनाने के प्रस्ताव पर राजी हुए। एक और पुरानी सड़क की मरम्मत पर गाँव वालों का जोर रहा। याद करो काकी, पुराने कार्यक्रम ''काम के बदले अनाज'' से गाँव के मुख्य सड़क को जोड़ती गाँव के बाहर वाली सड़क बनी थी। अब उस सड़क की फिर से मरम्मति की जायेगी और उस पर कालीकृत रोड बनाने का प्रस्ताव दिया जायेगा।

काकी – यह तो रहा गाँव के सड़क के विकास का नक्शा। अब जरा और आगे बताओ रुपनी।

रुपनी – कल नक्शे से पता चला कि पूरे गाँव में 20 ऐसे कुएँ हैं जिनसे सिंचाई का काम लिया जाता है। ऐसे 10 और लोगों की पहचान की गई जिन्हें सही मायनों में ऐसे सिंचाई के कुओं की सख्त दरकार है और उनके लिए कुएँ बनाने का प्रस्ताव दिया गया। एक और बात हुई। गाँव के पूरब टोला में रहने वाले फागु किसान का सिंचाई कुआँ मनरेगा की वार्षिक कार्ययोजना में नहीं लिया गया था, लेकिन उसके लिए ग्राम सभा की बैठक में कुआँ बनाने पर रजामंदी हुई थी। बी.डी.ओ. साहब ने इस पर भी प्रस्ताव देने की हामी भरी है।

काकी – फिर गाँव के तालाबों की भी बात आई। यह बात भी देखने में आई कि सरकारी कागजों में कोई बात छूटी हुई नहीं रहती है जैसे कि गाँव के पूरब टोले के तालाब की खुदाई को पाँच साल से ज्यादा हो गए हैं। अब इस साल के मनरेगा की योजना में इस तालाब की खुदाई–मरम्मत का काम फिर से कराया जा सकता है। लेकिन वहीं दूसरी तरफ गाँव के खजूरिया तालाब में पहाड़ की तरफ से बरसाती पानी के साथ बहकर आने वाले मिट्टी के भरने से उसकी मरम्मति–खुदाई की जरूरत थी। लेकिन मात्र दो साल पहले मनरेगा से उस पर काम किया गया था इसलिए नियम के अनुसार पाँच साल पूरा नहीं होने के कारण उसकी फिर से मरम्मति–खुदाई का प्रस्ताव नहीं दिया जा सका। इस पर गाँव वालों की यह आम राय बनी

कि इस गर्मी के मौसम में सब लोग मिलकर इसकी खुदाई–मरम्मति के काम में हाथ बँटायेंगे और इसके लिए कोई मेहनताना नहीं लिया जायेगा। उसके बाद बी.डी.ओ. साहब ने दो और नये तालाब का भी तो प्रस्ताव दिया है।

रुपनी – हाँ काकी। पानी की सुविधा के लिए तो गाँव वाले और बी.डी.ओ. साहब दोनों ने बहुत रूचि दिखाई जैसे कि गाँव के बाहर के डैम की ही बात ले लो। इस साल के मनरेगा योजना में इस डैम की मरम्मति का प्रस्ताव है। लेकिन इसके साथ एक नये पानी के स्रोत के भी उपयोग की बात सामने आई। गाँव वालों ने नक्शे के माध्यम से बी.डी.ओ. साहब को बताया कि गाँव के सीमाने से सटे जंगल से जो पहाड़ी सोता बहता है और उसके कारण वहाँ जंगल के गड्ढे में जो सालों भर पानी रहता है, वहाँ तो आसानी से इंटेक वेल का निर्माण कराया जा सकता है।

काकी – हाँ, पानी है तो जीवन है। बिन पानी जग सुना। यहाँ तक तो नक्शे से गाँव वालों ने अपनी बहुत सारी समस्याओं का हल खुद से निकाला। लेकिन उसके बाद भी बहुत सारी बातें बची हुई थी जो गाँव वालों ने बी.डी.ओ. साहब के साथ गाँव के चारों कोनों में घूम–घूमकर देखी और उस पर योजना बनाने की बात रखी। सच में ऐसा नजारा भी देखने लायक था। गाँव की समस्याओं को समझने में गाँव वालों की एकता और उत्साह बनाने और बढ़ाने का इससे ज्यादा अच्छा उपाय और क्या हो सकता है भला?

रुपनी – और यह उपाय भी तो नये जमाने वाला ही उपाय है काकी। वही सहभागी क्रिया जो मैं तुम्हे बता रही थी।

काकी – वही न। 'नीचे से ऊपर' की ओर विकास योजना बनाने वाली बात। मतलब गाँव के लोग योजना बनाएँ और सरकार लागू करे।

रुपनी – हाँ–हाँ वही। गाँव घर घूमकर देखना और समझना भी सहभागी क्रिया है और इसका फायदा कल ही मिल गया। हमारा गाँव पहाड़ के तट पर बसा होने के कारण बहुत सारे किसानों की जमीन उबड़ खाबड़ है। उसका समतलीकरण होने से वैसी जमीन पर खेती का काम किया जा सकता है। ऐसी बहुत सी जमीन पर समतलीकरण के काम को मनरेगा में शामिल नहीं किया गया है जबकि ग्राम सभा में इसके लिए सिफारिश की गई है। बी.डी.ओ. साहब को गाँव वालों ने इस पर प्रस्ताव देने का अनुरोध किया जिसे उन्होंने खुशी–खुशी मान लिया।

काकी – मिट्टी के कटाव रोकने की भी बात बी.डी.ओ. साहब ने मानी न रुपनी।

रुपनी –हाँ गार्डवाल बनाने की बात। चूँकि हमारा गाँव पहाड़ के तट पर बसा है जिससे बरसात के दिनों में पहाड़ी पानी की धारा बहुत तेज गति से गाँव में बहती है। तब मिट्टी का कटाव होने से घरों के धँसने तक का खतरा बना रहता है। बी.डी.ओ. साहब ने इसके लिए गाँव के दो छोरों तक लगभग 150 फीट गार्डवाल बनाने की आवश्यकता बताई और प्रस्ताव देने की बात कही। ऐसे ही गार्डवाल गाँव के और चार तालाबों में भी बनाने की जरूरत महसूस हुई।

काकी – एक विचार तो पहाड़ के किनारे जाकर ही सूझा न रूपनी। बी.डी.ओ. साहब ने कहा कि गाँव के बाहरी छोर से पहाड़ के मुकाबले आड़े रखते हुए अगर एक पक्की नाली बना दी जाये तो पहाड़ से बहकर आने वाला पानी इस नाली से होकर खेतों तक आसानी से पहुँचाया जा सकता है।

रुपनी – घुम–घुमकर देखने का प्रयास सही मायनों में बहुत फायदे का रहा काकी। इससे कई बातें लोगों के दिमाग और सरकारी कागज में आ गई। लोगों को अब ध्यान आया कि इन चीजों पर जो अब तक ध्यान नहीं दिया जाता था बस इसी कारण से ही ये काम लटके हुए थे वरना सरकार की तरफ से तो काम करने के लिए कभी साधन की कमी नहीं रही। अब गाँव के सार्वजनिक भवन की ही बात लो। सार्वजनिक भवन के बिना भी कोई गाँव पूरा होता है भला। अरे वो तो भला हो कि अपने गाँव में अखड़ा है जहाँ मौके–मौके पर लोगों का जुटान हो जाता है। कल सामुदायिक भवन बनाने की बात उठने पर लोगों का जोश देखते ही बनता था। फिर छोटी–छोटी लेकिन बहुत ही महत्वपूर्ण बातें भी सामने आई जैसे गाँव के प्राथमिक विद्यालय के चारों ओर चहारदीवारी बनाना, सरना स्थल की घेराबंदी, श्मशान घाट की घेराबंदी वगैरह।

काकी – मेरी एक बात मानोगी रुपनी।

रुपनी – क्या काकी ?

काकी – तुम तो जलसहिया हो। इस कारण तुम्हें कई गाँवों में सरकार के कार्यक्रम में जाने का मौका मिलता है। पंचायत के बैठकों में भी तुम जाती हो जहाँ बहुत सारे गाँवों के लोग एक जगह जुटते हैं। तुम जहाँ–जहाँ भी जाओ, लोगों को सरकारी अधिकारियों के साथ गाँव के नक्शे और गाँव देहात घूमकर अपनी समस्याओं पर विचार करने और उनके हल निकालने जैसे आसान तरीके के बारे में बताना मत भूलना। नया जमाना

सिर्फ अपने गाँव में आए, ऐसी बात न हो, नया जमाना तो पूरे पंचायत, प्रखंड और हमारे पूरे राज्य में आए ऐसी कामना हम सभी को मिलकर करनी चाहिए।

रुपनी – हाँ काकी, ऐसा ही होगा।

काकी – अच्छा ये तो बता, पीने के पानी को लेकर कल कोई बात नहीं हुई क्या?

रुपनी – हुई तो थी? क्या तुम्हें याद नहीं। दो और चापाकल लगाने की बात हुई।

काकी – शायद मैं उस समय वहाँ नहीं रही हूँगी। अच्छा बता तो क्या बात हुई थी?

रुपनी – बड़ी मजेदार बात हुई? गाँव के नक्शे से पता चला कि गाँव के एक टोले में एक ही जगह थोड़ी–थोड़ी दूरी पर चार चापाकल लगे हैं जबकि पूरे गाँव में इन चार चापाकलों के अलावा मात्र दो ही चापाकल है। तब पता चला कि गाँव के एक पुराने नेताजी अपने प्रभाव का इस्तेमाल कर नये चापाकल लगवाने के समय गाँव देहात की छोड़ अपने टोले का उपकार करते आए थे। एक टोले में चार चापाकल उनकी ही देन है।

काकी – हाँ, एकदम सही कहा। ऐसे नेताओं से भगवान बचाए। नक्शे में यह बात पकड़ में आई न रुपनी।

रुपनी – हाँ और भीड़ में उपस्थित कई लोगों ने जब नेताजी की खिंचाई की तो नेताजी को कोई जवाब भी नहीं सूझा। हालाँकि बी.डी.ओ. साहब ने लोगों को इस बात की मनाही की लेकिन हुआ यह भी कि नेताजी मौका देखकर खुद ही खिसक गए।

काकी – ज्ञान से ही आँखें खुलती है। नये जमाने के साथ आँखें खुलनी भी चाहिए। सहभागी सीख जैसे उपाय कर नक्शा बनाना, आपस में एकता की भावना रखकर गाँव की भलाई के लिए एकजुट होकर सोचना, ये सब नए जमाने की बातें है। ज्ञान में ही शक्ति है, एकता में ही भलाई है। जरूरत है कि नये तरीके और नये प्रयास सभी गाँवों में हो तभी तो हमारा समाज, हमारा देश और हम सभी खुशहाल बनेंगे।

रुपनी – तो काकी इस पर एक बात फिर से करें।

काकी – क्या?

रुपनी – ऐसे ही नक्शे बनाकर क्यों न अपनी खेती–किसानी की समस्या पर भी बात करें। बी.डी.ओ. साहब ब्लॉक के कृषि पदाधिकारी को बुलाने की बात कर रहे थे।

काकी – इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है? नेकी और पूछ–पूछ।

रुपनी – न काकी। अब तो दूसरी बात हो गई है और वो भी नये जमाने वाली।

काकी – क्या?

रुपनी – **नेकी करो पूछ–पूछकर** (कहकर रुपनी खिलखिला उठती है। उसके इस बचपने पर काकी भी हँसने लगती है)।

अपना शौचालय क्यों नहीं?

शौचालय न होने से कष्ट सभी को होता है चाहे वो पुरुष हो, बच्चे हों या वृद्ध। पर महिलाओं को होने वाली शर्मिंदगी और खतरों की संभावना इस तस्वीर का भयानक पहलू है क्योंकि महिलाएँ लोक लिहाज के कारण सुबह मुँह अँधेरे और रात में ही शौच के लिए बाहर निकलने को मजबूर हैं। इस मजबूरी को रूपनी के ही शब्दों में सुने तो इसका दर्द महसूस हो। **रुपनी कहती है – जरा इस तकलीफ को कोई दिल से महसूस करे तो समझे। अपने शरीर को आराम देने के लिए गाँव की औरतें शौच जैसे जरूरी काम के लिए भी अँधेरे की मोहताज बन जाती हैं। बिरसी कहती है – सूरज के उगने के साथ सैकड़ों गाँवों की लाखों महिलाओं को अपने घरों मे कैद हो जाना पड़ता है और वे इंतजार करती हैं कि कब अँधेरा हो और उन्हें मुक्ति मिले।**

संदर्भ

निर्मल भारत अभियान मार्गदर्शिका कंडिका 5(घ) एवं 5(च)

अपना शौचालय क्यों नहीं ?

रुपनी जलसहिया के पड़ोस का गाँव रुपनी के गाँव के सीमाने के कुछ खेतों के बाद ही शुरू हो जाता है। दोनों गाँव आपस में ऐसे सटे हैं जैसे कि एक ही गाँव हो। नजदीकी होने के कारण लोगों का एक दूसरे के गाँवों में आना जाना भी ज्यादा है। दोनों गाँव के सभी लोग एक दूसरे के साथ थोड़ा परिचित भी हैं। रुपनी के गाँव में जहाँ लोग शौचालय बनाकर उपयोग में लाने लगे थे वहीं पड़ोस के गाँव में स्वच्छता अभियान ने जोर नहीं पकड़ा था और लोग अभी भी खुले में शौच को जा रहे थे। आज इसी पड़ोस के गाँव में एक दु:खद घटना घट गई।

रात के अंतिम पहर में मुर्गे के बांग देने के बाद अंधेरे में लोग शौच निवृति को निकल पड़ते हैं। लेकिन आज का दिन गाँव वालों के लिए दुर्भाग्य लेकर आया। हुआ यह कि गाँव की कई महिलाएँ एक साथ मुँह अँधेरे गाँव के दूसरे छोर के खेतों के किनारे शौच को गई थी। खेतों के ठीक बाद जंगल की सीमा शुरू होती है जिसमें से हाथियों के एक झुंड ने अचानक इन महिलाओं पर धावा बोल दिया। हाथियों के चपेट में आने से दो महिलाओं की घटना स्थल पर ही मौत हो गई। इस घटना से चारों ओर कोहराम मच गया। रुपनी के गाँव वाले और रुपनी भी घटना स्थल पर गई थी। इस दु:खद घटना ने सभी का दिल तोड़ दिया। दोनों गाँवों में लोगों के घरों में चूल्हे तक नहीं जले। उसके अगले रोज दिन के दूसरे पहर रुपनी के गाँव में सन्नाटा पसरा था। रुपनी, काकी और बिरसी, रुपनी के घर के पिछवाड़े आम के पेड़ के नीचे दु:खी और गुमसुम बैठे थे। बिरसी पड़ोस के गाँव की जलसहिया है जहाँ हाथी वाली घटना घटित हुई थी। सभी काफी देर तक चुपचाप बैठे रहे। चुप्पी को काकी के स्वर ने तोड़ा।

काकी – सब समय–समय की बात है। आदमी का समय एक सा नहीं रहता है। लेकिन कई मायनों में खराब समय के लिए आदमी खुद भी जिम्मेदार होता है। आज की ही घटना देखो न। कौन जानता था कि हमारे गाँव देहात में हमें ऐसा भी समय देखना पड़ेगा जब बिना आहट के मौत हमारे सामने खड़ी होगी।

बिरसी – हाँ, काकी, जीना मरना तो ऊपर वाले के हाथ में है। कोई नहीं बता सकता कि पलभर में क्या होने वाला है। हम सब तो ऊपर वाले के हाथ की कठपुतली हैं।

रुपनी – न बिरसी, अपनी कमजोरियों को छिपाने के लिए भगवान को बीच में मत लाओ। यहीं पर हम सभी गलती करते हैं। जरा काकी की बात को ध्यान से सुनो तो। काकी ने समय की बात कही, भगवान की नहीं। और काकी का यह कहना भी कितना सही है कि खराब समय के लिए आदमी खुद भी जिम्मेदार होता है।

बिरसी – लेकिन हाथी वाली घटना के लिए हम कैसे जिम्मेदार है रुपनी? यह तो एक दुर्घटना थी बस।

रुपनी – लेकिन दुर्घटना को बुलावा कौन दे रहा है बिरसी, जरा सोचो न। अगर रात के अँधेरे में घर से दूर शौच को न जाना पड़ता तो जंगली हाथियों से सामना होने की कोई बात ही नहीं आती न।

बिरसी – हाँ, ठीक है। लेकिन आदमी शौच जैसी जरूरी चीज को रोके तो कैसे? और गाँव की महिलाएँ करें भी तो क्या? अगर रात के अँधेरे में न निकलें तो दिन का उजाला तो महिलाओं के लिए जेलखाने के जैसा ही है ना। सूरज के उगने के साथ सैंकड़ों गाँवों की लाखों महिलाओं को अपने घरों में कैद हो जाना पड़ता है और वे इंतजार करती हैं कि कब अँधेरा हो और उन्हें मुक्ति मिले। अगर तुम कहती हो कि खराब समय के लिए आदमी खुद जिम्मेदार होता है तो साथ ही यह भी बात है कि खराब समय के पीछे आदमी की मजबूरी भी एक कारण है।

और गाँव की महिलाएँ करे भी तो क्या? सूरज के उगने के साथ सैंकड़ों गाँवों की लाखों महिलाओं को अपने घरों में कैद हो जाना पड़ता है और वे इंतजार करती हैं कि कब अँधेरा हो और उन्हें मुक्ति मिले।

रुपनी – हाँ बिरसी, तुमने यह बात तो बहुत ठीक कही कि गाँव की औरतें रौशनी की कैदी बन जाती हैं। इस कैद के दु:ख को वही महसूस कर सकता है जिसने गाँव के अभाव में अपनी जिंदगी गुजारी हो। जरा इस तकलीफ को कोई दिल से महसूस करे तो समझे। अपने शरीर को आराम देने के लिए गाँव की औरतें शौच जैसी जरूरी काम के लिए भी अँधेरे की मोहताज बन जाती हैं। जाड़े की कड़कड़ाती ठंड हो या फिर बरसात की अँधेरी बारिश वाली रात, शरीर को आराम देने के लिए भी महिलाओं को कष्ट सहना पड़ता है और अगर दस्त पेचिश की बीमारी लगी हो तो भगवान ही मालिक है। फिर देखो तो, आज की हाथी वाली घटना। इस बात का ऐसा भयानक परिणाम भी हो सकता है, यह तो हमने सपने में भी नहीं सोचा था।

बिरसी – आदमी की मजबूरी उसे कितनी भयानक स्थिति में डाल सकती है। अगर तुम कहती हो कि खराब समय के लिए आदमी खुद भी जिम्मेदार होता है तो साथ ही यह भी बात है कि खराब समय के पीछे आदमी की मजबूरी भी एक कारण है।

रुपनी – न, तुम दूसरी बात कह रही हो बिरसी, सचाई के बिलकुल उलट। सचाई की तरफ से मुँह मोड़ लें और हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहें तो तब तुम्हारी बात शायद ठीक हो सकती है। लेकिन ऐसा सोचने और करने का अब समय नहीं रहा। जबकि हो यह रहा है कि बदलते समय ने हमारी मजबूरियों को खत्म कर दिया है।

बिरसी – बदलते समय के साथ हमारी मजबूरियाँ खत्म हो रही है, यह क्या बात है रुपनी? जरा खुल कर बताओ तो।

काकी – यह मुझसे सुनो। जानती हो पहले गाँव देहात में लोगों के पास कपड़े और खाने जैसी जरूरी चीजों का भी अभाव था। कारण कि गाँव से बाहर निकलकर नये रास्ते तलाशने के लिए साधन नहीं थे। जो थोड़े बहुत जागरूक लोग होते थे उन्हें भी आगे बढ़ने के लिए कम तपस्या नहीं करनी पड़ती थी। उस जमाने में न तो गाँवों में आज की तरह सड़कें थी और न बस और सवारी गाड़ियों की सुविधा।

रुपनी – अब तो दूर दराज का भी कोई गाँव दूरी का मोहताज नहीं रह गया है। पहले के मुकाबले पक्की सड़कें बन गयी हैं और छोटी हो या बड़ी, सवारी गाड़ियाँ गाँव–गाँव पहुँचने लगी हैं। अपने ही गाँव में देखो, थोड़े खाते पीते लोगों के घरों में मोटरसाइकिल है। और तो और, मोबाइल जैसी जरूरी चीज किसके पास नहीं है, बताओ तो?

काकी – हाँ, मोटरसाइकिल और मोबाइल भी शौक की चीज न बनकर जरूरत के सामान हो गये हैं। मोटरसाइकिल से लोगों के समय की बचत होती है और मोबाइल से भी। इनके रहने से मेहनत की बचत होती है और बहुत से जरूरी काम भी तरीके से निपट जाते हैं। बदलते समय ने हमारी मजबूरियों को खत्म कर दिया है बिरसी, यह हम सभी अपने चारों ओर देख रहे हैं। लेकिन यह बड़ी अचरज की बात है कि समय बदलने के बावजूद हम अभी भी खुले में शौच को जाते हैं और इसका समाधान निकालने को बिलकुल भी नहीं सोचते। अरे जैसे मोटरसाइकिल जरूरी है, मोबाइल जरूरी है उसी तरह से शौचालय भी तो जरूरी है। जरा सोचो तो, तुम्हारे गाँव में जो औरतें हाथी के पाँवों तले कुचलकर मर गई, यही घटना कल भी नहीं होगी, इसकी क्या गारंटी है?

बिरसी – हाँ, यह बात तो है काकी। देखा जाय तो हम महिलाएँ जानती हैं कि रात अँधेरे में घर से बाहर निकलने में खतरा है। हमारे जैसे गाँव, जो जंगल के किनारे बसे हैं, वहाँ इस बात का खतरा हमेशा बना रहता है कि

अँधेरे में हाथी से सामना हो जाये। दूसरे जंगली जानवर भी कम नहीं है जैसे सियार, भालू। और जहरीले साँप भी तो खेत झाड़ियों में अक्सर दिखते ही रहते हैं। महिलाएँ ये बातें जानती हैं लेकिन फिर भी खतरा उठाने को मजबूर हैं। मजबूरी जो न कराए।

रुपनी – लेकिन यह मजबूरी भी तो खुद का बुलाया हुआ है। मजबूरी तब होती है जब कोई रास्ता ही न हो। यहाँ सिर्फ अपने घर में एक शौचालय बनाने की ही तो बात है। इस शौचालय के बनाने में बहुत कुछ लगता भी नहीं है। बस इच्छा शक्ति की जरूरत है। मेरे गाँव में देखो, जब सब लोगों ने शौचालय बनाने का निर्णय कर लिया तो सरकार की तरफ से भी शौचालय बनाने का लोन तुरंत मिल गया। उसके बाद लोगों ने अपने–अपने हिस्से का चंदा जमा करने में भी देरी नहीं की।

शौचालय बनाने में बहुत कुछ लगता भी नहीं है। बस इच्छाशक्ति की जरूरत है।

काकी – सरकार की तरफ से लोन और प्रोत्साहन राशि मिलना सब से ज्यादा तारीफ वाली बात है।

रूपनी – हाँ काकी, सरकार की सहायता की बात तो सबसे ज्यादा समझने वाली और अमल में लाने की चीज है। सबसे सीधी बात तो यह है कि अगर हम अपना शौचालय बना लें तो सरकार की ओर से 4600 रु. हरेक बने हुए शौचालय के लिए सहायता के रूप में मिल जाते हैं। इस तरह हम अपने शौचालय को बनाने के लिए जो खर्च करते हैं उसकी भरपाई आराम से सरकार के द्वारा दी गई सहायता राशि से हो जाती है।

बिरसी – तो क्या 4600 रुपये में सचमुच में शौचालय तैयार हो जाता है रुपनी?

रुपनी – हाँ बिरसी, जरा याद करो काकी, हमारे गाँव में जब शौचालय बनाने की बात चल रही थी तो ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की मीटिंग में इंजीनियर साहब भी आए हुए थे। उन्होंने अलग–अलग खर्च के शौचालय का नक्शा भी हम लोगों को दिखाया था। सबसे कम खर्च वाले शौचालय को बनाने में लागत 5500 रुपया आती है।

बिरसी – 5500 रुपये? लेकिन अभी तो तुम कह रही थी कि सरकार शौचालय बनाने की सहायता के रूप में 4600 रुपये ही देती है। तो फिर 5500 रुपया का मॉडल क्यों?

रुपनी – हाँ, यह बात भी सोचने की है। अगर 4600 रुपये सरकार देती है तो शौचालय बनाने के 5500 रुपये में बाकी के 900 रुपये कहाँ से आएँगे। तो सुनो बहन, अगर 4600 रुपये सरकार की तरफ से मिल ही जाते

हैं तो 900 रुपये जिस आदमी का शौचालय बन रहा है, उसे लगाने में क्या हानि है? आखिर शौचालय की सुविधा भी उसी के लिए ही बन रही है और यह जो 900 रुपये लगाए जा रहे हैं इसका मालिक भी तो वही बनेगा न। इसका मतलब है कि जो शौचालय बनाया जा रहा है उसमें उसका भी पैसा लगा है। मतलब वो उसकी अपनी संपति है। तो जब ऐसी बात है तो हम अपनी संपति के लिए थोड़ा सा मामूली खर्च क्यों न करें। एक बात और है। अगर कोई अलग से 900 रुपये न लगाना चाहे तो वो उतनी लागत की मजदूरी अपने शौचालय को बनाने में कर इस रकम की भरपाई कर सकता है।

बिरसी – अरे वाह, यह तो बड़ा अच्छा समाधान है। ऐसा तो सभी को करना चाहिए। इससे तो यह भी होगा कि अगर लोग अपने शौचालय को बनाने में खुद भी शामिल रहें तो काम भी अच्छा होगा और काम समय से भी पूरा होगा।

रूपनी – एक और भी बात है। अगर कोई आदमी अपने शौचालय को बनाने में खुद भी शामिल रहता है तो इसका मतलब है कि उसे शौचालय की जरूरत का अहसास है। वह चाहता है कि अगर यह जरूरी काम हो जाये तो उसके परिवार का बड़ा भला हो जायेगा। उसके अंदर यह भी बात आ जाती है कि अब तक जो हो चुका वो बीती बात हो गई। खुले में शौच जाना पुरानी और भूलने वाली बात है। अब नये सिरे से नये तरीके के साथ जिंदगी जीनी है।

बिरसी – तो इसका मतलब है कि अगर हमारे घर में हमारा अपना शौचालय नहीं है तो यह हमारी अपनी ही लापरवाही है। अगर हम थोड़ा प्रयास करें तो शौचालय बनाने के लिए उपाय और सहायता की भी कोई कमी नहीं है।

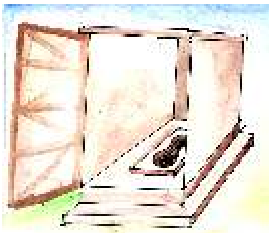

रूपनी – हाँ, बिलकुल सही है। मेरे गाँव में भी तो यही हुआ न बिरसी ।

बिरसी – तुम ठीक कह रही थी रुपनी कि अपने खराब समय के लिए लोग खुद भी जिम्मेदार होते हैं। हमारे पास ऐसी कोई मजबूरी नहीं कि हम अपना शौचालय खुद ही नहीं बना सकते। पर फिर भी हम खुले में शौच को जाकर हाथियों को अपने ऊपर हमला करने का मौका देते हैं। आज अगर मेरे गाँव में लोग दु:ख का सामना कर रहे हैं तो वह हमारी ही अज्ञानता से आया है। न! अब यह नहीं चलेगा। मैं कल से अपने गाँव में सभी महिलाओं को इकट्ठा करूँगी। शौचालय बनाने के लिए हम महिलाओं को आगे आना ही

होगा जिससे कि हमारे अपने परिवार और गाँव के लोग बीमारी और मौत के चंगुल में न फँसे। (फिर कुछ सोचकर) लेकिन इस दु:ख का क्या करें काकी जो मेरे गाँव के हर घर के लोगों को दु:खी कर गया है।

काकी – यह हाथी वाली घटना न।

बिरसी – हाँ।

काकी – इस दु:ख को अपना बल बनाऐं। इससे सीखें। ये कसम खाएँ कि दोबारा ऐसी घटना न हो इसके लिए स्थायी हल निकालें जो कि हमारे बस में है। अपनी नहीं, अपने गाँव समाज की भलाई की बात को ध्यान में रखकर आगे बढ़ें। यह सोचकर काम करें कि कल से हमारे गाँव की कोई भी महिला–पुरूष, बच्चे–बुजुर्ग न तो खुले में शौच से होने वाली बीमारी से मरेंगे और न जंगल में जंगली जानवरों के हमले से। उसके लिए आज के दु:ख को अपनी लाठी बनाएँ। दु:ख की प्रेरणा बड़ी–बड़ी मुसीबतों से लड़ने के लिए कलेजे को हौसला देती है और जब गाँव के सभी लोग एक लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अपने सभी हौसलों को जुटाकर आगे बढ़ें तो कोई भी काम मुश्किल नहीं। इसके लिए बस एक बात की जरूरत है – आज प्रण लें और हो सके तो आज ही इस कसम को पूरा करने के लिए कदम बढ़ाऐं। आज जो तुम दोनों जलसहिया शौचालय बनाने की बातें कर रही हो यह उसी रास्ते पर आगे बढ़े कदम का ही रूप है। और देखो न, इन सारी बातों से हाथी वाली घटना का दु:ख कहीं न कहीं कम होता दिख रहा है। कम से कम इस बात से ढाँढस मिल रही है कि आगे से हम ऐसा नहीं होने देंगे।

बिरसी – हाँ काकी। मैं कसम लेती हूँ कि अपने गाँव समाज की भलाई के लिए मैं यह काम जरूर करूँगी। तुम मेरा साथ दोगी न रुपनी।

रूपनी– यह भी कोई पूछने की बात है। दीये से दीया जलता है। सब दीये मिलकर मशाल से भी ज्यादा रोशनी देते हैं। प्रकाश फैले तो सबका भला होता है। तुम्हारी भलाई में मेरी भलाई है और हम सबकी भलाई है।

बिरसी – तो क्यों न एक काम करें। कुछ दिनों के बाद मैं अपने गाँव में ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की मीटिंग बुलाती हूँ। उसमें तुम और काकी दोनों लोग आएँ और मेरे गाँव के सभी लोगों को तुम्हारे गाँव में शौचालय बनाने को लेकर जैसा आन्दोलन चला था, वैसा ही करने को कहें।

रुपनी – हाँ बिरसी, ऐसा ही होगा। ठीक न, काकी।

काकी – (दोनों की तरफ सहानुभूति से देखते हुए) हाँ, हाँ, बिलकुल, भगवान तुम बच्चों जैसी बुद्धि सबको दें। (रुपनी और बिरसी कृतज्ञता से काकी की बात पर सहमति देते हुए अपना सिर हिलाती हैं)

स्वच्छता में ही प्रभुता है

जलसहिया को गाँवों में पेयजल एवं स्वच्छता सुविधाओं की बहाली के लिए कई जिम्मेवारियाँ दी गई हैं और साथ में इन कामों के बदले में उसे पेयजल एवं स्वच्छता विभाग से कार्य आधारित प्रोत्साहन राशि दिये जाने का भी प्रावधान है। आइये जानें, जलसहिया को विभाग से पेयजल एवं स्वच्छता सुविधाओं की स्थापना के बदले कैसी और कितनी प्रोत्साहन राशि मिलती है।

संदर्भ

ज्ञापांक : जलसहिया चयन–173/2010–1337/SWSM दिनांक 17.10.12

स्वच्छता में ही प्रभुता है

रुपनी के गाँव में कुल 100 घर हैं। सभी घरों में रुपनी एवं गाँव वालों के प्रयास से शौचालय बनाने का काम पूरा हो गया है। शौचालय की सुविधा हो जाने से गाँव वाले बहुत खुश हैं। काकी इसी बात को लेकर आज रुपनी से मिलने आई हैं। काकी और रुपनी दोनों रुपनी के घर के पिछवाड़े आम के पेड़ के नीचे बैठी हैं। बात की शुरुआत काकी की तरफ से होती है।

काकी – रूपनी, सुना है गाँव के सभी घरों में शौचालय बनाने के लिए सरकार ने तुम्हें इनाम में पैसे दिए हैं।

रुपनी (हँसकर) – हाँ काकी, दिये हैं। इसे सीधे–सीधे कहो तो इनाम और सरकार की भाषा में कहो तो प्रोत्साहन राशि।

काकी – प्रोत्साहन राशि?

रुपनी – हाँ, मतलब कि अगर कोई बढ़िया काम करे तो उस काम को बढ़ावा देने और काम को करने वाले का मन और मान दोनों बढ़ाने के लिए सहायता के तौर पर पैसे के रूप में मदद।

काकी – तब तो इस सहायता के लिए अपने गाँव में तुमसे बड़ा हकदार और कौन होगा भला। अच्छा बता तो कितनी सहायता राशि तुम्हें सरकार की ओर से मिली?

रुपनी – सात हजार पाँच सौ रुपये?

काकी – यह तो बड़ी अच्छी बात है। एक बार में इतने नगद पैसे हाथ में आ जाये तो पाने वाले का सचमुच में कुछ भला हो सकता है और सही मायने में यह कहा जायेगा कि अच्छा करने वाले का मन और मान दोनों बढ़ाया गया। अच्छा यह बता, अगर किसी गाँव के सभी लोग अपना–अपना शौचालय बना लें तो ये सात हजार पाँच सौ रुपये हर उस गाँव के जलसहिया को सहायता और इनाम के रूप में दिये जायेंगे क्या जहाँ गाँव के सभी घरों में शौचालय बनाने का काम पूरा कर लिया गया है?

रुपनी – नहीं, इससे ज्यादा भी मिल सकते हैं काकी। इसके लिए सरकार की तरफ से हरेक घर का शौचालय बनाने के काम में सहयोग देने और उसे सफलता से पूरा करवाने के लिए जलसहिया को हर घर के हिसाब से 75 रुपये मिलते हैं। मुझे सात हजार पाँच सौ रुपये मिले क्योंकि मेरे गाँव में कुल 100 घर हैं। अपने आसपास तो हमसे भी बड़े गाँव हैं। कई गाँवों में 500 से भी ज्यादा घर हैं। इस हिसाब से अगर उन गाँवों की जलसहिया अपने गाँव के घरों के लिए शौचालय बनाने की मुहिम चलायें तो उन्हें भी सरकार की तरफ से 75 रुपये हरेक घर के हिसाब से सहायता राशि मिल सकती है। 500 घरों का एक गाँव हो तो सैंतीस हजार पाँच सौ रुपये जलसहिया को मिलना तो बिलकुल तय है। फिर अगर जलसहिया गाँव में स्वच्छता के दूसरे काम भी कर रही हो तो उन कामों के लिए भी जलसहिया को अलग से सरकारी सहायता राशि देने का नियम है।

काकी – यह तो सचमुच में बहुत अच्छी बात है। तब तो हरेक जलसहिया को तुमसे सीख लेकर अपनी और गाँव की भलाई करनी चाहिए।

रुपनी – भलाई की बात बड़ी अच्छी कही तुमने काकी। सहायता के रूप में साढ़े सात हजार रुपये मिलने से ज्यादा खुशी इस बात की है कि गाँव के हरेक घर में शौचालय बनने से गाँव का भला हो गया और इन सारी चीजों से जो एक बात निकलकर आई वो यह है कि किसी भी काम को करने के लिए सिर्फ इच्छाशक्ति की जरूरत होती है। काम को पूरा करने के साधन अपने आप निकल आते हैं।

काकी – हाँ, यह बात तो है। पहले तो हम गाँव वालों ने सोचा भी नहीं था कि खेतों में शौच को जाना भी कोई खराब बात है। यह तो रुपनी तुम्हारे कारण और गाँव में स्वच्छता उत्प्रेरकों के जागृति फैलाने के कारण खुले में शौच करने से होने वाले नुकसान पर हम गाँव वालों की आँखें खुली।

रुपनी – यह सिर्फ रुपनी जलसहिया की ही बहादुरी नहीं है काकी। इसमें तो गाँव की हर महिला का बराबरी का योगदान है।

काकी – ज्यादा सुविधा तो महिलाओं को ही महसूस हो रही है रुपनी। एक तरह से देखें तो उनके जीवन में पूरी तरह से बदलाव आ रहा है। एक तो खुले में शौच को जाने के लिए औरतों को देर शाम और सुबह मुँह

अँधेरे निकलने की मजबूरी होती थी। उस पर आँधी बरसात के कष्ट अलग थे। साँप बिच्छू भी खेतों में मिलेंगे और उनसे जान को भी खतरा हो सकता है, ऐसा सोचने की हर वजह होने के बावजूद महिलाएँ खुले में शौच जाने को मजबूर थी। सच में रुपनी, शौचालय से महिलाओं का कितना बड़ा कल्याण हुआ, इसे एक औरत ही समझ सकती है।

रुपनी – हाँ काकी, ठीक कहा।

काकी – अच्छा ये बता, साढ़े सात हजार रुपये लेने बड़े इंजीनियर साहब के ऑफिस जाना पड़ेगा न। कब चलोगी वहाँ?

रुपनी (हँसकर) –न काकी, अब वो जमाना नहीं रहा। अब तो हर काम समय बचाकर चुटकी में करने का जमाना है।

काकी – चुटकी में? समझी नहीं।

रुपनी – देखो काकी, सरकार की तरफ से गाँव में स्वच्छता के अलग–अलग कामों को करने के लिए जलसहिया को सहायता के रूप में पैसे देने का नियम बनाया गया है। ये पैसे सीधे जलसहिया के अपने बैंक खाते में बड़े इंजीनियर साहब के ऑफिस से ट्रांसफर कर दिये जाते हैं। हाँ, उससे पहले किए गए काम की रिपोर्ट और उसके सफलतापूर्वक पूरा हो जाने का सत्यापन जरूरी होता है।

काकी – मतलब तुम बैंक जाकर अपने पैसे निकाल सकती हो रुपनी?

रुपनी – और क्या? शौचालय बनाने के बदले में मिली सहायता राशि के अलावा कुछ और भी पैसे बैंक खाते में आए हैं काकी।

काकी – अच्छा, किन कामों के बदले में?

रुपनी – एक तो अपने गाँव के सभी घरों का सर्वे के लिए दो रुपये प्रति घर के हिसाब से 200 रुपये। अपने गाँव के 10 जल स्रोतों के जल जाँच के लिए 15 रुपये हरेक जलस्रोत के हिसाब से 150 रुपये। फिर इधर ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति की मीटिंग भी चार बार बुलाई गई थी। उसके लिए भी जलसहिया को हरेक मीटिंग के लिए 75 रुपये के हिसाब से पैसे मिलते हैं। इसका मतलब मुझे इन चार मीटिंग के लिए 300 रुपये मेरे बैंक खाते में भेज दिए गए हैं।

काकी – स्वच्छता के कामों की गिनती तो बहुत बड़ी है रुपनी। अच्छा है कि सरकार इन छोटी छोटी बातों के प्रति भी इतना ध्यान देती है। सबसे अच्छी बात तो सरकार ने यह की कि स्वच्छता के लिए हर गाँव में एक जलसहिया चुन ली गई। फिर जलसहिया समाज की भलाई के लिए अपनी मेहनत और लगन लगा रही है तो बस यों ही नहीं। सरकार ने उसके लिए भी सहायता–इनाम की पहले से ही व्यवस्था कर रखी है। ठीक कहा रुपनी तुमने, ये नया जमाना है। दूसरों की भलाई करो और साथ–साथ खुद का भी भला करो।

रुपनी – स्वच्छता के कुछ और भी काम करने हैं काकी।

काकी – जैसे?

रुपनी – जैसे कि गाँव के घर–घर में कंपोस्ट पीट बनाना है।

काकी – कंपोस्ट पीट? इसका मतलब क्या होता है रुपनी?

रुपनी – कंपोस्ट पीट का मतलब एक ऐसा गड्ढा तैयार करना जिसमें घर का निकला हुआ कूड़ा–कचरा, खरपतवार, खेती किसानी से पैदा होने वाली बेकार चीजें, पौधों–डंठलों का मलबा इत्यादि डाला जाय जिससे कि ये सभी चीजें सड़कर खाद में बदल जाय।

काकी – अच्छा कूड़े कचरे से भी खाद बनाई जा सकती है क्या भला?

रुपनी – हाँ काकी, खाद जैसी कीमती चीज भी कूड़े कचरे से तैयार की जा सकती है। इस तरह के खाद को कंपोस्ट खाद कहते हैं। यह कंपोस्ट खाद भी उतना ही उपजाऊ होता है जितना कि गोबर से तैयार खाद।

काकी – तब तो कूड़े–कचरे को निपटाने का यह एक बड़ा फायदेमंद तरीका है। इससे एक ओर जहाँ कूड़े–कचरों से फैलने वाली गंदगी से छुटकारा मिल जायेगा वहीं दूसरी ओर किसानों के लिए खाद भी मिल सकेगी।

रुपनी – हाँ, और अगर कोई जलसहिया गाँव के घरों में कंपोस्ट पीट बनाने में लोगों की सहायता करती है तो हरेक घर के हिसाब से उसे सरकार की तरफ से तीन रुपये की सहायता मिलती है। मतलब अगर पाँच सौ घरों का गाँव हो तो गाँव के हरेक घर में कंपोस्ट पीट बनाने के बदले में कुल 1500 रुपये जलसहिया को मिलेंगे।

काकी – और किन बातों को गाँव वालों को सिखाने के लिए जलसहिया को सरकार की तरफ से सहायता मिलती है, जरा बताओ तो रुपनी।

रुपनी – कुछ बहुत ही साधारण लेकिन जरूरी बातें हैं जिन्हें जलसहिया को अपने गाँव घर में लागू करने के लिए प्रयास करना चाहिए। जैसे कि पीने का पानी घड़े या बर्तन से निकालने के लिए टिसनी का प्रयोग करने को लोगों को प्रेरित करे या फिर खाने से पहले और शौच के बाद साबुन से हाथ धुलाई की बात, अगर ये सभी काम गाँव के सभी घरों के सदस्यों को जलसहिया सिखाए तो इन कामों की रिपोर्ट बड़े इंजीनियर साहब को करने पर जलसहिया के खाते में हरेक घर के हिसाब से तीन रुपये ट्रांसफर कर दिए जाते हैं।

काकी – अच्छा यह बताओ, खुले में लोगों ने शौच जाना बंद कर दिया, इससे अब आदमी का पैखाना खुले में पड़े रहने से मुक्ति मिल गई। अगर हर घर के लोग अपने सड़ने वाले कूड़े–कचरे और खेती बारी के खरपतवार, पती डंठल को गड्ढे में डाले तो उससे खाद बन सकता है। इससे कूड़े कचरे को इधर–उधर फेंकने से उत्पन्न गंदगी से भी मुक्ति मिल गई। फिर आदमी की साधारण आदतें जैसे साबुन से हाथ धुलाई जैसी जरूरी चीजें व्यवहार में आ जाय तब तो घर, खेत और आदमी का शरीर सभी स्वच्छ पवित्र हो जायेंगे न।

रुपनी – इतने से ही नहीं काकी। और भी बहुत सी बातें हैं स्वच्छता पर करने को, जैसे कि हरेक घर में पानी का सोख्ता गड्ढा बनाना।

काकी– हाँ, हाँ, यह तो बहुत ही जरूरी चीज है। आदमी के पैखाना से तो सहज में घृणा पैदा हो जाती है, पर पानी बहाने को कहो तो कोई किसी से पीछे नहीं।

रुपनी – हमेशा यह देखा जाता है कि हरेक घर से निकला पानी या तो घर के पिछवाड़े जमा होकर सड़ता रहता है या फिर सड़क गली में बहकर आने जाने के रास्तों को गंदा करता है। दूसरे मौसम में तो सूरज की रोशनी से पानी फिर भी सूख जाता है, पर बरसात में ऐसे पानी वाले रास्ते तो कीचड़ भरे और घृणा पैदा करने वाले बन जाते हैं।

काकी – तो इसका उपाय है कि आदमी अपने घर में सोख्ता गड्ढा बना ले। है न रुपनी या फिर और कुछ?

रुपनी – न, न, बस इतनी सी ही बात है काकी। सोख्ता गड्ढा बनाना भी बहुत आसान है। अगर एक मीटर गुणा एक मीटर का गड्ढा खोद दिया जाय और उसमें नीचे से ऊपर तक अलग–अलग आकार के पत्थरों के टुकड़े एक के ऊपर एक तह करके बिछा दी जाये तो घर से निकलने वाले गंदे पानी का निपटारा घर बैठे ही हो जायेगा। इससे न तो गाँव की सड़क–गली खराब होगी और न गंदे पानी के जमाव से मच्छर पैदा होने का खतरा रहेगा। एक दिन मैं तुम्हारे घर भी एक सोख्ता गड्ढा बनाकर दिखाऊँगी काकी। बस अलग–अलग आकारों के पत्थर के टुकड़े जमा कर रखना। ठीक न।

काकी – हाँ, हाँ, नेकी और पूछ–पूछ। ये मच्छरों की समस्या से मैं भी बहुत परेशान हूँ। मच्छरों की बात बड़ी अच्छी कही तुमने बेटी। मलेरिया जैसी बीमारी से तो भगवान ही बचाये।

रुपनी – ठीक कहा। लेकिन उसके पहले अपना प्रयास भी तो होना चाहिए। भगवान भी उसकी ही सहायता करते हैं जो अपनी सहायता खुद करता है।

काकी – हाँ, अपनी सहायता तो हर आदमी को खुद ही करनी चाहिए और दूसरों की भी। तो सोख्ता गड्ढा बनाने में भी जलसहिया सहायता करती है, ठीक न। जरा देखो तो बेटी। इन सब बातों पर एक साथ विचार करें तो कितना अच्छा लगता है कि सरकार गाँव के कामों को करने के लिए ऐसे उपाय कर रही है जिसमें गाँव के लोग खुद ही अपना काम कर लें और उसमें सरकार भी हर तरीके से सहायता करे। जैसे हरेक घर में शौचालय बनाने के लिए सरकार की तरफ से हर परिवार को प्रोत्साहन राशि और दूसरी तरफ जलसहिया के कामों के लिए भी प्रोत्साहन राशि। ठीक कहती हो रुपनी तुम। नये जमाने के हिसाब से सचमुच में अब जनता के हाथों में ही काम करने की शक्ति सरकार ने सौंप दी है। बस थोड़ा सा प्रयास करो और अपने घर–परिवार और गाँव की भलाई करो।

रुपनी – एक भलाई अभी भी बाकी है काकी।

काकी – क्या?

रुपनी – जरा याद करो काकी। हम दोनों पड़ोस के गाँव में जलसहिया दीदी से मिलने को गए थे। उनके गाँव में ग्रामीण पाईप जलापूर्ति योजना से गाँव के हरेक घर में पानी की सप्लाई करने का कार्यक्रम पूरा कर लिया गया था और अब उस गाँव के हरेक घर में पाईप लाईन से पीने के शुद्ध पानी की सप्लाई हो रही है। बदले में हरेक घर को हर महीने बहुत मामूली रकम जल टैक्स के रूप में देनी होती है।

काकी – हाँ, यह तो बहुत ही अच्छा काम हुआ है रुपनी। क्या ऐसा काम हमारे गाँव में भी हो सकता है? तुम ऐसा करने की सोच रही हो न रुपनी।

रुपनी – हाँ काकी, ऐसा न सोचने का कोई कारण भी नहीं है। जलसहिया दीदी वाले गाँव के अनुभव यह बताते हैं कि किसी नेक काम में भले ही पहले बाधा आए, पर निरंतर प्रयास से किसी भी समस्या का हल निकाला जा सकता है और अब देखो, उस गाँव के लोगों को घर बैठे शुद्ध पानी मिल रहा है और इस सुविधा को बनाये रखने के बदले वे हर महीने पानी का टैक्स भी जलसहिया दीदी के पास जमा करते हैं।

काकी – तो क्या जलसहिया को भी इस काम के लिए सरकार की तरफ से कोई सहायता राशि मिलती है जैसे कि स्वच्छता के अन्य कामों के लिए मिलती है।

रुपनी – हाँ काकी, इसके लिए जलसहिया को वसूले गए जल टैक्स में से कुल वसूली का 10% मिलता है। कुल मिलाकर स्वच्छता के अलग–अलग कामों से जलसहिया को मिले पैसों को देखा जाय तो यह हमेशा चलने वाला प्रयास है। इस प्रयास में जलसहिया की तरफ से जितना ज्यादा काम होता है, सरकार की तरफ से उसे उतनी ही ज्यादा सहायता राशि मिलती है।

काकी – ये सारी चीजें कितनी अच्छी है ना रुपनी। खुले में शौच से मुक्त गाँव, हर घर को पीने का शुद्ध पानी, साफ–सफाई से रहने की आदत, साबुन से हाथ धोने का व्यवहार, गाँव की सड़कों–गलियों को साफ रखना। इससे माहौल में कितना बदलाव आया है। साथ ही लोगों के आपसी बात व्यवहार में भी सलीका देखने को मिल रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे किसी अँधेरे से अचानक रोशनी में आ गए हों। लोगों में आगे

बढ़ने की और नये युग के साथ चलने की चाह जाग उठी है। पुराने बुजुर्ग जो कहते थे कि ''स्वच्छता में ही प्रभुता है'' वह ऐसे ही न था।

रुपनी – हाँ काकी, यह बड़ी बात है और यही सबसे सची बात है – स्वच्छता में लक्ष्मी विराजती है। स्वच्छता से ही इंसान के अंदर का भगवान जागता है। सच में ''**स्वच्छता में ही प्रभुता है**''।

काकी इस बात पर आगे बढ़कर रुपनी का हाथ थाम लेती है। रुपनी भी काकी को सर झुकाकर अपना अभिवादन जाहिर करती है।